नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

मई '९०

४ रुपए



MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI CLUB
लॉर्ड्ज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप
सफ़ारी गेम
मैगी क्लब:आओ मनाएं जंगल में मंगल!
अपने उपहार मुफ़्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना. और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक'
फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
MAGGI
2-minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 6679HIN



आओ बात करें

पाटलिपुत्र में उन दिनों नंद वंश के राजा नवम नंद राज करते थे । उनका मंत्री श्रीवत्स था । राजधानी में संस्कृत का प्रकांड पंडित वररुचि भी रहता था ।

राजा नंद विद्वानों का बड़ा मान-सम्मान करते थे । उन्हें उपहार-पुरस्कार दिया करते । वररुचि राज दरबार में आया करता था । समय-समय पर वह नए श्लोक बनाता । राजा का स्तवन करता । राजा वररुचि से बड़े प्रसन्न होते । नंद अपने प्रधानमंत्री श्रीवत्स की ओर देखते , पर श्रीवत्स कुछ न कहता । उलटे ऐसा संकेत करता कि वररुचि दान-दक्षिणा पाने के योग्य नहीं ।

कई बार ऐसा होने पर वररुचि भी भांप गया—'राजा तो मुझे देना चाहता है, पर मंत्री ही बाधा डालता है ।' एक दिन वररुचि प्रधानमंत्री के घर गया । श्रीवत्स की पत्नी से मिला । अपनी व्यथा उससे कही । श्रीवत्स की पत्नी वररुचि की विद्वता से प्रभावित हुई । उसने उसे सहायता देने का वचन दिया ।

अवसर पाकर एक दिन श्रीवत्स की पत्नी ने पति से पूछ ही लिया— ''आप वररुचि की प्रशंसा क्यों नहीं करते ?''

श्रीवत्स बोला— ''इस तरह हर किसी को बढ़ावा देना ठीक नहीं । वह किसी दिन राजा की निगाह में चढ़ सकता है ।''

पत्नी बोली— ''आपकी प्रशंसा से किसी को पुरस्कार मिल जाए, तो इसमें आपका क्या जाता है ?'' पत्नी के बार-बार जोर डालने पर एक दिन श्रीवत्स ने वररुचि को इनाम दिलवा दिया । अब तो वह हर रोज राजा के सामने श्लोक पाठ कर, इनाम पाने लगा ।

श्रीवत्स भला यह कैसे सहन करता ? उसे लगा, इस तरह वररुचि राजा के बहुत निकट हो जाएगा । उसने योजना बनाई । अब वररुचि जो कविता सुनाता, श्रीवत्स कह देता— ''महाराज, यह तो सुनी-सुनाई रचना है ।'' राजा दरबारियों की ओर देखते, तो वे भी श्रीवत्स की हां में हां मिला देते ।

वररुचि को अपमानित करके निकाल दिया गया । अब वह दरबार में न जा पाता । वररुचि प्रधानमंत्री का कपट समझ गया । उसने भी सोच-समझकर एक योजना बनाई । गंगा तट पर गड्ढे में एक विशेष यंत्र लगाया । फिर यंत्र में सोने की मुहर रख दी । वह गंगा तट पर खड़ा होकर श्लोक पाठ करता, फिर यंत्र को पैर से दबाता, तो सोने की मुहर उछलकर सामने आ गिरती । वररुचि मुहर दिखाकर कहता— ''राजा ने न दिया, तो न सही, गंगा मां तो प्रसन्न हैं मुझसे ।''

अब तो यह रोज होने लगा । इस विचित्र घटना का समाचार दूर-दूर तक फैल गया । आखिर यह चर्चा राजा नंद ने भी सुनी । वह गंगा तट पर आ पहुंचे । राजा ने पूछा— ''गंगा द्वारा तुम्हारी रचना पर सोने की मुहर देने की विचित्र बात क्या है ? इसे हम भी देखना चाहते हैं ।''

यह सुन, वररुचि ने राजा को सारी बात सच-सच बता दी । वह यंत्र भी दिखा दिया, जिससे मुहर निकला करती थी । बोला— ''महाराज, मंत्री जी मेरी हर नई रचना को जान-बूझकर पुरानी कहते थे । आप तक अपनी बात पहुंचाने के लिए ही मुझे यह नाटक करना पड़ा ।''

फिर तो गंगा तट पर ही सभा जुड़ी । वररुचि के श्लोक पाठ को राजा ने खूब सराहा । पुरस्कार दिया । प्रधानमंत्री और दरबारियों को दंड दिया ।

कई बार बिना दोष के भी संकट में घिर जाते हैं । बुद्धि से काम लें, तो कोई उपाय निकल ही आता है ।

—तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती



आओ बात करें

पाटलिपुत्र में उन दिनों नंद वंश के राजा नवम नंद राज करते थे । उनका मंत्री श्रीवत्स था । राजधानी में संस्कृत का प्रकांड पंडित वररुचि भी रहता था ।

राजा नंद विद्वानों का बड़ा मान-सम्मान करते थे । उन्हें उपहार-पुरस्कार दिया करते । वररुचि राज दरबार में आया करता था । समय-समय पर वह नए श्लोक बनाता । राजा का स्तवन करता । राजा वररुचि से बड़े प्रसन्न होते । नंद अपने प्रधानमंत्री श्रीवत्स की ओर देखते , पर श्रीवत्स कुछ न कहता । उलटे ऐसा संकेत करता कि वररुचि दान दक्षिणा पाने के योग्य नहीं ।

कई बार ऐसा होने पर वररुचि भी भांप गया— 'राजा तो मुझे देना चाहता है, पर मंत्री ही बाधा डालता है ।' एक दिन वररुचि प्रधानमंत्री के घर गया । श्रीवत्स की पत्नी से मिला । अपनी व्यथा उससे कही । श्रीवत्स की पत्नी वररुचि की विद्वता से प्रभावित हुई । उसने उसे सहायता देने का वचन दिया ।

अवसर पाकर एक दिन श्रीवत्स की पत्नी ने पति से पूछ ही लिया— "आप वररुचि की प्रशंसा क्यों नहीं करते ?"

श्रीवत्स बोला— "इस तरह हर किसी को बढ़ावा देना ठीक नहीं । वह किसी दिन राजा की निगाह में चढ़ सकता है ।"

पत्नी बोली— "आपकी प्रशंसा से किसी को पुरस्कार मिल जाए, तो इसमें आपका क्या जाता है ?" पत्नी के बार-बार जोर डालने पर एक दिन श्रीवत्स ने वररुचि को इनाम दिलवा दिया । अब तो वह हर रोज राजा के सामने श्लोक पाठ कर, इनाम पाने लगा ।

श्रीवत्स भला यह कैसे सहन करता ? उसे लगा, इस तरह वररुचि राजा के बहुत निकट हो जाएगा । उसने योजना बनाई । अब वररुचि जो कविता सुनाता, श्रीवत्स कह देता— "महाराज, यह तो सुनी सुनाई रचना है ।" राजा दरबारियों की ओर देखते, तो वे भी श्रीवत्स की हां में हां मिला देते ।

वररुचि को अपमानित करके निकाल दिया गया । अब वह दरबार में न जा पाता । वररुचि प्रधानमंत्री का कपट समझ गया । उसने भी सोच-समझकर एक योजना बनाई । गंगा तट पर गड्ढे में एक विशेष यंत्र लगाया । फिर यंत्र में सोने की मुहर रख दी । वह गंगा तट पर खड़ा होकर श्लोक पाठ करता, फिर यंत्र को पैर से दबाता, तो सोने की मुहर उछलकर सामने आ गिरती । वररुचि मुहर दिखाकर कहता— "राजा ने न दिया, तो न सही, गंगा मां तो प्रसन्न हैं मुझसे ।"

अब तो यह रोज होने लगा । इस विचित्र घटना का समाचार दूर-दूर तक फैल गया । आखिर यह चर्चा राजा नंद ने भी सुनी । वह गंगा तट पर आ पहुंचे । राजा ने पूछा— "गंगा द्वारा तुम्हारी रचना पर सोने की मुहर देने की विचित्र बात क्या है ? इसे हम भी देखना चाहते हैं ।"

यह सुन, वररुचि ने राजा को सारी बात सच-सच बता दी । वह यंत्र भी दिखा दिया, जिससे मुहर निकला करती थी । बोला— "महाराज, मंत्री जी मेरी हर नई रचना को जान-बूझकर पुरानी कहते थे । आप तक अपनी बात पहुंचाने के लिए ही मुझे यह नाटक करना पड़ा ।"

फिर तो गंगा तट पर ही सभा जुड़ी । वररुचि के श्लोक पाठ को राजा ने खूब सराहा । पुरस्कार दिया । प्रधानमंत्री और दरबारियों को दंड दिया ।

कई बार बिना दोष के भी संकट में घिर जाते हैं । बुद्धि से काम लें, तो कोई उपाय निकल ही आता है ।

—तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.



INDIA'S GREATEST CYCLE RACE
ZANDU BALM

क़ीमती ही सही झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.

असली च्यवनप्राश

CLARION/B/ZP/24/213 HIN-R

नंदन मई '९०
वर्ष:२६ अंक:७

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : विद्याव्रत एलबम : एम. एस. अग्रवाल



सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

गंगा किनारे

—अरुणकुमार

सतयुग का अंतिम चरण था। उस समय तक लोगों की धर्म-कर्म में बड़ी रुचि थी। उन्हीं दिनों एक तपस्वी महात्मा थे बृहत्तपा। गंगा तट से दो कोस दूर उनका आश्रम था। आश्रम छोटा था, मगर हरियाली से भरपूर। सघन वृक्षों की छांह में उनकी कुटी थी। बृहत्तपा तपस्वी होने के साथ-साथ शास्त्रों के प्रकांड पंडित भी थे। उन्हीं के आश्रम में जन्म से अंधे एक तपस्वी रहते थे। नाम था दीर्घतमा। बृहत्तपा नित्य प्रति दीर्घतमा को भगवान विष्णु की कथा सुनाया करते थे। वह कथा इतने रोचक ढंग से सुनाते कि दीर्घतमा घंटों बैठे कथा सुनते रहते थे। उनकी कथा का यह क्रम चालीस वर्षों से भी ज्यादा समय से चल रहा था।

आश्रम से थोड़ी दूर सत्यव्रत नाम का एक गांव था। उस गांव में पुण्यधामा नामक एक ब्राह्मण रहते थे। पुण्यधामा भी रोज कथा सुनने आश्रम में जाया करते थे। उनकी कथा में इतनी रुचि थी कि चाहे सौ काम छोड़ने पड़ें, वह भगवान की कथा अवश्य सुनते थे। इस तरह निरंतर कथा सुनते हुए उन्हें कितने ही वर्ष बीत गए थे। कथा में अक्सर बृहत्तपा बताते थे कि भगवान की कथा सुनने और अतिथि सेवा करने से बड़ा पुण्य और दूसरा नहीं। इसी में सारे तीर्थ-व्रत आ जाते हैं।

गंगा क्योंकि उस गांव के पास थी, इसीलिए गंगा स्नान को जाने और लौटने वालों का तांता लगा रहता था। गंगा स्नान के पर्वों पर यह भीड़ और भी ज्यादा हो जाती थी। अनेक साधु-संत भी गंगा स्नान करने आते थे। पुण्यधामा साधु-संतों की सेवा खूब मन लगाकर करते थे। परिवार छोटा था। पुरोहिताई का काम अच्छा था, इसीलिए भगवान की कथा सुनने और अतिथि सेवा करने के लिए उन्हें काफी समय मिल जाता था।

पुण्यधामा के अतिथि सत्कार की बात पूरे गांव में फैली थी। कोई साधु-संत आता, तो गांव वाले उसे पुण्यधामा के घर भेज देते। पुण्यधामा और उनकी पत्नी बड़े आदर भाव से अतिथि की सेवा करते। इसी तरह सुख पूर्वक उनके दिन बीत रहे थे।

एक दिन पुण्यधामा जब कथा सुनकर घर लौटे, तो दो महात्मा उनके घर आए। बड़े प्रसिद्ध महात्मा





थे। उनके नाम थे धृतव्रत और ज्ञानसिंधु। पुण्यधामा ने उन्हें देखा, तो धन्य-धन्य हो उठे। बोले—''अहोभाग्य, आपकी सेवा का पुण्य लाभ मुझे मिला।'' फिर उन्होंने महात्माओं के चरण धोए। आसन पर बैठाकर स्वादिष्ट भोजन खिलाया। इसके बाद उनके चरण दबाने लगे। दोनों संत उनकी सेवा से बड़े प्रसन्न थे। तभी बातचीत के बीच महात्माओं ने पुण्यधामा से पूछा—''भक्त, इस गांव से गंगा जी कितनी दूर हैं। सुना है, पास ही हैं।''

पुण्यधामा बोले—''मेरे बचपन में गंगा मइया, गांव के बहुत निकट थीं, मगर अब उनकी जलधारा कुछ दूर चली गई है। फिर भी ज्यादा दूर नहीं हैं। गांव वाले बताते हैं—दो कोस दूर हैं गंगाजी।''

''क्या कहा! गांव वाले बताते हैं। अरे, भई! तुम इतने धर्म-कर्म वाले सज्जन पुरुष हो। तुम भी तो रोज गंगा स्नान करने जाते होगे?''—एक महात्मा ने पूछा।

पहले तो पुण्यधामा चुप रहे। फिर बोले—''महात्मन, मैं प्रातःकाल भगवान की कथा सुनने मुनि बृहत्तपा के आश्रम में चला जाता हूं। वहां से आने पर घर-गृहस्थी का काम निपटाता हूं। सांझ को फिर साधु-संतों की सेवा में लग जाता हूं। गंगा तट तक जाने का समय ही नहीं मिल पाता। मैंने पिछले चालीस वर्षों से गंगा स्नान नहीं किया।''

इतना सुनना था कि दोनों महात्मा बिगड़ उठे। वे परस्पर कहने लगे—''देखो, हम समझते थे, यह धर्मात्मा है, मगर इस जैसा ढोंगी और कौन होगा? यह रोज कथा सुनने जाता है। साधु-संतों की सेवा का स्वांग रचता है। इसलिए कि गांव वाले इसे धर्मात्मा समझें और पुरोहिताई का काम इससे करवाएं। भला, कौन ऐसा होगा, जो इतने पास गंगा होने पर भी गंगा स्नान को न जाए। हमें क्या पता था, यह ऐसा है। आज अनजाने में ही हम इसके अतिथि बने। इसके छूने से तो हम अपवित्र हो गए। रात्रि बीतने पर तुरंत यहां से चल देना चाहिए।''

पुण्यधामा चुपचाप खड़े उनकी बातें सुनते रहे। फिर प्रणाम कर, घर के अंदर चले गए। दोनों महात्मा भोजन तो कर ही चुके थे। कुछ देर में सो गए। सुबह दिन का उजाला फूटते ही वे अपने-अपने कमंडल उठाकर गंगा तट की ओर बढ़ चले। चलते-चलते दो कोस निकल आए। आगे दूर तक बालू फैला था। वे समझ गए कि गंगा तट आ गया। दोनों बड़े प्रसन्न।

उत्साह से आगे बढ़े, मगर यह क्या ! उन्हें कई घंटे हो गए गंगा की तलाश करते हुए। चारों ओर बालू ही बालू। वहां उन्हें गंगा की धारा के दर्शन कहीं नहीं हुए। अब दोनों परेशान, मगर मन में गंगा स्नान करने की ठानकर आए थे, इसीलिए गंगा की खोज में बढ़ते रहे।

वे गंगा की खोज करते-करते गंगा सागर तक जा पहुंचे, मगर कहीं भी उन्हें गंगा के दर्शन न हुए। दोनों आश्चर्य चकित थे ! यही सोच रहे थे—'गंगा मइया कहां चली गईं ? दर्शन क्यों नहीं हुए ?' बहुत विचार करने के बाद उन्हें लगा, कहीं किसी अपराध के कारण गंगा नाराज तो नहीं हो गईं ?

यह विचार मन में आते ही, वे सीधे वाराणसी आए। वहां घाटों पर जाकर देखा—लोग हर-हर गंगे कहते, गीले वस्त्रों से घाट पर खड़े थे। आश्चर्य ! सभी स्नान कर रहे थे, मगर दोनों संतों को जलधारा अब भी दिखाई नहीं दी।

दोनों महात्मा एक घाट की सीढ़ियों पर बैठ गए। गंगा की स्तुति करने लगे। इसी तरह पूरा दिन बीत गया। रात होने पर भी वे वहां से नहीं हटे। फिर स्तुति करते-करते उन्हें नींद आ गई। स्वप्न में देवी गंगा ने उन्हें दर्शन दिए। उन्होंने पूछा—"मां, क्या आप हमसे नाराज हैं ? हम आपके दर्शनों के लिए कब से भटकते फिर रहे हैं।"



गंगा बोलीं—"मैं तुमसे नाराज हूं। तुमने मेरे भक्त पुण्यधामा का अपमान किया है। उसे पापी बताया है।"

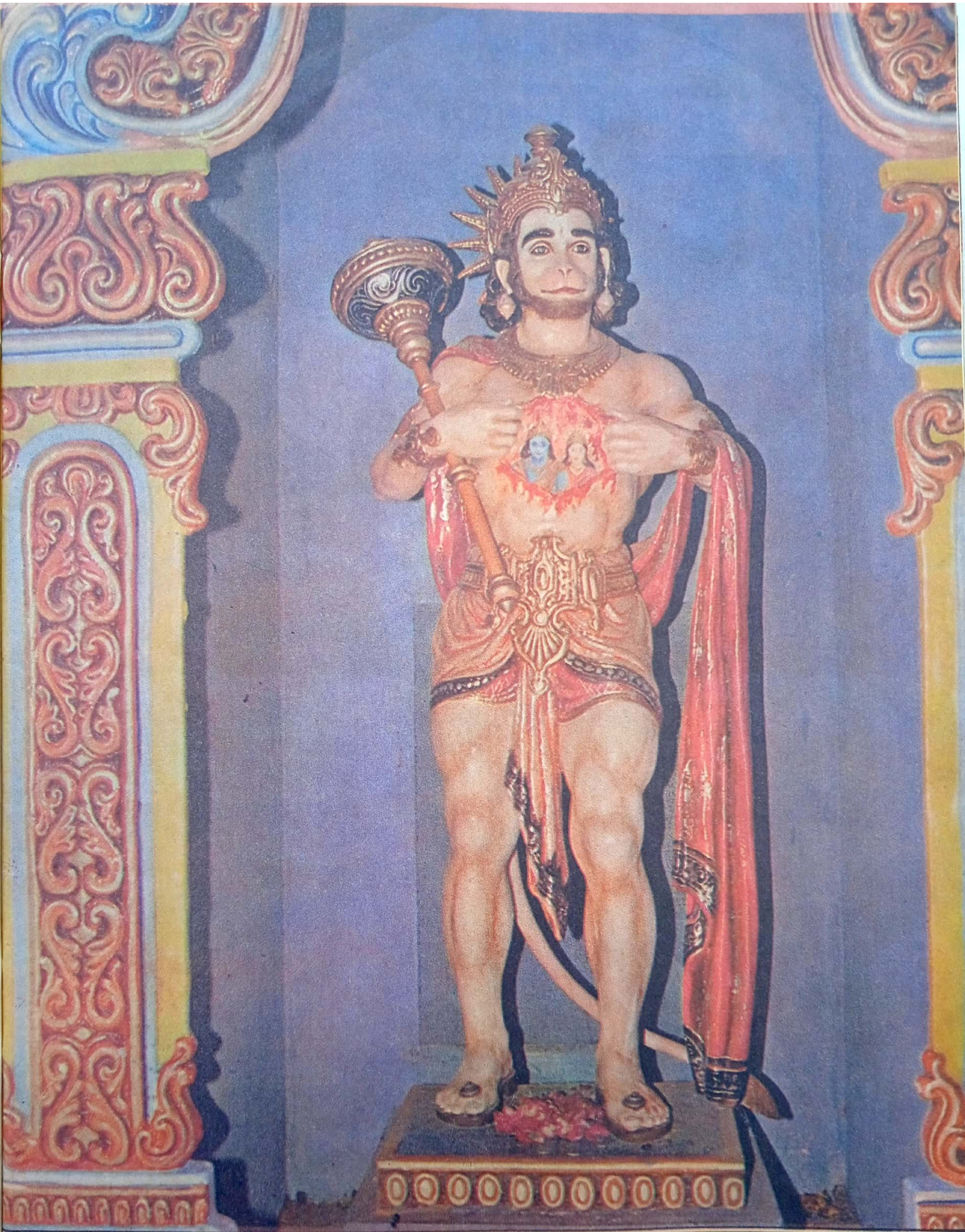
"मगर देवी, वह पिछले चालीस वर्षों से आपके तट पर आया तक नहीं। उसने कभी आपके पवित्र जल में स्नान करने का कष्ट नहीं उठाया। वह आपका भक्त कैसे हो गया ?"—दोनों महात्माओं ने पूछा।

"वह मेरा सच्चा भक्त है। जो रोज भगवान विष्णु की कथा सुनता है। दूसरों की सेवा में लगा रहता है, उसे तो सारे पुण्य स्वयं मिल जाते हैं। मैं तो न जाने कब से उसके दर्शनों की प्रतीक्षा कर रही हूं ? तुम दोनों जाकर उससे क्षमा मांगो। उसे साथ लेकर मेरे तट पर आओ। तभी मैं तुन्हें दर्शन दूंगी।"—यह कहकर गंगा अदृश्य हो गईं। सपना टूट गया। दोनों हड़बड़ाकर उठे। देर तक उस सपने पर विचार करते रहे। फिर सीधे उस गांव की ओर चल पड़े।

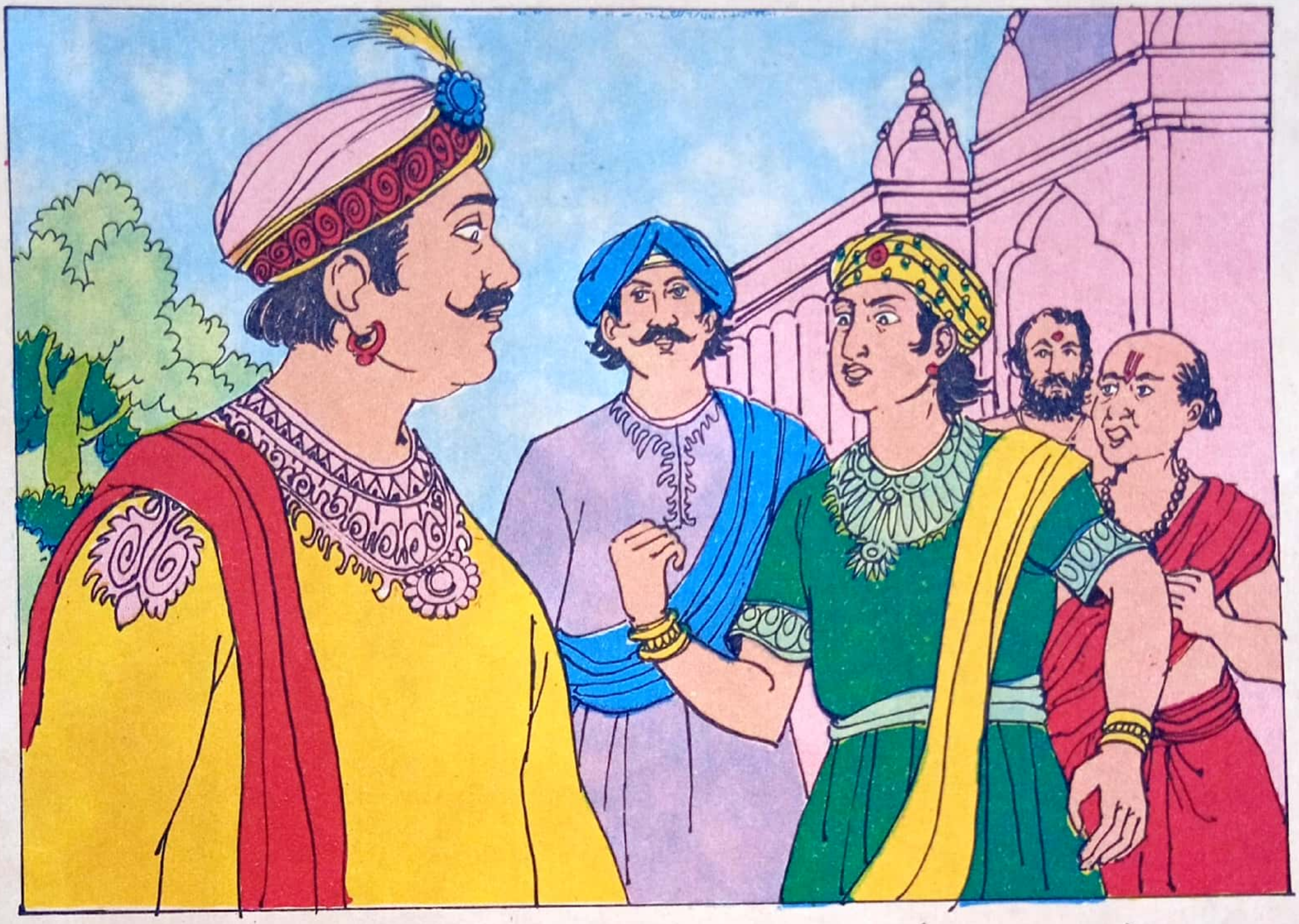
गांव में आकर वे पुण्यधामा के घर गए। मगर वह कथा सुनने बृहत्तपा के आश्रम में गए हुए थे। महात्मा तुरंत आश्रम में जा पहुंचे। वे दोनों भी बैठकर कथा सुनने लगे। कथा समाप्त हुई, तो महात्माओं ने महा तपस्वी बृहत्तपा के चरण छुए। सपने की सारी बात बताकर वे पुण्यधामा से क्षमा मांगने लगे।

बृहत्तपा बोले—"मां गंगा ने ठीक ही कहा। जहां हरिकथा होती है, वहां गंगा निरंतर बहती रहती हैं। अभी हम लोग कथा के रस में डूबे गंगा स्नान तो कर ही रहे थे।"

इसके बाद महात्माओं के अनुरोध पर वे पांचों गंगा तट पर पहुंचे। उन्हें आता देख, दूर ही से गंगा की जलधारा उछलती हुई उन्हें छूने दौड़ी। फिर पांचों ने देर तक गंगा में स्नान किया। ●



पवन पुत्र हनुमान



शंख ढूंढो

—श्रीनिवास वत्स

आशास्थलम् नगरी के राजा रुद्रशेखर जितने दयालु थे, उतने ही उदास भी। उनकी उदासी का कारण था—संतान का अभाव। रानी सविता देवी प्रतिदिन मंदिर जातीं। भजन-पूजन करतीं। दान दक्षिणा भी देतीं। पर लगता था, उनकी प्रार्थना मां देवी तक नहीं पहुंच पाती थी।

एक दिन महामंत्री अभिषेक ने राजा से कहा—"महाराज, भगवान करे आप दीर्घायु हों। परंतु एक न एक दिन सभी को इस मृत्यु लोक से जाना है। अच्छा है, अपने जीते जी आप किसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दें, ताकि आपके बाद यह सिंहासन विवाद का विषय न बन सके।" रुद्रशेखर को महामंत्री की बात जंच गई। उन्होंने दत्तक पुत्र लेने का निर्णय ले लिया।

कुछ दिन बाद राजा जंगल से शिकार खेलकर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा— एक बाघ किसी बच्चे को उठाए भागा जा रहा है। बच्चा रोने का प्रयास करता, परंतु भय के कारण उसके कंठ से स्वर ही नहीं फूट रहा था।

यह दृश्य देख, रुद्रशेखर का हृदय पिघल गया। उन्होंने धनुष-बाण उठाया। एक ही तीर में बाघ को बींध दिया। घायल बाघ बच्चे को छोड़कर घने जंगल में ओझल हो गया। राजा ने बच्चे के पास जाकर देखा, उसके शरीर पर कई छोटे-छोटे घाव थे। उन्होंने इधर-उधर बच्चे के मां-बाप को ढूंढ़ा। पर कहीं कोई नहीं मिला।

राजा उसे मां देवी का आशीर्वाद मान, महल में ले आए। राजवैद्य की चिकित्सा से शीघ्र ही बच्चा पूर्ण स्वस्थ हो गया। रानी बच्चे को देखकर मुग्ध हो गई। उनका वात्सल्य फूट पड़ा। राजा-रानी ने निर्णय लिया— 'हम इसी बच्चे को गोद लेंगे।'

रुद्रशेखर ने राजपुरोहित को बुलवा, बच्चे का नामकरण संस्कार करवाया। राजपुरोहित ने ज्योतिष की गणना से उसका नाम तेजस्वी नारायण रखा।

तेजस्वी शीघ्र ही राज परिवार में घुल-मिल गया। राजा ने महामंत्री को बुलवा कर घोषित करवा दिया— उनकी मृत्यु के बाद तेजस्वी नारायण राज सिंहासन संभालेगा।

अभी कुछ ही माह बीते थे, तभी राजा को सूचना मिली—रानी सविता गर्भवती हो गई हैं।

महाराजा की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें तो जैसे मुंह मांगी वस्तु मिल गई थी।

समय पर रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। नगर में खुशी की लहर दौड़ गई। संतान को तरसते राज परिवार में दो-दो पुत्र हो गए थे। राजा के दूसरे पुत्र का नाम विभूति नारायण रखा गया।

धीरे-धीरे दोनों कुमार बढ़ने लगे। अब एक नई समस्या पैदा हो गई थी। राजा रुद्रशेखर तेजस्वी नारायण को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर चुके थे। लेकिन उनका अपना पुत्र उस अधिकार से वंचित रहे, यह भी उन्हें न्याय संगत न लगा।

रानी सविता भी अब अपनी कोख से जन्मे पुत्र को ही राजा देखना चाहती थीं।

इस समस्या के कारण महाराजा चिंतित रहने लगे। एक तरफ उनका वचन था, तो दूसरी ओर पुत्र मोह। उन्होंने महामंत्री से सलाह ली। महामंत्री ने कहा— "महाराज, इस विषय में आपके गुरु आचार्य कोमल सिद्धार्थ सही फैसला दे सकते हैं। वह जनता के सम्मुख जो निर्णय देंगे, वही सबको मान्य होगा।"

रुद्रशेखर को महामंत्री की बात समझ में आ गई। उन्होंने आचार्य के पास जाकर समस्या सुनाई और निर्णय मांगा। कोमल सिद्धार्थ ने कहा—"मैं अगले सप्ताह अपना निर्णय सुनाऊंगा। तब तक मैं दोनों कुमारों के गुण और अवगुणों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी विचार करूंगा।"

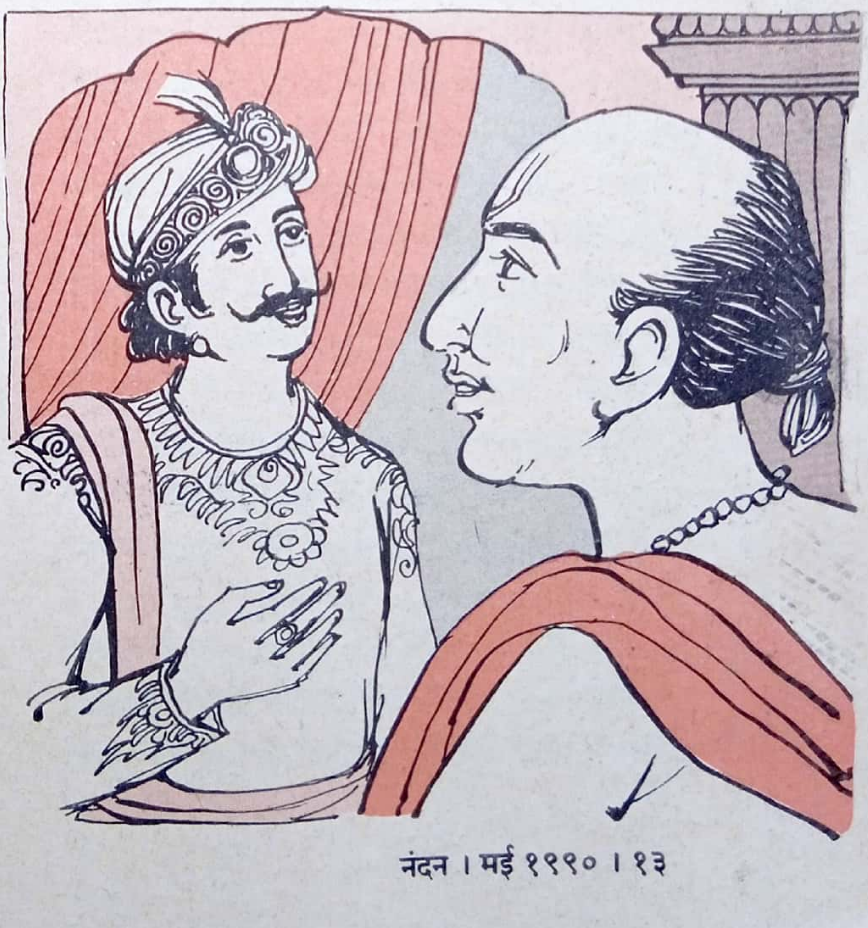
प्रजा में यह बात फैल चुकी थी कि राजा ने उत्तराधिकारी के नाम का निर्णय आचार्य कोमल सिद्धार्थ पर छोड़ दिया है।

अगले दिन आचार्य ने चुपके से राजा को बुलवाया। कहा— "महाराज, मैंने नगर के चौक में बने विशाल मंदिर की मूर्ति के नीचे विजय शंख छिपा दिया है। जो राजकुमार उसे पहले ढूंढ़कर विजयी शंखनाद करेगा, उसी को राज सिंहासन सौंपा जाना चाहिए।"

राजा रुद्रशेखर इस प्रतियोगिता से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा—'अब मेरा असली पुत्र पहले शंखनाद कर राजा बन जाएगा। यदि मैं स्वयं तेजस्वी को गद्दी न सौंपकर विभूति को राजा बनाता, तो वचन भंग का दोषी बनता। प्रजा में मेरी प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचता।'

उन्होंने महल में जाकर चुपके से विभूति को अपने पास बुलाया। समझाया—"प्रतियोगिता वाले दिन तुम मंदिर में सीधे देवी की मूर्ति के पास जाना। उसके नीचे रखे शंख को उठाकर बजा देना।"

निर्धारित समय पर नगर के सभी लोग मुख्य चौक में मंदिर के आसपास जमा हो गए। वे देखना चाहते थे कि उनका अगला राजा कौन बनेगा?





थोड़ी देर बाद महाराज रुद्रशेखर, महामंत्री अभिषेक, आचार्य कोमल सिद्धार्थ अपने-अपने रथ पर बैठ, वहां पहुंच गए। रानी सविता भी अपने पुत्र का शंखनाद सुनने आई थीं।

दोनों राजकुमारों को एक रथ में बैठाकर मंदिर के मुख्य द्वार के पास छोड़ दिया गया। उन्हें सब बातें समझा दी थीं— मंदिर की चाहर दिवारी में शंख रखा है। जो पहले ढूंढ़कर शंखनाद करेगा, उसी को राज सिंहासन सौंपा जाएगा।

दोनों कुमारों ने मंदिर में प्रवेश किया। लोग बड़ी उत्सुकता से शंख ध्वनि की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजकुमार तेजस्वी नारायण ने घुसते ही मंदिर की सीढ़ियों के आस-पास इधर-उधर शंख खोजना प्रारम्भ कर दिया। पर विभूति तो सीधा मूर्ति के पास गया। उसे एक तरफ हटाया। लेकिन यह क्या! वहां तो शंख था ही नहीं।

वह गुस्से से उफनता आया और चिल्लाकर कहा— "हे आचार्य, तुमने राजा के सम्मुख झूठ बोलकर उन्हें दिग्भ्रमित किया है। तुम अपराधी हो।"

विभूति पूरी बात कहता, इससे पहले ही मंदिर के अंदर से शंख की ध्वनि सुनाई पड़ी।

लोग हर्ष ध्वनि करने लगे। राजा रुद्रशेखर का चेहरा उतर गया।

एकाएक आचार्य कोमल खड़े हुए। वह बोले— "राजन, मुझे जिस बात का भय था, तुमने वही किया। पुत्र मोह में राज कर्त्तव्य और क्षत्रिय धर्म को भूल गए। मैंने तुम्हारे मन की बात जानने के लिए ही तुम्हें बताया था, शंख मूर्ति के नीचे रखा है। जबकि वह बाहर गमले के पीछे रखा था। तुमने सिर्फ अपने पुत्र को शंख की सूचना दी, राजकुमार तेजस्वी को कुछ भी नहीं बताया। तुम्हारे लिए दोनों पुत्र एक समान होने चाहिए थे। तुम्हें राजसभा की गुप्त बातें भी पुत्र कें आगे नहीं खोलनी चाहिए थीं। अब जरा सोचो, जिस अनाथ बच्चे को तुमने अपना बेटा समझ कर पाला, जब तुम उसके साथ ही धोखा करने चले, तो प्रजा का क्या होगा?"

रुद्रशेखर शर्म से पानी-पानी हो गए। उन्होंने आचार्य के पैर पकड़ लिए। कहा— "आपने मुझे अन्याय से बचा लिया। मैं तो पुत्र मोह में अंधा हो गया था। अब मुझे राजा कहलाने का कोई अधिकार नहीं। मैं आज ही सिंहासन तेजस्वी को सौंप दूंगा। प्रजा मुझे क्षमा करे।"

राजकुमार विभूति भी आचार्य के प्रति कहे अपने कठोर वचनों के कारण आत्म ग्लानि अनुभव करने लगा।

आचार्य पुनः गम्भीर हुए। बोले— "हर पाप प्रायश्चित से धोया जा सकता है। महाराजा रुद्रशेखर ने प्रजा के सम्मुख क्षमा मांगी है। अतः मैं प्रजा से अनुरोध करूंगा कि वह महाराजा से प्रार्थना करे, ताकि वह कुमारों के युवा होने तक राज सिंहासन संभालें। बाद में कुमार तेजस्वी नारायण से आग्रह करूंगा कि वह अपने छोटे भाई विभूति को उचित सम्मान एवं स्नेह दें।"

हर्षनाद के बीच लोग आचार्य की जय-जयकार करने लगे। ●

नाग लोक चलो

— कविराज ओमप्रकाश



गुणाकर जाना-माना वैद्य था। उसके पास दूर-दूर से रोगी आया करते थे। निर्धन रोगियों का इलाज गुणाकर निःशुल्क करता था।

गुणाकर के पिता वीरजी काफी बूढ़े हो गए थे। इधर कुछ समय से उन्हें विचित्र रोग हो गया था। मुंह से लार गिरती रहती। गुणाकर ने इलाज किया, फिर दूसरे वैद्यों को भी दिखाया, पर कोई फायदा न हुआ। एक सुबह गुणाकर माता-पिता तथा पत्नी और बच्चों के साथ हरिद्वार के लिए चल दिया। वे सब कार में यात्रा कर रहे थे। हरिद्वार पहुंचकर वे लोग एक धर्मशाला में ठहर गए। गुणाकर के माता-पिता को वहां बहुत शांति मिली। वीरजी सुबह से शाम तक मंदिरों में जाकर बैठे रहते।

एक रात की बात, गुणाकर गहरी नींद में था, तभी उसे सपना दिखाई दिया। उसने देखा, वीरजी चारपाई पर सो रहे हैं। एक सांप कमरे में आता है और वीरजी के सिर पर फन फैलाकर बैठ जाता है। गुणाकर चाहता है कि पिता को जगा दे, पर गले से आवाज नहीं निकलती। वह देखता रहता है— सांप रह-रहकर अपना फन वीरजी के चेहरे की ओर झुकाता है और फिर झटके से पीछे हो जाता है। जैसे किसी ने उसके फन को पीछे खींच लिया हो।

फिर गुणाकर की नींद टूट गई। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसने घबराई नजर से पास की चारपाई पर सो रहे वीरजी की ओर देखा। वह गहरी नींद में थे। कहीं कुछ नहीं था। पिता के सिरहाने बैठकर रात काट दी।

गुणाकर ने सपने का जिक्र किसी से नहीं किया। अगली रात गुणाकर ने फिर वही सपना देखा— एक काला सांप वीरजी को डंसने के लिए फन नीचे करता है। फिर झटके से पीछे हो जाता है। पहली रात की तरह आज भी वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। सब-कुछ सामान्य था, पर गुणाकर का मन बेहद परेशान था। वह सोच रहा था— 'आखिर इस सपने का मतलब क्या है?

गुणाकर परेशान, खिड़की के सामने बैठा था, तभी उसने एक संन्यासी को जाते देखा। मन में आवाज आई— 'गुणाकर, जाकर उनके पैर पकड़ ले। वही तेरी समस्या हल करेंगे।' गुणाकर भागा-भागा नीचे गया। उसने संन्यासी के चरण पकड़ लिए।

संन्यासी ठिठक गए। उन्होंने गुणाकर के परेशान चेहरे पर दृष्टि डाली। फिर कंधों से पकड़कर उठाते हुए बोले— "तेरा कल्याण हो। इतना परेशान क्यों है?"

"बाबा, मन बहुत दुखी है। आप ही मेरा कल्याण कर सकते हैं। मुझे आशीर्वाद दीजिए।"— कहते हुए गुणाकर की आंखों से आंसू बह चले।

संन्यासी गुणाकर के साथ धर्मशाला में चले आए। वहां एकांत कमरे में गुणाकर ने उन्हें सांप वाले सपने की बात बताई। कहा— "बाबा, क्या यह किसी अनिष्ट का संकेत है? मेरे पिता जी अच्छे तो हो

जाएंगे न ?''

संन्यासी गम्भीरता से कुछ सोचते रहे। फिर कहा— ''गुणाकर, सपने का संकेत समझने में कुछ समय लगेगा, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। अच्छा मैं चलता हूं।'' कहकर वह उठने लगे, पर गुणाकर ने उनके पैर मजबूती से पकड़ लिए।

संन्यासी मुसकरा उठे। उन्होंने कहा— ''अच्छा, अच्छा, चिंता न कर। मैं यहीं रहूंगा, तेरे पास। जब तू कहेगा, तभी जाऊंगा। बस, अब तो खुश है।''

उस दिन से संन्यासी धर्मशाला में गुणाकर के पास ही रुक गए। उस रात भी गुणाकर ने सपने में वही घटना देखी। आंखें खुली, तो वह दूसरे कमरे में साधु बाबा के पास गया। वह बैठे भजन कर रहे थे। गुणाकर की बात सुनकर उन्होंने कहा— ''मुझे अंधेरे में कुछ रोशनी दिखाई दे रही है।''

''अंधेरे में रोशनी से क्या मतलब बाबा !''— गुणाकर ने पूछा।

—''पूरी बात समझने-समझाने में समय लगेगा। अभी इतना करो कि तुरंत देहरादून के लिए चल पड़ो।''

''देहरादून, वहां क्या है ?''— गुणाकर ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

—''मैंने कहा न, अभी मैं तुम्हारी हर बात का उत्तर नहीं दे सकता। जैसा कहता हूं, करते जाओ। भगवान भला करेंगे।''

गुणाकर ने उसी समय माता-पिता तथा पत्नी से देहरादून के लिए तैयार होने को कह दिया। आधा घंटे बाद कार देहरादून की ओर चल दी। आगे की सीट पर गुणाकर के साथ संन्यासी भी बैठे हुए थे। अभी पौ नहीं फटी थी। रास्ता सुनसान था। गुणाकर तेजी से कार चला रहा था। कार की रोशनी दो सीधी रेखाओं में दूर तक पड़ रही थी।

एकाएक गुणाकर ने ब्रेक लगा दिए। जोर का झटका लगा। दिखाई दिया थोड़ा आगे एक अजगर सड़क पर आर-पार लेटा हुआ था। गुणाकर ने कई बार हार्न बजाया, पर कुछ न हुआ।



''हमें प्रतीक्षा करनी होगी। यहां तो कोई दूसरा रास्ता भी नहीं है। न जाने अजगर रास्ते से कब हटेगा ?''— गुणाकर ने परेशान स्वर में कहा।

संन्यासी ने कहा— ''गुणाकर, अजगर के हटने की प्रतीक्षा में इस तरह रुकना ठीक नहीं। वह तो इसी तरह लेटा रहेगा। तुम एक काम करो। कार को तेजी से दौड़ाते हुए अजगर के ऊपर से निकाल लो।''

''नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। अगर अजगर कार से लिपट गया, तो क्या होगा ? प्रतीक्षा करना ही ठीक है।''— गुणाकर घबराते हुए बोला।

''ऐसा कुछ नहीं होगा। जैसा कहता हूं, वैसा करो। फिर देखो, क्या होता है। गाड़ी बढ़ाओ।''— संन्यासी ने आदेश के स्वर में कहा। अब गुणाकर उनके आदेश की अवहेलना न कर सका। अजगर को रौंदते हुए कार आगे निकल गई। अजगर के ऊपर से गुजरते हुए जोर का झटका लगा।

''कार रोको।''— संन्यासी जी ने कहा।

गुणाकर ने कार रोक दी। संन्यासी तुरंत दरवाजा खोलकर नीचे उतर आए। गुणाकर भी पीछे-पीछे था। उसने देखा, अजगर रेंगता हुआ सड़क के पास उगी झाड़ियों में गुम हो गया।

"आओ, देखें वह कहां जाता है ?"— कहकर संन्यासी उस तरफ चल दिए।

"महाराज, अभी दिन पूरी तरह नहीं निकला है। घायल अजगर क्रोध में होगा। अभी उसके पीछे जाना ठीक नहीं।"— गुणाकर बोला। संन्यासी महाराज ने उसकी ओर देखा। गुणाकर उन्हें देखता रह गया। लगा, जैसे संन्यासी के चेहरे से प्रकाश फूट रहा हो। फिर वह कह उठे— "गुणाकर, अधिक प्रश्न मत करो। मेरे पीछे-पीछे चले आओ। तुम्हारा ही काम कर रहा हूं।"

गुणाकर ने अधिक कुछ कहना ठीक नहीं समझा। वह संन्यासी के पीछे-पीछे बढ़ चला। चारों ओर घनी झाड़ियां थीं। घास पर ओस हीरे-मोती-सी चमक रही थी।

कुछ आगे अजगर दिखाई दिया। वह एक झाड़ी के अंदर कांटों में उलझा छटपटा रहा था। नुकीले कांटे सारे बदन में घुस गए थे, इसलिए वह अपनी जगह बिंधकर रह गया था। बहुत कोशिश कने पर भी वहां से आगे नहीं जा पा रहा था।

संन्यासी के होंठों पर मुसकान फैल गई। बोले— "अब कोई भय नहीं। अजगर कांटों के बंधन से छूट नहीं पाएगा। कुछ ही घंटों में चींटियां उसे अपना भोजन बना लेंगी। आओ चलो।"

गुणाकर कार में आ बैठा, तो संन्यासी जी ने कहा— "अब हरिद्वार लौट चलो।"

"पर हम तो देहरादून जा रहे थे।"— गुणाकर ने पूछा।

"हां, अब वहां जाने की आवश्यकता नहीं। हमारा काम हो गया। इसीलिए मैं तुम्हें यहां लाया था।"— संन्यासी जी ने कहा और आंखें मूंद लीं।

गुणाकर कार को हरिद्वार लौटा लाया। उस दिन संन्यासी जी ने उससे कोई बात नहीं की। कमरे में चुप बैठे साधना में लीन रहे। गुणाकर के लिए उनकी चुप्पी रहस्यमय थी। रात को यही सब सोचते-विचारते न जाने कब उसे नींद आ गई। नींद में फिर वही सपना आया— लेटे हुए पिता के सिरहाने फन फैलाए सांप। उसने सांप की आवाज सुनी— "गुणाकर, मैं हार गया— जा रहा हूं। अब तुम्हारे पिता स्वस्थ हो जाएंगे।" इतना कहकर सांप अदृश्य हो गया। गुणाकर की नींद खुल गई।

गुणाकर तुरंत दूसरे कमरे में गया। उसे देखते ही साधु बाबा हंस पड़े। बोले— "अब चिंता समाप्त हुई। तुम्हारे पिता स्वस्थ हो जाएंगे। अब मुझे जाने दो।"

गुणाकर ने संन्यासी के चरण छुए। साधु धर्मशाला से बाहर आए, तो वह भी पीछे-पीछे था।

संन्यासी आशीर्वाद देकर चलने लगे, तो गुणाकर ने कहा— "महाराज, मैं सपने का और उस अजगर का रहस्य जानना चाहता हूं। इनका मेरे पिता की बीमारी से क्या सम्बंध है ?"

संन्यासी ने कहा— "हां, अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सकता हूं, आओ मेरे साथ।" संन्यासी गुणाकर को गंगा तट पर ले गए। कहा— "तुम्हारे पिता पूर्वजन्म में नाग लोक के वासी थे। उन्हें इतने वर्ष पृथ्वी पर बिताने थे। वह समय बीतने के बाद दो सर्प उन्हें नाग लोक ले जाने आए थे। एक वह अजगर और दूसरा सपने में दिखलाई देने वाला सर्प। अजगर के मर जाने से दूसरा सांप भी विवश होकर वापस चला गया। वे तुम्हारे पिता को नाग लोक नहीं ले जा सके। इसीलिए दूसरे सांप ने हार मानने की बात कही थी।"

"लेकिन.." गुणाकर ने कहा। संन्यासी हंसकर बोले— "तुम यही जानना चाहते थे न कि मुझे यह सब कैसे पता चला ?"

"जी, हां।"— गुणाकर ने शीघ्रता से कहा।

"गुणाकर, मैं तो न जाने कितनी बातें जानता हूं। उस चक्कर में उलझना ठीक नहीं। क्या इतना काफी नहीं कि तुम्हारे पिता पर आया संकट टल गया है। जाओ, मन लगाकर उनकी सेवा करो।" फिर देखते-देखते संन्यासी जी वहां से अदृश्य हो गए। उसी दिन से गुणाकर के पिता एकदम स्वस्थ हो गए। कुछ दिन बाद पूरा परिवार अपने शहर लौट आया। •

लालच की चमक

—विमला रस्तोगी

विसनपाल एक गरीब किसान था। था बहुत सुस्त आदमी। काम नहीं करता था, इसीलिए खेतों में अच्छी पैदावार भी नहीं होती थी। मगर जमींदार उसे मानता था, क्योंकि वह पूरे गांव की खबर जमींदार को देता था। किसकी फसल कटने वाली है ? कौन शहर में जाकर अनाज बेचने की सोच रहा है ? इधर-उधर घूमता विसनपाल सभी की खबर रखता था। खुश होकर जमींदार उसे कभी अनाज, तो कभी रुपए दे देता था। उसी से उसके परिवार का गुजारा चलता, किंतु उसका हाथ हमेशा तंग रहता। जमींदार के ठाट-बाट देखकर विसनपाल का जी ललचाता। वह भी उसी की तरह रहना चाहता था। सोचता था—'कहीं से धन मिल जाए, तो सुखी बनूं।'

एक दिन वह अपने खेत की मेड़ पर बैठा, सोच रहा था—'फसल बोने के दिन आ रहे हैं। हल चलाऊं, न चलाऊं।' मेहनत करना तो वह चाहता ही न था। इसी दुविधा में वह खुरपी से जमीन कुरेदने लगा। तभी उसे एक चमकीला पत्थर दिखाई दिया। उसे देखकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा—'यह जरूर कीमती पत्थर है।' उसने हाथ से पत्थर की मिट्टी झाड़ी। हथेली में रखकर देखा—पत्थर खूब चमक रहा था। फिर इधर-उधर नजर दौड़ाई। खेत से थोड़ी दूर एक साधु बैठे थे। विसनपाल ने सोचा—'साधु महाराज से पूछा जाए, यह पत्थर कितना कीमती है ?'

वह साधु के पास गया। हाथ जोड़कर बोला—"महाराज, खेत की मिट्टी में मुझे यह चमकीला पत्थर मिला है। कितना कीमती होगा ? मुझे तो कोई कीमती रत्न लगता है।"

"यह मामूली पत्थर है। रत्न के भ्रम में न रहो।"—साधु ने कहा।

पत्थर को हाथ में दबाए, विसनपाल फिर मेड़ पर आकर बैठ गया। वह उस चमकीले पत्थर को साधारण मानने को तैयार नहीं था। सोचने लगा—'शायद साधु ने पत्थर को ठीक से नहीं देखा, दोबारा दिखाना चाहिए।'

वह उठकर पुनः साधु के पास आया। बोला—"ठीक से देखिए, जरूर यह कीमती पत्थर है। इससे मेरी गरीबी दूर हो जाएगी।"

—"यह साधारण पत्थर है, तुम यह बात मानते क्यों नहीं ?"

साधु के जवाब से वह उदास हो गया। साधु ने पूछा—"तुम्हारे पास खेत नहीं हैं ?"

"हैं, मगर उन्हें जोतने-बोने में मेहनत बहुत करनी पड़ती है।"—विसनपाल ने सकुचाते हुए कहा।

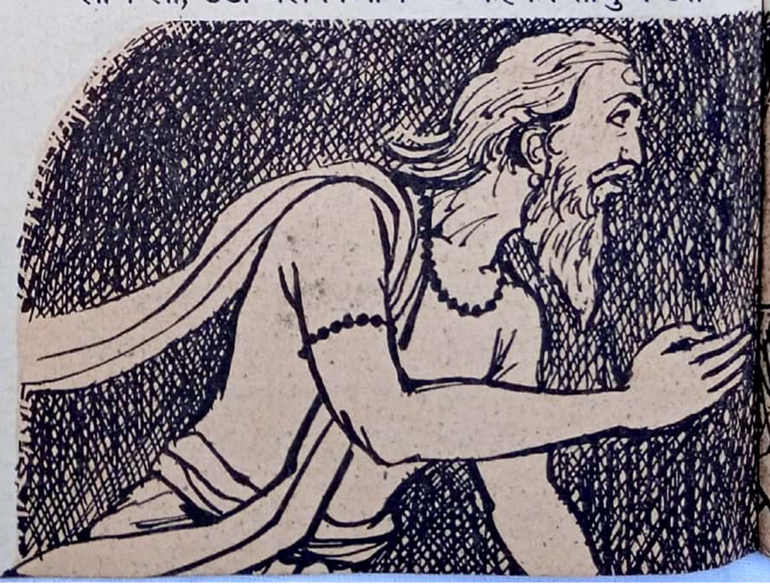
—"क्या तुम बिना मेहनत के रईस होना चाहते हो ?"

"जी ! क्या कोई ऐसा उपाय है ?"—उसने पूछा।

"है क्यों नहीं। चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें बहुत सारे चमकीले और कीमती पत्थरों का पता बताऊंगा। वहां से जितनी इच्छा हो, पत्थर ले आना।"—साधु ने कहा।

वह खुशी-खुशी साधु के पीछे चलने लगा। चलते-चलते दोनों दूर निकल आए। विसनपाल अब थक गया। "और कितनी दूर जाना है ?"—उसने हांफते हुए पूछा।

"इतनी जल्दी थक गए ? ठीक है, थोड़ा सुस्ता लो। लो, ठंडा जल पिओ।"—कहकर साधु ने उसे



कमंडल का जल पिलाया। विसनपाल की थकान कम हुई।

"वे चमकीले और कीमती पत्थर कहां हैं महात्मन ?"— विसनपाल ने पूछा।

"यहां से कुछ दूर सीधे चलते जाओ। बाएं हाथ को एक रास्ता मुड़ेगा। कुछ दूर आगे एक कुएं से लगी गुफा मिलेगी। उसके अंदर संभलकर जाना। गुफा के खत्म होते ही तुम्हें चमकीले पत्थर मिलेंगे। जितने पत्थर ला सको, ले आना। मैं यहीं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"—साधु ने समझाया।

विसनपाल उनके बताए रास्ते पर चल पड़ा। गुफा के सामने पहुंचकर वह रुका। गुफा में घुसते हुए उसे डर लग रहा था, किंतु धन के लोभ से वह रुका नहीं। तेज कदमों से चलने लगा। गुफा से अजीब आवाजें आ रही थीं। विसनपाल ने हिम्मत करके गुफा पार कर ली। गुफा के उस पार पहुंचते ही उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। वहां बहुमूल्य पत्थरों का ढेर लगा था। पहला वाला पत्थर उसकी जेब में रखा था। अब उसने उसे फेंक दिया। वह चमकदार पत्थरों को, साथ लाए थैले में भरने लगा। पत्थर भरते-भरते उसे पसीना आ गया। थैला भर गया, तो उसने अपने कुर्ते की दोनों जेबें भर लीं। लालच अब भी कम न हुआ, तो कुर्ते को झोलीनुमा पकड़कर पत्थर भर लिए।

विसनपाल ने सोचा—'सूरज डूबने से पहले मुझे घर पहुंच जाना चाहिए।' पर बोझ के कारण जल्दी नहीं चल सकता था। हांफता हुआ आगे बढ़ रहा था। गुफा के द्वार पर पहुंचते ही उसे ठोकर लगी। वह अंधे कुएं में गिर गया। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था—केवल अंधेरा ही अंधेरा था। वह चीखने लगा—"बचाओ-बचाओ। मैं कभी लालच नहीं करूंगा। मुझे बचाओ।" वहां उसकी आवाज सुनने वाला कोई न था। कई पत्थर चुभने से हाथ-पैरों से खून निकल रहा था। विसनपाल पछताने लगा—'अमीर बनने के लालच में यह दशा हुई। जिंदगी के भी लाले पड़ गए। पत्नी और बच्चे घर पर इंतजार कर रहे होंगे।'



तभी वहां साधु आए। कुएं में झांककर बोले—"कैसे हो विसनपाल ?"

—"महाराज, मुझे इस अंधे कुएं से निकालिए। मैं आपके हाथ जोड़ता हूं।"

—"क्या तुम्हें कीमती पत्थर नहीं मिले ?"

"मुझे कीमती पत्थर नहीं चाहिएं। मेरी जान बचाइए। किसी भी तरह मुझे बाहर निकालिए।"—कहते-कहते विसनपाल रोने लगा।

साधु को दया आ गई। उन्होंने एक कपड़े की रस्सी बनाई। उसी से विसनपाल को बाहर निकाल दिया।

"मुझे क्षमा कर दीजिए महाराज !"—विसनपाल ने साधु के पैर पकड़ लिए।

साधु मुसकराए—"हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती। ये पत्थर हैं, जिनके कारण तुम अंधकूप में गिरे। ये पत्थर सूर्य की किरणों के कारण चमक रहे थे। तुम लालच में अंधे हो गए, इसीलिए असली-नकली का भेद भूल गए।"

—"आप ठीक कह रहे हैं महाराज !"

"सुनो, मेहनत से बढ़कर कीमती कुछ नहीं है। तुम अपने खेतों में मेहनत करो। फसल के रूप में वह सोना उगलेंगे।"—साधु ने उसे समझाया।

"आज आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब मैं मेहनत से जी नहीं चुराऊंगा।"—विसनपाल ने कहा और घर चला आया। ●

धन कहां

—प्रमोद वैश्य

पुरानी बात है। गढ़वाल में एक वीर दयालु राजा का राज्य था। उसके राज्य में सुकमल नामक व्यापारी रहता था। सारा राज्य जानता था कि उस व्यापारी के पास अथाह धन है। परंतु किसी को यह मालूम नहीं था कि व्यापारी धन कहां छिपाकर रखता है।

राजा ने महामंत्री से कई बार कहा—"तुम पता करो कि सुकमल अपना धन कहां सुरक्षित रखता है ?" महामंत्री ने अपने गुप्तचरों और राज्य के शातिर चोरों को इस कार्य में लगाया, परंतु वह इस राज को नहीं जान सका।

राजा चिंतित रहने लगा। राजमहल में राजा की चिंता का कारण भी सभी जान गए थे। वे अपने-अपने सुझाव राजा को दे रहे थे, परंतु उन सुझावों से भी कुछ न हुआ। राजा को एक ही चिंता सता रही थी—व्यापारी के पास कितना धन है ? बिना सशस्त्र पहरेदारों के वह धन सुरक्षित कहां रखा है ?

किसी भी युक्ति को सफल न होते देख, राजा ने सुकमल को बुलाया। उससे कहा—"राज्य पर विपत्ति है। धन की आवश्यकता है। खजाने में इतना धन है नहीं। कहां से आए ?"

सुकमल ने कहा— "राजन ! भूमिका की कोई आवश्यकता नहीं। मेरा सारा धन राज्य के लिए है। आप सुबह चालीस घोड़े भेज दें। मैं अपना आधा धन सुबह ही दरबार में भिजवा दूंगा और आधा धन तीन दिन बाद भिजवा दूंगा।"

अगले दिन हीरे-जवाहरात से लदे चालीस घोड़े दरबार में हाजिर थे। राजा को लगा, इस अपार धन के होते हुए भी सुकमल कितना शांत और चिंता रहित है। उसी समय राजा ने सुकमल को बुलाकर कहा—"कल रात को धन की आपूर्ति हो गई थी। अब धन की आवश्यकता नहीं है।"

व्यापारी बिना कुछ कहे अपना धन वापस ले गया, परंतु राजा की जिज्ञासा शांत न हो सकी। प्रश्न वहीं का वहीं स्थिर था।

एक दिन महारानी ने राजा को फिर चिंतित देख, एक युक्ति बताई। युक्ति के अनुसार राजा ने फिर सुकमल को बुलाया। कहा— "हमें स्वप्न में आदेश हुआ है कि आप बदरी विशाल के दर्शन करें तथा उसका पूरा इंतजाम हम करें।"

सुकमल राजा के मन के भाव समझते हुए बोला—"राजन, स्वप्न में मुझे भी बदरी विशाल के दर्शन की आज्ञा हुई है, परंतु बदरी विशाल ने यह भी कहा है, मैं स्वयं द्वारा लगाए आधे पुष्प एक बार तथा आधे पुष्प दूसरी बार चढ़ाऊं। मैंने कल ही एक सहस्त्र गमलों में पुष्प लगा दिए हैं। जब भी इन पौधों पर पुष्प लगेंगे, मैं बदरी विशाल के दर्शन के लिए प्रस्थान करूंगा।"

लगभग छह माह पश्चात् सुकमल ने राजा के पास जाकर कहा— "राजन, मैं कल बदरी विशाल के दर्शनों के लिए प्रस्थान की आज्ञा चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे पुष्पों का ध्यान रखा जाए।"

राजा तो यही चाहता था। उसने व्यापारी की बात मान ली। पुष्पों की रखवाली के पूर्ण प्रबंध का आश्वासन दे दिया।

व्यापारी के प्रस्थान करते ही राजा ने व्यापारी के यहां खोज शुरू कराई। फिर भी व्यापारी ने धन कहां रखा है, यह राज न खुल पाया। इसी चिंता में राजा इतना बीमार हो गया कि बचने की आशा न रही। महारानी ने सिपाही भेजकर सुकमल को बुलवाया।

व्यापारी ने महारानी से कहा—"राजा की चिंता का कारण मुझे मालूम है। मेरा सम्पूर्ण धन गमलों में ही छिपा है, जिनकी रक्षा स्वयं महाराजा करा रहे हैं।"

गमलों में धन देख, राजा स्वस्थ्य होते गए। एक दिन बोले—"सुकमल, इतना धन होने के बावजूद तुम्हें चिंता क्यों नहीं होती ?"

सुकमल बोला— "स्वयं के कमाए व जनता के धन में यही अंतर है राजन ! स्वयं कमाए धन का रखना आसान होता है। साथ ही उसके खोने पर चिंता भी नहीं होती। इसलिए मैं चिंता मुक्त रहता हूं।"



आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट ।**

कहानी लिखो—७८

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १० मई '९० तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर प्रकाशित की जाएगी ।

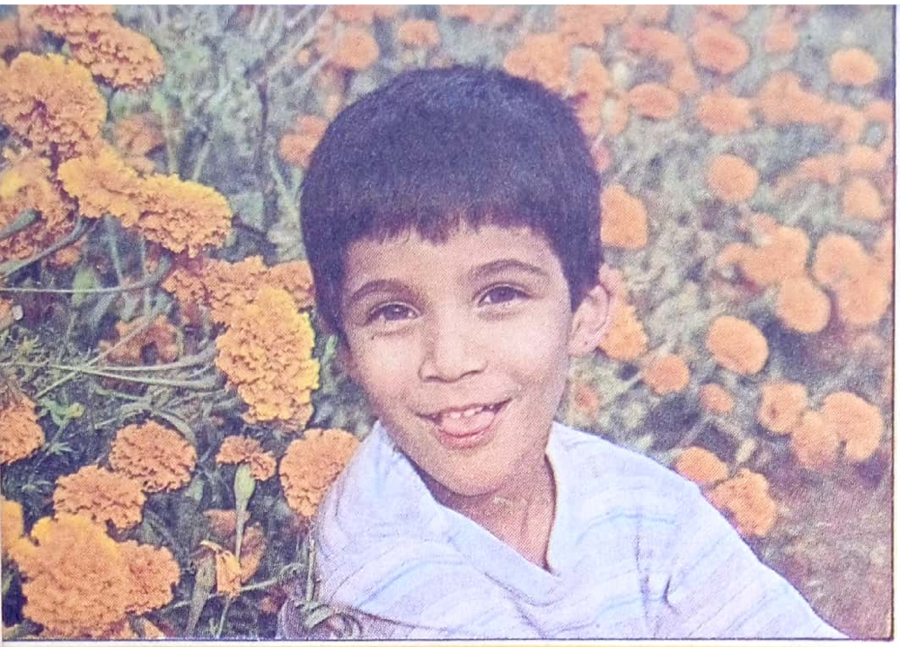
परिणाम—जुलाई '९० अंक



चित्र पहेली—७८

'पेड़ पर बंदर' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए । उसे १० मई '९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । पसंद किया गया चित्र 'नंदन' में छपेगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम—अगस्त '९० अंक





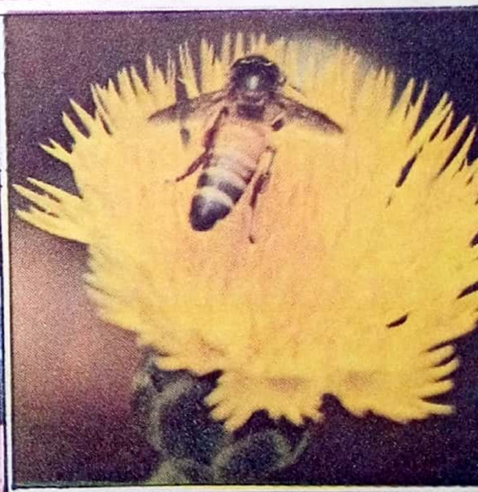
फूलों के रंग
भरते उमंग











चित्र : विद्याव्रत, एन.के. वीर, क्लाउन, देवब्रत बनर्जी, पी.के. गर्ग



अपना घर

— अलेक्ज़ेंडर मेक्काल स्मिथ

वे सब एक बालघर में रहते थे। बालघर यानी अनाथालय। वहां कुल मिलाकर पंद्रह बच्चे थे। उनमें से तीन बच्चे आपस में गहरे दोस्त थे। सोना-खाना, नहाना-धोना, खेल-कूद-पढ़ाई सब कुछ मिलकर करते थे। दो लड़के और एक लड़की— हेंस पीटर और कलि तथा अन्ना। वे आपस में एक-दूसरे के कुछ भी नहीं थे, पर फिर भी भाई-बहन समझते थे।

बालघर को चलाते थे पोस्नर तथा उनकी पत्नी। उन दोनों के अपने बच्चे नहीं थे। वे बालघर में रहने वाले अनाथ बच्चों से खूब स्नेह करते थे। पोस्नर परिवार गरीब था। वहां रहने वाले बच्चों को और चाहे जो कमी हो, पर स्नेह का अभाव कभी नहीं रहा।

बच्चों की खुशी में अगर कोई कांटा था, तो चौकीदार ओटो। बहुत ही चिड़चिड़े स्वभाव का था। बात-बेबात बच्चों को डांटता-फटकारता रहता। बच्चे भी उससे सीधे मुंह बात न करते, बचकर चलते। कभी-कभी अपनी शैतानी से उसे छका देते और फिर खूब खिलखिल करते। ऐसे में पोस्नर महोदय भी बच्चों का पक्ष लेते।

ऐसे ही दिन बीत रहे थे। एक रोज बच्चों को लगा, मामला कुछ गड़बड़ है। शाम के भोजन के समय श्री

पोस्नर बहुत चुप-चुप नजर आए । हर दिन बच्चों के साथ खूब मजाक करते थे, पर उस दिन न जाने क्या हो गया था उन्हें । हेंस पीटर अन्ना के कान में फुसफुसाया— ''पता नहीं क्या बात है ?''

''हमें मालूम करना चाहिए ।''— अन्ना ने जवाब दिया— ''हो सकता है, रात में सब ठीक हो जाए ।''

लेकिन अगली सुबह भी पोस्नर महोदय उतने ही परेशान नजर आए । कुछ देर बाद उन्होंने सब बच्चों को अपने कमरे में बुलाया । जब सब जमा हो गए तो पोस्नर ने कहा— ''बच्चो, एक बुरी खबर है । हमें यह बालघर बंद करना पड़ेगा ।''

बच्चों को जैसे सांप सूंघ गया । वे फटी-फटी आंखों से पोस्नर साहब की ओर देखने लगे । सचमुच बहुत बुरी खबर थी ।

पोस्नर कुछ देर चुप रहने के बाद फिर बोलने लगे— ''हमारे नगर के मेयर यही चाहते हैं । उनका कहना है कि इस बालघर को चलाने पर बहुत खर्च आता है । नगर में और भी कई बड़े बालघर हैं । वह चाहते हैं तुम लोगों को उन बालघरों में भेज दिया जाए ।''

—''लेकिन ...'' हेंस पीटर ने कुछ कहना चाहा, पर उससे बोला न गया । गला जैसे रुंध गया था ।

पोस्नर ने कहा— ''मैं तुम्हारी बात समझता हूं । यही पूछना चाहते हो न कि क्या सब यहां की तरह इकट्ठे रह सकेंगे ?

नहीं, यहां रहने वाले १५ बच्चों को अलग-अलग बालघरों में भेजा जाएगा । कौन साथ रहेगा, कौन बिछुड़ जाएगा, अभी यह कहना कठिन है । मैंने मेयर से बहुत कहा-सुना, पर वह मानने को तैयार नहीं । हमेशा पैसे की कमी के बारे में कहते रहते हैं । अगर मेरे पास पैसे होते तो . . . तो. . .'' पोस्नर की आवाज भर्रा गई ।

बच्चों का सुख-चैन जाता रहा । हर समय बिछुड़ने की चिंता सताती रहती । कौन साथ रहेगा, कौन दूर चला जाएगा—इस बारे में किसी को कुछ पता नहीं था । कार्ल, अन्ना और हेंस पीटर मेयर के कार्यालय में जा पहुंचे ।

मेयर ने तीनों की बातें ध्यान से सुनीं । फिर कहा—''बच्चो, तुम क्यों परेशान हो रहे हो ? हम तुम्हें इससे भी बड़े बालघर में भेज देंगे । वहां तुम्हें नए-नए साथी मिलेंगे ।''

—''लेकिन हम तो इसी बालघर में श्री पोस्नर के साथ रहना चाहते हैं ।''



—"पोस्नर के बालघर को बंद करने का फैसला हो चुका है। उसे चलाने के लिए पैसा नहीं है।"

तीनों बच्चे उदास मन और भीगी आंखों से लौट आए। उन्होंने पोस्नर को सब कुछ बता दिया। सुनकर वह और भी परेशान हो उठे। लेकिन बालघर को बंद तो करना ही था। इसलिए पोस्नर ने बच्चों से कहा—"सारे सामान को एक जगह इकट्ठा कर, बांधना शुरू कर दो। साथ-साथ कमरों की सफाई का काम भी हो जाएगा।"

बालघर में पंद्रह कमरे थे। इसलिए प्रत्येक बच्चे को एक कमरे की सफाई करनी थी। अन्ना को सबसे पीछे वाले कमरे की झाड़-पोंछ का काम मिला था। कमरा बहुत बड़ा था। काफी दिनों से बंद पड़ा था। सफाई करते-करते उसके हाथ थक गए। सारा शरीर और कपड़े धूल से अट गए। एकाएक उसका पैर फिसल गया। वह दीवार से जा टकराई। चोट तो नहीं आई, पर हैरान जरूर हो गई। धम-धम की आवाज हुई। दीवार ठोस नहीं थी। उसके पीछे खाली जगह थी।

उसने इसका जिक्र हेंस पीटर और कार्ल से किया। वे उत्सुक हो उठे।

अगली रात हुई। बालघर में सब सो गए। हेंस पीटर, अन्ना और कार्ल टार्च तथा कुदाली लेकर उस कमरे में जा पहुंचे। कुदाल की सहायता से उन्होंने दीवार में एक छेद कर दिया। दीवार मोटी नहीं थी, इसलिए सूराख आसानी से हो गया।

हेंस पीटर ने सूराख को इतना बड़ा कर लिया, जिससे अंदर प्रवेश किया जा सके। तीनों बारी-बारी से दीवार के दूसरी तरफ चले गए। वहां कई कुर्सियां एक कतार में रखी थीं। एक ऊंचा चबूतरा दिखाई दिया। उस पर रंगीन परदा लटक रहा था।

"लगता है, जैसे यह किसी थिएटर का हिस्सा है।"—अन्ना बोली। पीटर ने भी उसकी बात का समर्थन किया। वे ऊंचे चबूतरे पर चढ़कर इधर-उधर घूमने लगे। पीछे लटके परदे पर जंगल-पहाड़ के दृश्य बने हुए थे। एक तरफ लकड़ी का बना रथ खड़ा था। अन्ना झट रथ में जा चढ़ी। उसे बहुत मजा आ रहा था।

तीनों बच्चे उस रहस्यमय स्थान में काफी देर तक घूमते रहे। आखिर हेंस ने कहा—"अब हमें चलना चाहिए। अगर ओटो घूमता-फिरता आ गया, तो मुश्किल हो जाएगी।" वे चुपचाप लौट आए।

उस रात अन्ना को सपने में वही मंच दिखाई दिया—वहां खूब उजाला हो रहा था। मंच पर सुंदर कपड़ों में सजी हुई एक लड़की दिखाई दी। वह अन्ना जितनी ही थी।

अगले दिन अन्ना, पीटर और कार्ल ने बालघर के बाकी बच्चों को भी अपनी खोज के बारे में बता दिया। रात हुई, तो पंद्रह बच्चे एक-एक करके उस कमरे में जा पहुंचे। फिर सूराख से होकर गुप्त थिएटर में पहुंच गए। वहां एक तरफ पोशाकें रखी हुई थीं। बच्चों ने वे पोशाकें पहन लीं। फिर वे मंच पर यों ही उछल-कूद करने लगे।

पीटर, अन्ना और कार्ल ने एक योजना बनाई थी। उन्हें उम्मीद थी कि योजना सफल हो जाएगी। पीटर पोस्नर से मिला। उन्हें गुप्त थिएटर के बारे में बताया। कहा—"सर, अब हम अपने बालघर को बंद नहीं होने देंगे। हम उस थिएटर में नाटक दिखाएंगे। लोगों से कहेंगे कि वे टिकट खरीदकर हमारा नाटक देखें।"

पोस्नर भी अन्ना के साथ उस जगह गया। उसे हैरानी थी कि गुप्त थिएटर के बारे में वह स्वयं कुछ भी नहीं जानता था।

अब बच्चों को किसी से कोई डर नहीं था। वे सारा दिन उस थिएटर में नाटक का रिहर्सल करते रहते।

पोस्नर ने स्वयं जाकर मेयर से बात की। उसने भी उत्साह दिखाया। निश्चित दिन शहर के बड़े-बड़े लोग बच्चों का नाटक देखने आ पहुंचे। परदा उठा। नाटक शुरू हुआ। नाटक कुछ अच्छा नहीं रहा, क्योंकि बच्चों को अभिनय का ज्ञान नहीं था।

नाटक चाहे जैसा रहा, पर यह बात सब मान गए

कि अब बालघर को बचाने का रास्ता निकल आया था। यह रास्ता बच्चों ने खोजा था। लेकिन बच्चे दुखी थे। नाटक अच्छा नहीं रहा था, यह उन्हें मालूम था। अन्ना लेटी-लेटी यही सोच रही थी। रात को सब बच्चे सो गए थे, पर उसे नींद नहीं आ रही थी। एकाएक उसने आवाज सुनी—'थिएटर में आओ।' अन्ना चौंककर इधर-उधर देखने लगी। कमरे में बिछी दूसरी चारपाई पर दो लड़कियां गहरी नींद में डूबी थीं। तभी आवाज फिर आई— 'अन्ना, थिएटर में आओ।' और अन्ना के पैर थिएटर की ओर बढ़ चले। कुछ ही देर बाद वह थिएटर वाले कमरे में खड़ी थी। एकाएक मंच के पिछले भाग में हलका-सा उजाला हो गया और वहां एक लड़की खड़ी दिखाई दी। अरे, यह तो वही थी, जो अन्ना को सपने में दिखाई दी थी। वह मुसकरा रही थी। ''तुम यहां कैसे आ गई ? मैंने तुम्हें इससे पहले कभी नहीं देखा था।'' —अन्ना ने कहा।

''मैं तो यहीं रहती हूं। कहीं नहीं जाती।'' —उसने कहा— ''यह थिएटर पिता जी ने मेरे लिए बनवाया था, बहुत पहले की बात है।''

अन्ना अचरज से भर उठी। तभी वह लड़की निकट आ गई। उसने अन्ना का हाथ पकड़ लिया। कहा—''मेरी मृत्यु के बाद पिता जी बहुत निराश हो गए। उन्होंने इस थिएटर को बंद करा दिया। मैं उनसे कहना चाहती थी कि वह थिएटर को बंद न करें, लेकिन मेरी आवाज उन्हें सुनाई नहीं देती थी। वह मुझे देख भी नहीं पाते थे।''

अन्ना चुप खड़ी, सुन रही थी।

''जब तुमने दीवार तोड़कर थिएटर खोज निकाला, तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अब तुम मेरी दोस्त बन गई हो। मैं जानती हूं, तुम क्या चाहती हो। मैं तुम्हारी सहायता करूंगी।'' —इतना कहकर लड़की गायब हो गई। कमरे में अंधेरा छा गया। अन्ना कुछ देर वहीं खड़ी रही। फिर धीरे-धीरे अपने कमरे में लौट आई।

सुबह उसने रात वाली घटना कार्ल और हेंस को बताई। उन्हें भी बहुत आश्चर्य हुआ !''कौन है वह लड़की ? उस थिएटर में कैसे रहती है ? वह हमारी मदद कैसे करेगी ?'' —हेंस पूछता रहा।

बच्चों ने अगले नाटक की तैयारी कर ली। सारे शहर में इस बात की चर्चा थी कि बालघर के बच्चे नाटक खेलने जा रहे हैं। बच्चे जी-जान से रिहर्सल में जुटे हुए थे। निश्चित दिन थिएटर में काफी लोग जमा थे। जिन्हें बैठने का स्थान नहीं मिला, वे पीछे खड़े हो गए।

तभी अन्ना ने मंच के एक कोने में उसी लड़की को खड़ी देखा। उसने अन्ना से कहा—''जब पर्दा उठेगा, तो मैं मंच पर दर्शकों के सामने जाऊंगी। तुम बाद में आना।'' फिर पर्दा उठा। अन्ना और उसके साथी अपलक देखते रहे। वह लड़की तथा और कई बच्चे चमकदार कपड़े पहने मंच पर आ गए। उन्होंने अद्‌भुत नृत्य दिखाया। ऐसा अभिनय किया कि देखने वाले वाह-वाह कर उठे। किसी को कुछ पता न चला और फिर अन्ना, हेंस तथा दूसरे बच्चे भी उनके बीच चले आए।

कमरा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। फिर वह रहस्यमय लड़की जैसे आई थी, उसी तरह अदृश्य हो गई। दर्शक यही समझते रहे कि यह चमत्कार बालघर के बच्चों ने किया है।

मेयर ने घोषणा की—''मैं बालघर को बंद करने का निर्णय वापस लेता हूं। इन अद्‌भुत बच्चों के लिए यही सबसे बड़ा इनाम होगा।'' यह सुनकर अन्ना की आंखों से आंसू बह चले। बाकी बच्चे भी रो रहे थे।

उस शाम सबके जाने के बाद अन्ना थिएटर में दोबारा गई। वहां अंधेरा छाया था। उसने धीरे-से पुकारा—''क्या तुम मेरी आवाज सुन रही हो ! मैं तुम्हें धन्यवाद देने आई हूं। हम जीत गए।''

पर कोई जवाब नहीं मिला। अन्ना कुछ देर खड़ी रही, फिर उदास मन से लौट आई। हां, उस रात सपने में उसने अपनी सहेली को देखा। वह कह रही थी— 'अन्ना, मैं जा रही हूं। अब तुम सब यहां आराम से रहना। मेरा काम पूरा हो गया है।' ●

मन में झांको

—डा. प्रेमशरण शर्मा

बहुत पहले बृज क्षेत्र में एक सघन वन था—मधुवन । उस वन में एक गुफा थी । गुफा में रहते थे एक बाबा । बड़ा ही सौम्य रूप था उनका । चांदी-सी सफेद दाढ़ी-मूंछें । वैसे ही केश । बाबा दिन में कभी बाहर नहीं निकलते थे । दिन छिपने से पहले वह बाहर आते । नित्यकर्म से निवृत हो, वह पास के गांव में भिक्षा के लिए जाते । जो मिल जाता, उसी से भगवान का भोग लगाकर प्रसाद पाते ।

एक साथी था उनका । पता नहीं कब से ! जैसे ही बाबा भिक्षा ले लौटते, एक अंधा उनकी आहट पा पास आ जाता । बाबा बिना कुछ बोले, उसे भी प्रसाद दे देते । इस तरह अंधे का भी पेट भर जाता था ।

काफी समय से ऐसा ही क्रम चला आ रहा था । एक दिन अचानक बाबा चिंता में पड़ गए । नंद ग्राम से बुलावा आया था । एक साधु अपने गुरू का संदेश ले, उन्हें ले जाने आया हुआ था । बाबा चिंता में थे कि मैं चला गया, तो उस अंधे जन कौन देगा ? नंद ग्राम के महात्मा का आग्रह भी वह नहीं टाल सकते थे । किसी प्रकार वह अंधे के भोजन का प्रबंध करके नंद ग्राम चले गए । लेकिन नंद ग्राम में बाबा को अधिक समय लग गया । वह परेशान तो बहुत थे, पर क्या करते !

नंद ग्राम से लौटे, तो उनकी आंखें अंधे को ढूंढ़ रही थीं । इधर-उधर ढूंढ़ा, पर उसका कहीं पता नहीं चला । बाबा और परेशान हो गए । मन में शंकाएं उठने लगीं ।

तभी उन्हें किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी । बाबा दौड़े-दौड़े उस ओर गए । आवाज एक गड्ढे से आ रही थी । डूबते सूर्य की धुंधली रोशनी में बाबा ने देखा—वही अंधा गड्ढे के उथले पानी में पड़ा कराह रहा है । बाबा घुटनों पानी में उतर गए । सहारा देकर अंधे को बाहर लाए । बुरी हालत थी उसकी । सारे वस्त्र भीगे थे । कहीं-कहीं चोट भी लग गई थी । कई दिनों से वह भूखा भी था । बाबा बार-बार उससे क्षमा मांगने लगे—"भैया, अगर मैं तुम्हें छोड़कर न जाता, तो शायद तुम्हारी यह दशा न होती ।" अंधा भी दुखी तो था, लेकिन इसमें बाबा का क्या दोष ?

—"नहीं बाबा, इसमें आपका क्या दोष ? शायद मेरे भाग्य ही में यह दुःख भोगना लिखा था । मेरे कर्म ही ऐसे थे । तभी तो मैं अंधा हो गया । अन्यथा कभी मैं भी आपकी ही तरह खूब दूर तक देख सकता था ।"

बाबा की उत्सुकता बढ़ गई । अंधे को एक ओर बैठाकर पहले उसके वस्त्र निचोड़े । फिर थैले में से कुछ प्रसाद निकालकर अंधे को देते हुए बोले—"लेकिन फिर, यह क्या हो गया ?"

अंधे ने माथे पर हाथ मारकर कहा—"बाबा, मैं बड़ा दुष्टात्मा हूं । कैसे कहूं, मैं यहां पास में स्थित कन्हैयाजी के मंदिर का पुजारी था । एक बार एक गरीब ग्वाला बड़ा-सा लड्डू भगवान कृष्ण के चरणों में चढ़ा गया । लड्डू को देखकर मुझसे नहीं रहा गया । बिना भोग लगाए ही मैंने वह लड्डू खा लिया । वह गरीब ग्वाला, पता नहीं कैसे, अपने बच्चों का पेट काटकर भगवान कृष्ण को अर्पण करने के लिए वह लड्डू लाया होगा । मैंने वह लड्डू खा तो लिया, लेकिन मुझे लगता रहा कि मैंने पाप किया है । इसी पाप बोध



के कारण धीरे-धीरे मेरी आंखों की रोशनी कम होती गई। एक दिन मैं अंधा हो गया। लोगों को पता चला, तो उन्होंने मुझे मारकर मंदिर से निकाल दिया और मैं भटकता हुआ आपकी शरण में आ गया।''

बाबा उसकी दुःख भरी कहानी सुनकर उदास हो गए। उन्होंने अंधे को तसल्ली दी—''काम तो तुमने अच्छा नहीं किया। लेकिन अब उसका प्रायश्चित करो।'' फिर कुछ सोचकर बोले—''एक बात तो बताओ। तुमने तो सुना होगा कि कृष्ण आज भी इस बृज भूमि पर आते हैं। क्या तुम मुझे उनके दर्शन करा सकते हो?''

''नहीं बाबा।''—अंधे ने हाथ जोड़ते हुए कहा—''मेरे अंदर इतनी शक्ति कहां है?''

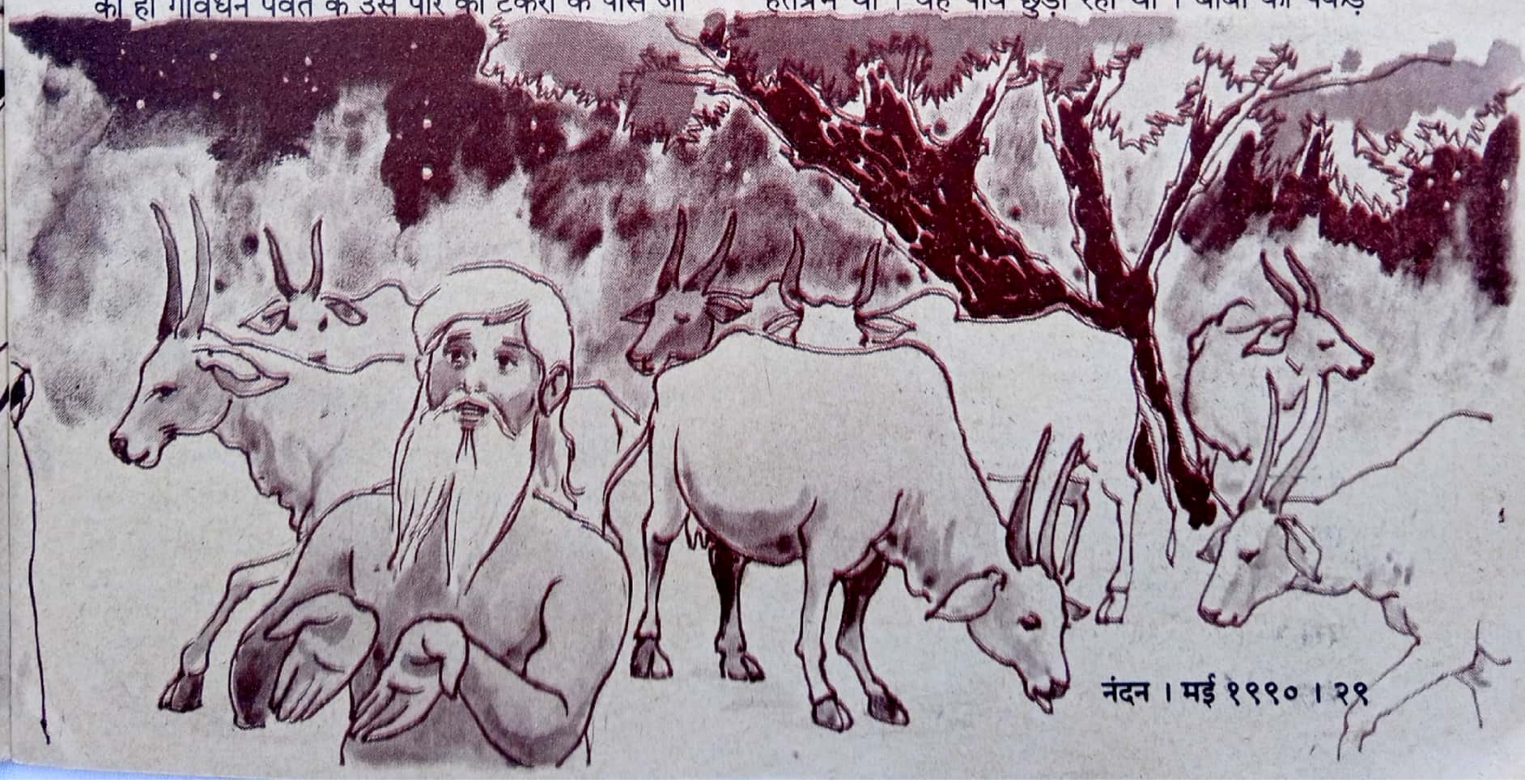
''तो मुझे यह तो बता सकते हो कि उनके दर्शन कैसे हो सकते हैं?''—बाबा ने उतावलेपन से पूछा।

—''हां, मैं यह बता सकता हूं। ज्ञानी कहते हैं कि यहां से थोड़ी दूर गोवर्धन पर्वत है। उसके पीछे की ओर एक टेकरी के पास गोधूलि बेला में गौओं का झुंड निकलता है। उनके साथ ग्वाले होते हैं। उन्हीं ग्वालों के बीच श्रीकृष्ण भी होते हैं। जो ग्वाला सबसे बाद में आए, समझ लेना वह ही सांवरिया हैं।''

बाबा ने सुना, तो आनंद से नाच उठे। दोपहर को ही गोवर्धन पर्वत के उस पार की टेकरी के पास जा बैठे। दिन ढलने की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन सूर्य देवता आगे बढ़ने का जैसे नाम ही नहीं ले रहे थे। बाबा को वे पल युगों के समान लग रहे थे। पर करते क्या? उन्हें तो दिन ढले भगवान कृष्ण से मिलना था। जैसे-जैसे दिन ढलने को आ रहा था, बाबा की सांस जैसे रुकने को आ रही थी। वह सोच रहे थे—'मैं बिहारीजी से क्या बात करूंगा? कैसे उनकी वंदना करूंगा?' तभी दूर से धूल उठती दिखाई दी। बाबा समझ गए, गाएं आ रही हैं।

जैसे-जैसे गौओं के झुंड पास आ रहे थे, बाबा का मन खुशी से आकाश में उड़ने लगा था। अब गाएं बाबा के सामने से जा रही थीं। एक-दो ग्वाले भी आते दिखाई दिए।

बाबा देख रहे थे। पहले कुछ गाएं आईं, फिर एक ग्वाला आया। फिर कुछ गाएं आतीं, बीच में फिर एक ग्वाला दिखाई देता। अंत में गौओं का एक झुंड आया और उनके पीछे एक ग्वाला। अपने आप में सिमटा-सा, सकुचाता-सा। बाबा की निगाहें उसी ग्वाले पर जम गईं। वह सबसे अलग तरह का दिखाई दे रहा था। बाबा समझ गए—'यह ही बांकेबिहारी हैं।' बस, उनमें बिजली की-सी फुर्ती भर गई। दौड़कर उन्होंने ग्वाले के चरण पकड़ लिए। ग्वाला हतप्रभ था। वह पांव छुड़ा रहा था। बाबा की पकड़



और सख्त होती जाती थी।

—"अरे-अरे. . .। क्या करते हो बाबा ! मेरे पैर छोड़ो। अरे, तुम्हें क्या हो गया है ? मेरे पैर क्यों पकड़ रहे हो ? मैं गिर जाऊंगा, छोड़ो मुझे।"

लेकिन बाबा कैसे छोड़ते ? वह ग्वाले के चरणों पर अपना माथा रगड़ने लगे। भक्त और भगवान दोनों पुलकित हो रहे थे। ग्वाले के रूप में भगवान अपने को बचाना चाह रहे थे, लेकिन पीछा छुड़ाना भी नहीं चाहते थे। बार-बार कह रहे थे—"अरे बाबा, साधु होकर एक ग्वाले के पैर पकड़ रहे हो ? छोड़ो मुझे, जाने दो।"

"दया करो दयामय, दया करो।"—कहकर बाबा फूट-फूटकर रोने लगे। भगवान भक्त की भावना को समझ रहे थे, लेकिन अनजान बनकर कहे जा रहे थे—"बाबा, क्या पागल हो गए हो ? देखो, मुझे जाने दो। देर हो गई, तो मेरी मइया मुझे मारेगी।"

बाबा ने उनके चरण और कसकर पकड़ लिए—"नहीं प्रभु, अब और छल मत करो। छल-कपट छोड़कर अपने दर्शन दो मेरे सांवरे।"

—"बाबा, मुझे छोड़ दो, तुम्हें माखन-मिसरी दूंगा, जो कहोगे वही दूंगा। पर मुझे छोड़ दो।"

बहुत कोशिश की भगवान ने भोले भक्त को बहलाने की, पर बाबा टस से मस नहीं हुए। आधी रात बीत गई। ग्वाले ने थककर कहा—"आखिर तुम चाहते क्या हो ? मांगो कुछ।"

बाबा नतमस्तक हो गए। बोले—"अगर आप देना ही चाहते हैं, तो मेरे साथी को नेत्रदान दो प्रभु।"

ग्वाले ने कहीं से एक फूल तोड़कर बाबा को दिया—"लो, इसे बार-बार पानी में भिगोकर अंधे की आंखों से लगाना। धीरे-धीरे उसकी आंखों की रोशनी लौट आएगी।"

बाबा अपने साथी की आंखों की रोशनी लौटाने की आशा में दर्शनों की बात भूल गए। फूल लेकर दौड़े आए। कई दिन अंधे की आंखों में फूल का पानी लगाया। धीरे-धीरे उसकी आंखों की रोशनी लौट आई। अब वे दोनों ही बड़े प्रसन्न थे। ●



आधा से एक

—सरला अग्रवाल

धानपुर गांव में रहता था किसना का परिवार। बेहद गरीब था वह। उसके तीन बच्चे थे। दो लड़कियां और एक लड़का। किसना को दमे की बीमारी थी। दो-तीन महीने से तो वह बराबर बीमार चल रहा था। पूरी-पूरी रात खांसते बीतती, सांस फूला रहता। पहले वैद्य का इलाज कराया, तो उसमें सारी जमा-पूंजी खर्च हो गई। फिर बुखार रहने लगा। इसीलिए वह काम पर भी नहीं जा पाता था। पत्नी रामदेई घरों में गेहूं आदि अनाज बीन-चुगकर कुछ पैसे ले आती थी, उसी से गुजारा चलता था गृहस्थी का

कुछ दिन से गांव में आटा पीसने की एक चक्की लग गई थी लाला मुरलीधर की। अनाज चक्की चली, तो गांव की औरतों ने हाथ की चक्की से पीसना बंद कर दिया। रामदेई हाथ की चक्की से गेहूं, जौ, बाजरा व मक्का का आटा पीसकर भी अच्छी आमदनी कर लेती थी। अब किसना की बीमारी के खर्च तथा बेकारी ने रामदेई को लाचार-सा कर दिया था। एक दिन वह बेटे ओमी को लाला जी के पास ले गई। उसने अपनी सारी व्यथा उन्हें रो-रोकर कह सुनाई। रामदेई के हाल पर लाला मुरलीधर को दया आ गई। उन्होंने ओमी को चक्की के काम के लिए रख लिया। सारे दिन के काम की मजूरी संध्या समय रोज मिलने लगी। आधा किलो आटा और घर में आने से रामदेई को राहत तो मिली, पर उतने में इतने पेटों को दो जून की रोटी नहीं मिल पाती थी। किसना को फिर दुःख भी सालने लगा कि लड़के की पढ़ाई छुड़ाकर काम पर लगा दिया।

जाड़े के दिनों की बात है। शाम का समय था। चक्की घर से लोग अपना-अपना आटा पिसाकर घर चले गए थे। ओमी भी अपनी मजदूरी का आधा किलो आटा अंगोछे में बांधकर घर जाने की तैयारी कर रहा था। तभी वह कुछ सोच में पड़ गया। बाप तो कई दिनों से मौत की बाट जोह रहा था। मां भी अब पिछले दस-बारह दिनों से खाट पर पड़ी है। इस आधा किलो आटे से ही अब किसी तरह दोनों जून घर का काम चलता है। सब आधा पेट भूखा रहते हैं। बेचारी अंधी दादी ने तो मासूम बच्चों की खातिर, दो दिन से एक टुकड़ा भी मुंह में नहीं डाला।

ओमी ने देखा, आटे की दो-तीन बोरियां तो पूरी-पूरी भरी सामने रखी हैं। 'इनमें से यदि वह दो मुट्ठी आटा ही और ले ले, तो एक वक्त तो सबके पेट में एक-एक दो-दो रोटियां पड़ ही जाएंगी। पर.... यह चोरी होगी। और चोरी करना पाप है।' —वह सोचने लगा। फिर उसके मन ने कहा—'पर अंधी बूढ़ी दादी और भोली-भाली छोटी-छोटी बहिनों को भूख से कलपते देखना क्या पाप नहीं ?'

ओमी बोरी से आटा निकालने को बार-बार हाथ आगे बढ़ाता। फिर पीछे खींच लेता। पांच-सात मिनट तक उसके मन व मस्तिष्क में यह लड़ाई चलती रही। अंत में भूख से तड़पती छोटी बहनों व अंधी दादी के करुण दृश्य ने पाप की कल्पना को दूर भगा दिया। ओमी ने दो मुट्ठी आटा और निकालकर अपने अंगोछे में बांध लिया। वह अंधेरे में चक्की घर से निकलकर अपने घर दौड़ता चला गया।

उस आटे की रोटियां भाई- बहन ने मिलकर बनाई। सबके खाली पेटों में आज कई दिनों के बाद तीन-तीन रोटियां पड़ गईं। दोनों छोटी बच्चियां खुश थीं, दौड़कर मां से लिपट गईं। बोली—"मां, ओमी भइया आज और दिनों से कुछ ज्यादा आटा लाया। हम सबने खूब पेट भर के खाया।"

किसना ने ओमी के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा—"बेटा ओमी, क्या मुरली दादा ने तेरी मजूरी कुछ बढ़ा दी है ?"

"नहीं काका, मैं ही आज दो मुट्ठी आटा ज्यादा ले आया था।" —ओमी ने डरते-डरते कहा।

—"तो क्या चुराकर ?"

—"हां, काका ! उन सबकी आंख बचाकर। बहनों और दादी का भूखों मरना मुझसे देखा नहीं गया।"

—"पर बेटा, तूने यह अच्छा नहीं किया। दुनिया की नजरों में हम गरीब सही, पर ईमान-धरम में गरीब थोड़े ही हैं। कल जाकर मुरली दादा के सामने अपनी चोरी कबूल लेना। और हां, इस दो मुट्ठी आटे के बदले अपनी दिन भर की मजदूरी उनके पैरों पर रख देना। आगे फिर ऐसा खोटा काम कभी मत करना।" फिर किसना ओमी को अपने गले लगाकर फफक-फफककर रो पड़ा।

"लाला जी, आज मैं आटा नहीं लूंगा, मुझसे कसूर हो गया है।" —दिन भर के काम के बाद मजूरी लेने के समय ओमी ने मुरलीधर जी से कहा।

—"क्यों रे ओमी ! तू अपनी मजूरी बढ़ाना चाहता है क्या ?"

"नहीं, कल मैं चक्की घर से दो मुट्ठी आटा चुराकर ले गया था। अपनी अंधी दादी व छोटी बहनों का भूख से तड़पना मुझसे बर्दाश्त नहीं हो पा रहा था।" —कहकर ओमी सिसकने लगा।

लाला जी ने ओमी को गले से लगा लिया। बोले "—बेटा, तूने आज मुझे पाप के रास्ते से हटा लिया है। तूने मेरा बड़ा उपकार किया।"

उस दिन से लाला जी ने ओमी की मजदूरी का आटा आधा किलो से बढ़ाकर एक किलो कर दिया। ●



पंडितजी

—राजे राघव

एक विद्वान-सा दीखने वाला यात्री गंगा तट पर आया। कंधे पर झोला लटका था। उसमें रेशमी कपड़े में बंधी कुछ पुस्तकें थीं। माथे पर चंदन का गहरा लेप लगा था। गले में रेशमी दुपट्टा लटक रहा था। यात्री गंगा तट पर इधर-उधर घूमने लगा। बार-बार दूसरे तट की ओर देख रहा था। शायद उसे गंगा पार जाना था।

तभी एक नाव तट पर आकर लगी। मल्लाह लंगर बांधकर सुस्ताने की मुद्रा में नाव के एक कोने में पैर फैलाकर बैठ गया। नाव छोटी ही थी। यात्री तुरंत नाव की ओर लपका। पास जाकर मल्लाह से बोला—"मुझे उस पार जाना है। क्या ले चलोगे ?"

"क्यों नहीं, यही काम मैं करता हूं। आओ बैठो। दो-चार यात्री और आ जाएं, तो चल दूंगा।" —मल्लाह बोला।

"—मगर मुझे जल्दी है। उस पार एक साधु का बड़ा आश्रम है। वहां एक यज्ञ हो रहा है। बड़े-बड़े विद्वान उसमें भाग ले रहे हैं। मुझे भी बुलाया है। मैं काशी का बड़ा पंडित हूं।"

मल्लाह उसी तरह बैठा रहा। यात्री के कथन का उस पर जैसे कोई असर नहीं हुआ। यात्री ने कई बार अपनी जल्दी जाने की मजबूरी बताई, तो मल्लाह बोला—"आपको यज्ञ में दक्षिणा मिलेगी, इसलिए जल्दी पहुंचना जरूरी है, मगर अकेले यात्री को ले जाने में मुझे तो नुकसान है।"

आखिर वह यात्री चार यात्रियों का भाड़ा देने पर राजी हो गया। मल्लाह उसे बैठाकर नाव खेने लगा। नाव तट से खिसकी ही थी कि यात्री मल्लाह से बोला—"तुम नक्षत्र विद्या जानते हो ?"

"यह नाम मैंने पहली बार सुना है !" —मल्लाह ने कहा।

यात्री मुसकराया—"तब तो तुम्हारा आधा जीवन बेकार ही गया।" —अपनी विद्वता का रोब जमाते हुए यात्री बोला। मल्लाह चुप रहा। नाव बढ़ती रही।

कुछ दूर और पहुंचे। यात्री ने मल्लाह से फिर पूछा—"तुम वृक्ष विज्ञान तो जरूर जानते होगे ? उधर देखो, उस पार कैसे हरे-हरे वृक्ष नजर आ रहे हैं।"

"बाबू जी, मैं ठहरा अनपढ़ गंवार। कोई विज्ञान नहीं जानता।" —मल्लाह ने कहा।

यह सुनकर यात्री बोला—"तब तो भइया तीन चौथाई जीवन ही बेकार गया तुम्हारा।"

तभी तेज आंधी चलने लगी। नाव अब मंझधार में थी। एकाएक लहरों का एक तेज झोंका आया। नाव डगमगाई। यात्री हड़बड़ाया, तो पुस्तकों का थैला उसके हाथ से उछलकर पानी में जा गिरा।

"अरे, रे . . . मेरी अमूल्य पुस्तकें . . . वे डूब जाएंगी। उन्हें निकाल लो।" —यात्री चिल्लाया।

यात्री की घबराहट देख, मल्लाह बोला—"हां बाबूजी, आपका ज्ञान डूब रहा है। उसे बचा लीजिए। अगर यह डूब गया, तो आपका पूरा ही जीवन बेकार हो जाएगा।"

"मैं तैरना नहीं जानता।" —यात्री दयनीय स्वर में बोला।

इस पर मल्लाह उफनती लहरों में कूद गया। पुस्तकों का थैला निकाल लाया। गीली पुस्तकें यात्री को पकड़ा दीं। बोला—"पंडित जी, यह लो अपना ज्ञान।" यह सुनकर यात्री का सिर शर्म से झुक गया। वह सोचने लगा—'सचमुच ही मेरा ज्ञान अधूरा है।' ●



हंस गायब



एक था भरत सरोवर ।
सुंदर कमल खिलते थे । दूर-दूर से हंस आते ।
राजा विक्रम को वहां
आना अच्छा लगता
कितना सुंदर दृश्य !
एक दिन राजा आए, तो विचित्र घटना
हुई । एकाएक सारे हंस उड़ गए ।
यह क्या !
फिर उड़ गए
अब राजा जब भी आते हंस उड़ जाते ।
विक्रम ने मंत्री से रहस्य का पता लगाने को कहा
ऐसा क्यों ?
आप पता करें
जो आज्ञा
मंत्री ने जाकर देखा, सरोवर में हंस तैर रहे हैं ।
!!
उसने लौटकर राजा को खबर दी ।
अन्नदाता, हंस तो वहां हैं
मैं जाकर
देखता हूं


राजा स्वयं खोज में निकले
अरे ! फिर चले गए
घायल हंस !
यह किसने किया
विक्रम ने सरोवर के आसपास घूमने वाले शिकारियों को पकड़ने के आदेश दिए।
चलो
तुम बंदी हो
बंदी शिकारी राजा के सामने लाए गए।
सरोवर के हंस पकड़ना मना है
अन्नदाता, पेट की खातिर...
राजा ने शिकारियों को नौकरी दे दी। सरोवर के आसपास सैनिक पहरा देने लगे।
शिकार करना मना है


इसके बाद राजा विक्रम भरत सरोवर आए, तो देखा...
आज हंस उड़े नहीं ! चमत्कार
तभी दो हंस तैरते हुए राजा के निकट आने लगे
महाराज, हम आपसे इसलिए छिपे थे
किसलिए ?
हंसों ने बताया, शिकारी उन्हें पकड़ते थे। बचाने वाला कोई न था इसीलिए...
आप ही बचा सकते थे हमें
आपका ध्यान खींचने के लिए ही...
राजा विक्रम की उलझन दूर हो गई। वह जान गए थे कि उनके पहुंचते ही हंस क्यों उड़ जाते थे।
तुम सुंदर ही नहीं, चतुर भी हो
आप धन्य हैं।

रंग चाल

चार रंग की चार गोटियां, चार खिलाड़ी और एक पासा। हर खिलाड़ी की एक-एक गोटी, एक-एक घर। घर से गोटी ६ आने पर निकलेगी। हर गोटी का अपना रास्ता है। पहुंचना है बीच में बने मंदिर में। रास्ता रंग-रंग के खानों से बना है। हर रंग के अंक नीचे लिखे हैं। पासा फेंकने पर, खाने के रंग का अंक आने पर ही गोटी उतने अंक आगे चलेगी। जिस खाने में देवताओं के चित्र हैं, उन खानों में आने पर गोटी बिना किसी बंदिश के आगे बढ़ सकती है। जिसकी गोटी सबसे पहले मंदिर पहुंचेगी, प्रथम माना जाएगा।





हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २६, अंक ७, नई दिल्ली; मई '९० चैत्र-वैशाख, शक सं. १९१२

बुढ़िया न होगी हमारी गुड़िया

बर्बी की उम्र है ३१ वर्ष। कद—साढ़े ग्यारह इंच। दुनिया कितनी बदल गई, पर १९५९ में जन्मी बर्बी आज भी वैसी है।

वह है एक सुंदर-सलोनी गुड़िया। इसे बनाया था अमरीका की श्रीमती हेंडलर ने। उन्होंने अपनी बेटी बारबरा के नाम पर उसका नाम बर्बी रखा था। पहले पहल वह न्यूयार्क विश्व खिलौना प्रदर्शनी में रखी गई। जिसने उसे देखा, वही दीवाना हो गया।

आज १०० देशों में इस गुड़िया का निर्माण किया जाता है। तीन साल पहले ही उस पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई जो खूब बिकी।

बर्बी अकेली कब तक रहती! उसका साथ देने के लिए 'केन' नामक गुड्डा बनाया गया। फिर तो और भी कई खिलौने इस टोली में शामिल हो गए। एक दिन धूमधाम से बर्बी और केन का विवाह कर दिया गया। हां, अब वह घर-परिवार वाली बन गई है।

आज कई देशों में बर्बी क्लब चल रहे हैं। हर वर्ष 'बर्बी विश्व सम्मेलन' किया जाता है। कई कलाकारों ने इस गुड़िया के सुंदर-सुंदर चित्र भी बनाए हैं।

सच—बुढ़िया न होगी हमारी गुड़िया।

लगातार पांचवीं बार

हरिद्वार। भारत हेवी इलेक्ट्रीकल्स लि. (भेल) को लगातार पांचवीं बार 'श्रम श्री' व 'श्रम देवी' पुरस्कार मिला है। प्रधानमंत्री की ओर से दिए जाने वाला यह पुरस्कार मिस्त्री एम.जे. आजम और श्रीमती भगवती देवी शाक्य को मिला है। इसमें बीस-बीस हजार रुपए और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

रूस में रामनवमी

मास्को। सोवियत संघ में पहली बार रामनवमी धूमधाम से मनाई गई। भव्य समारोह में सोवियत-भारत मैत्री समाज के उपाध्यक्ष गेन्नादी पेचनिकोव ने कहा कि हमारे देश में रामायण का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। श्री पेचनिकोव सोवियत रामलीला में बीस बरस तक राम का सफल अभिनय करते रहे हैं।

जेल अस्पताल

जालंधर। एशिया का सबसे पहला जेल अस्पताल यहां बनाया गया है। इसमें पचीस बिस्तर हैं। इसके बनने पर बीस लाख रुपए खर्च हुए।

'खेल गीत' को पुरस्कार

नई दिल्ली। हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने जयप्रकाश भारती की पुस्तक 'खेल गीत' पुरस्कृत की है। पुस्तक में खेल-खेल में गीत और गीत-गीत में खेल तथा पहेलियां हैं। श्री भारती ने ये शिशु गीत नए ढंग से लिखे हैं। सभी पृष्ठों पर बहुरंगे चित्र हैं। पुस्तक ब्रजवासी प्रिंटर्स, ई-४६/११, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली—२० ने छापी है।

लकड़ी का हेलीकाप्टर

जमशेदपुर। भारत ने पूरी तरह लकड़ी से बना हेलीकाप्टर बनाया है। यदि इसकी उड़ानें सफल रहीं, तो १९९३ से इसका निर्माण शुरू कर दिया जाएगा। सेना में भी इसका उपयोग किया जा सकेगा।

चाय के शौकीन

लंदन। अभी तक ब्रिटेन वाले सबसे अधिक चाय पीने वाले माने जाते हैं। लेकिन अब सोवियत संघ ने उन्हें पीछे छोड़ दिया है। सोवियत संघ में सबसे ज्यादा चाय आयात की जाती है।

बोलते ही टाइप

शिकागो। अमरीका में नया टाइपराइटर बनाया गया है। आप बोलेंगे और यह टाइप करता जाएगा। इसमें कंप्यूटर लगा है। इसकी कीमत नौ हजार डालर है।

पुराना बांध

काहिरा। नील नदी के पास लगभग पांच हजार वर्ष पुराना बांध मिला है। यह १३० मीटर लम्बा, १०० मीटर चौड़ा और १६ मीटर ऊंचा है। इसे दुनिया का सबसे पुराना बांध माना जा रहा है।

दोगुने चूहे

स्टाकहोम। यहां चूहों के खिलाफ सरकार और लोगों की मदद से अभियान छेड़ा गया है। अकेली राजधानी स्टाकहोम में चूहों की संख्या आदमियों से दुगुनी हो गई है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

सफलता की पहली सीढ़ी चिंताओं से दूर होना है। —चाणक्य

चिंउ चिंउ चिड़िया

कई घरों में कागज के फूल सजे रहते हैं। पर इन दिनों प्रकृति भी खूब फूल सजाती है। बाग-बगीचों में, जहां देखें फूल-ही फूल। तरह-तरह के रंग, तरह-तरह की खुशबू। इस सुंदरता को देखने के लिए घर से बाहर निकलना होगा।

फूलों, पेड़ों या पक्षियों को निहारने का आनंद अनोखा है। भारत के सालिम अली ने दुनिया भर में नाम कमाया। वह पक्षियों को ही घंटों देखा करते थे। प्रकृति तो अपना खजाना खोले रहती है। हममें से बहुत-से ऐसे हैं, जो आंखें होने पर भी उसे देखते नहीं। लहलहाती फसल, खिले फूल या चिंउ-चिंउ करती चिड़ियां—ये सब हमें बुलाया करते हैं।

नौकरियों में बराबरी

सिओल। दक्षिण कोरिया की चार कम्पनियों पर जुर्माना किया गया है। इन कम्पनियों ने नौकरियों के विज्ञापन में लिखा था—'सिर्फ आदमियों के लिए।' एक कालेज की छात्राओं ने जब यह विज्ञापन देखा, तो इन कम्पनियों पर मुकदमा ठोक दिया। छात्राओं का कहना था कि इस विज्ञापन से लड़के-लड़कियों में भेद होता है। छात्राएं मुकदमा जीत गईं।

सबसे सस्ता और महंगा

नागपुर। दुनिया के सबसे अमीर देश अमरीका में पेट्रोल चार रुपए लि. मिलता है। भारत की गिनती गरीब देशों में होती है, लेकिन नागपुर शहर में पेट्रोल सबसे महंगा बिक रहा है।

पेड़ काटा जेल गया

सतारा। पहली बार किसी को पेड़ काटने के लिए चार माह की जेल और पांच सौ रुपए का जुर्माना किया गया है। जिन चार लोगों को पेड़ काटते पकड़ा गया था, उन सभी को यह सजा मिलेगी।

एक नाटक : सात हजार शो

नई दिल्ली। एक नाटक लगातार पचीस वर्षों से खेला जा रहा है। चालीस देशों के करोड़ों लोग इसे देख चुके हैं। अब तक सात हजार शो हो चुके हैं। नाटक का नाम है—'अदरक के पंजे।' जिन देशों में यह नाटक खेला गया है, वहां की भाषा में कंप्यूटर की मदद से इसका अनुवाद किया गया है। इसके कर्ता-धर्ता बब्बन खां नाटक के दस हजार शो करना चाहते हैं।

दुनिया की सैर

कलकत्ता। विष्णुपुर का जयंत मंडल गत सोलह वर्षों से साइकिल पर दुनिया की यात्रा कर रहा है। वह अब तक १३९ देशों में जा चुका है। उसकी साइकिल अब तक ३ लाख ८४ हजार कि.मी. यात्रा कर चुकी है। १६४ टायर बदले जा चुके हैं। वह पोप, राजकुमार चार्ल्स, रीगन तथा विश्व की बहुत-सी हस्तियों से मिल चुका है। अपने अनुभवों पर वह बड़ी किताब लिख रहा है।



जाने-माने उद्योगपति तथा प्रसिद्ध समाजसेवी श्री कृष्णकुमार बिरला : दूसरी बार राज्यसभा के सदस्य निर्विरोध चुने गए। हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह के चेयरमैन श्री बिरला की शुरू से 'नंदन' में रुचि रही है। पिछले वर्षों में संसद में दिए गए उनके भाषण बहुत सराहे गए हैं। सामाजिक बुराइयां मिटाने पर वह जोर देते हैं। उद्योग, वाणिज्य, खेल तथा शिक्षा की अनेक संस्थाओं के वह अध्यक्ष हैं।

मेरी धूप

तोक्यो। जापान में बहुमंजिली इमारतों के कारण बहुत-से घरों में धूप नहीं पहुंच पाती। जिनके घरों में धूप नहीं पहुंचती, उनका कहना है कि धूप पर सबका बराबर का हक है। इसका हल खोजा गया है। ऊंची इमारतें बनवाने वाले अपनी छतों पर बड़े-बड़े शीशे लगवाते हैं। ये शीशे धूप को परावर्तित करके उन घरों में भेजते हैं, जहां धूप नहीं पहुंचती है।

खिलौना बैंक

भोपाल। जिन बच्चों को खिलौने नहीं मिलते, उनके लिए खिलौना बैंक बनाए गए हैं। मध्य प्रदेश के खिलौना बैंकों में अब तक ग्यारह हजार सात सौ खिलौने जमा हो चुके हैं। खिलौना बैंक विदिशा, बैतूल, दुर्ग, दमोह, गुना, छिंदवाड़ा और राजनांद गांव जिलों में खोले गए हैं।

कुल्हड़ में चाय

नई दिल्ली। अब रेल यात्रियों को प्लास्टिक से बने गिलास में नहीं, कुल्हड़ में चाय मिला करेगी। कुल्हड़ इन गिलासों से सस्ते मिलेंगे। इससे एक लाख कुम्हारों को रोजगार भी मिलेगा।

पेड़ पर चीता

बम्बई। एक मादा चीता जंगल में आम के पेड़ पर बैठी रहती थी। जो भी नीचे से गुजरता, उस पर छलांग लगा देती। एक दूसरा चीता कहीं से एक फैक्ट्री में आ पहुंचा। इन दोनों को पकड़ा गया।

छत पर बाग

नई दिल्ली। छोटी-सी छत और वहां गमलों में लगे तीन सौ किस्म के फूल। यही नहीं, गमले में लहलहाती अंगूर की बेल—यह है श्री मदन गोपाल कोहली का बाग। फूलों के कारण श्री कोहली नेपाल की मुफ़्त सैर कर चुके हैं।

मूर्तियों की दुर्दशा

कोटा। यहां के राजकीय संग्रहालय में बिना किसी देखभाल के सैकड़ों प्रतिमाएं नष्ट हो रही हैं। गत तीस वर्षों से ये प्रतिमाएं किसी सुरक्षित स्थान पर रखे जाने का इंतजार कर रही हैं। कोटा ताप बिजली घर से निकलने वाले धुएं और राख ने इन खूबसूरत प्रतिमाओं पर कालिख पोत दी है।

नींद की कमी

वाशिंगटन। अमरीका में लाखों करोड़ों लोग बहुत कम सो पाते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। अमरीकी सप्ताह भर पूरी नींद नहीं लेते, इसलिए दफ़्तरों में भी कम काम कर पाते हैं।

पहले पेड़ लगाओ

नई दिल्ली। वन एवं पर्यावरण मंत्री श्रीमती मेनका गांधी ने अपने को सम्मेलन में बुलाने वालों पर शर्त लगाई है। उनका कहना है कि उन्हें बुलाने से पहले वृक्ष लगाए जाएं। नालियों की सफाई की जाए और मिट्टी को कटने से रोकने का प्रबंध किया जाए। जब ये काम उस इलाके में हो जाएंगे, तब ही वह वहां जाएंगी।

यह भी हुआ

पुणे। मिलिंद देशमुख दूध से भरी बोतल सिर पर रखकर पैंसठ कि. मी. चला। चलने से पहले अच्छी तरह जांचा गया कि कहीं बोतल चिपकी या बंधी हुई तो नहीं है। मिलिंद ने इस पूरी यात्रा में एक बार भी बोतल को छुआ तक नहीं। इस तरह बोतल सिर पर रखकर चलने का यह एक रिकार्ड है।

नए रिकार्ड

नई दिल्ली। श्री टी. वी. एस. सेठी जीवन बीमा निगम में हैं। उन्होंने १९८६-८७ में सवा करोड़ रुपए के बीमे किए। इस वर्ष वह एक करोड़ पचहत्तर लाख रुपए के बीमे कर चुके थे। उन्होंने सिर्फ भारत में रहने वालों के ही नहीं आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, अमरीका आदि देशों में बसे भारतीयों के बीमे भी किए हैं। वह इस वर्ष अपना रिकार्ड तोड़ना चाहते हैं।

कुदरत की करामात

डेटरायट (अमरीका)। एक लड़की तेजी से कार चला रही थी। कार पेड़ से टकराई। दरवाजा खुला और युवती पचास फुट नीचे बने मकान की छत पर जा गिरी। छत लकड़ी की बनी थी। युवती के गिरते ही टूट गई। वहां से वह फ्रिज पर गिरी। इतनी जगह गिरने पर भी युवती को ज्यादा चोट नहीं लगी।

नन्हे समाचार

☐ दिल्ली चिड़ियाघर में बम्बई से एक चिम्पांजी लाया गया है जो पहले सर्कस में था। वह दर्शकों का खूब मनोरंजन करता है।

☐ दिल्ली की गुलाब प्रदर्शनी में इस बार १२ वर्ष से कम उम्र के बच्चों द्वारा उगाए गए फूल भी रखे गए।

☐ स्विट्जरलैंड में ओलम्पिक खेलों का संग्रहालय बनाया जा रहा है।

☐ कनाडा के टोरेंटो शहर में राय एंडरसन नामक व्यक्ति ने पांच मंजिली एक इमारत की छत से २१ फीट दूर दूसरे भवन की छत पर छलांग लगाकर, एक नया रिकार्ड बना दिया।

☐ सोवियत संघ के जुड़वां व्यक्तियों का प्रथम सम्मेलन पिछले दिनों मास्को में हुआ। उसमें देश के कोने-कोने से जुड़वां व्यक्ति आए थे।

☐ जम्मू-कश्मीर के गांव में एक चमकीली उड़न तश्तरी देखने के समाचार मिले हैं।

☐ पिछले दो वर्षों में अवैध शिकार के कारण प. बंगाल में गेंडों की संख्या काफी कम हो गई है।

☐ देश में मजूर बच्चों की संख्या है—एक करोड़, सत्तर लाख।

☐ रूमानिया के नगर केस्सा माइका में धरती का रंग काला हो गया है, पेड़ों के पत्ते काले पड़ गए हैं। यह हुआ है दो कारखानों की चिमनियों से निकलने वाली कालिख से। इन कारखानों को अब बंद कर दिया गया है।

☐ बिहार के पश्चिमी चम्पारण जिले में राज्य का दूसरा बाघ अभय वन बनाया जा रहा है। पहला पालामऊ में है।

☐ एक अजगर ने कुत्ते के तीन पिल्लों को निगल लिया। तभी कुत्ते के मालिक ने अजगर के मुंह से कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी। उसने अजगर को दबाया, तो उसने पिल्लों को उगल दिया। एक पिल्ला जीवित था—वही भौंक रहा था।

सचित्र समाचार



गोताखोरों को गहराई में हाथ-पैर चलाने में आसानी रहे इसके लिए पश्चिम जर्मनी में नई पोशाक बनाई गई है।





हिन्दुस्तान टाइम्स की कार्टून प्रतियोगिता : बच्चों ने ये कार्टून पसंद किए।



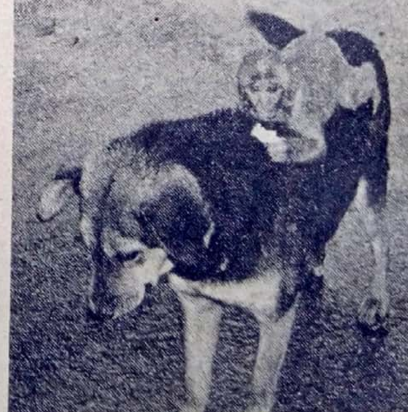
जाने-माने साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर को इस वर्ष हिन्दी अकादमी ने शलाका पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार में इक्यावन हजार रुपए और प्रशस्ति पत्र दिया गया है।



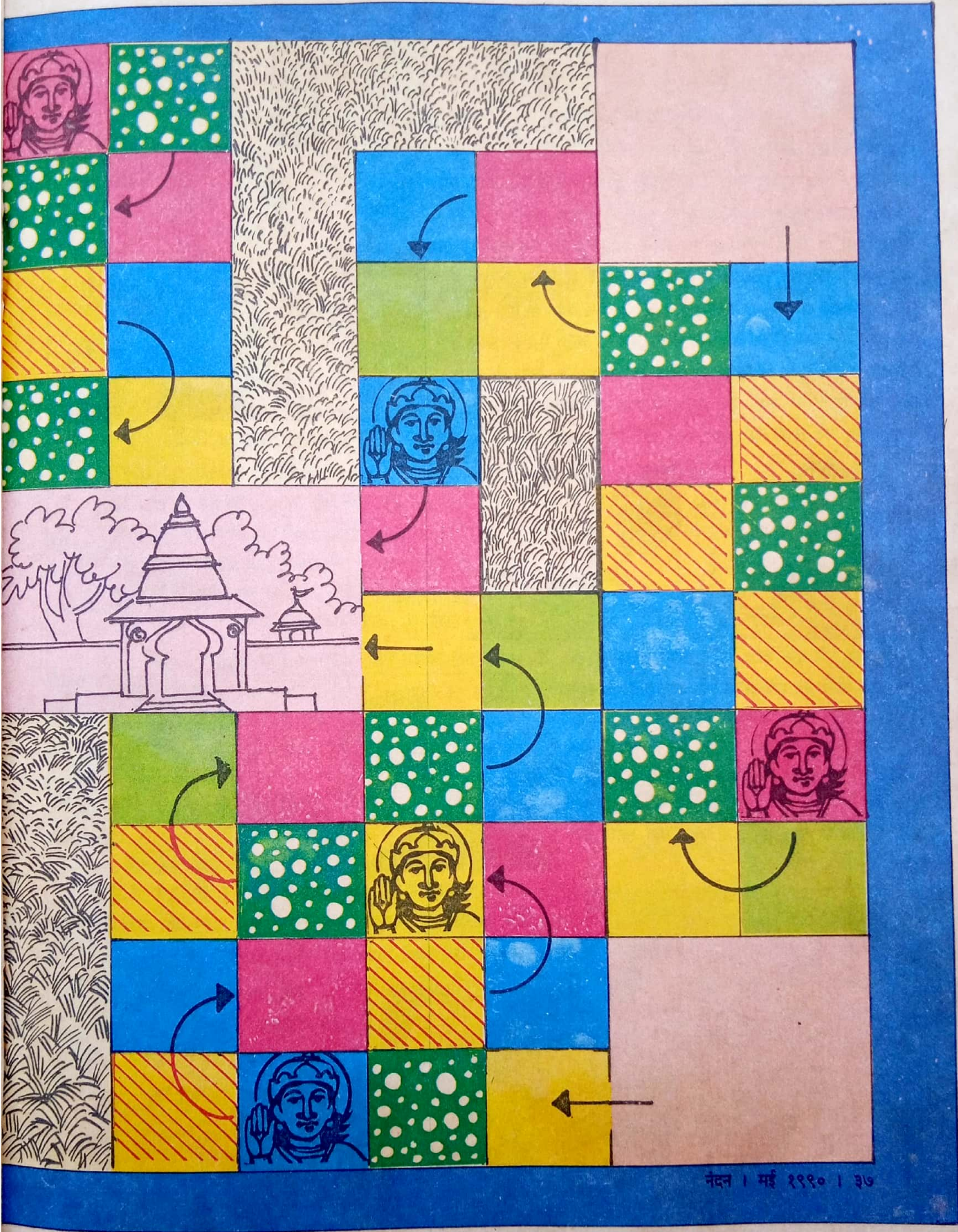
हमारा परिवार : पकाई हुई मिट्टी की मूर्तियां—कलाकार मवासीराम का शिल्प।



जैसिका टेंडी : अस्सी वर्ष की उम्र में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के पुरस्कार 'आस्कर' से सम्मानित।



कुत्ते जी ने फरमाया-बंदर जी अब चलो सैर पर, मेरी पीठ है तेरा रथ।



हार की परख

—सुधाकर पांडेय



सोलहवीं सदी की बात है । उस समय अहमदाबाद सौराष्ट्र प्रांत का शहर था । अहमदाबाद नगर में बादशाह जहांगीर की एक टकसाल थी, जिसमें शाही हुकूमत के सिक्के ढला करते थे । उस टकसाल में अखा नाम के एक निपुण कारीगर काम करते थे । उनका पुस्तैनी धंधा आभूषण बनाना था । अखा भी आभूषण बनाने में बहुत निपुण थे ।

स्वभाव से भोले और दयालु थे वह । बीस वर्ष के होते-होते मां-बाप चल बसे । एक बड़ी बहन थी; उसे भी काल ने छीन लिया । परिवार के इस दुःख से अखा के मन में वैराग्य-सा पैदा हो गया । वह पढ़े-लिखे भी कम थे । कुछ सीखना और जानना चाहते थे, मगर बिना पढ़े-लिखे को ज्ञान कहां से मिले ? कम पढ़े-लिखे होने का दर्द उन्हें हमेशा कचोटता रहता था ।



उनके पड़ोस में उनकी हम उम्र एक युवती थी । उसका कोई भाई नहीं था । अखा को भी बहन का अभाव था, इसीलिए उन्होंने उसे अपनी धर्म बहन बना लिया । वह भी उन्हें सगे भाई से बढ़कर मानती थी । आस-पड़ोस वाले अखा को बहुत मानते थे । वह सभी के काम जो आते थे ।

पड़ोस में एक शादी थी । उसमें बाहर से कुछ रिश्ते-नाते वाले आए । इन्हीं में एक स्त्री सोने का सुंदर हार पहने थी । यह हार अखा की धर्म बहन को बहुत भाया । उसने भी हार बनवाने की सोची । वह अखा के पास आई । उन्हें तीन सौ रुपए देकर बोली—"भइया, मेरे लिए एक खूबसूरत-सा हार बना दो । हार ऐसा हो कि लोग देखते ही वाह-वाह कह उठें ।" तीन सौ रुपए उन दिनों बहुत बड़ी रकम होती थी ।



अखा हार बनाने में जुट गए । बड़ी कुशलता से बहन के लिए एक सुंदर जड़ाऊ हार बनाया । हार उनकी धर्म बहन को बहुत ही पसंद आया । वह खुशी-खुशी हार लेकर चली आई ।

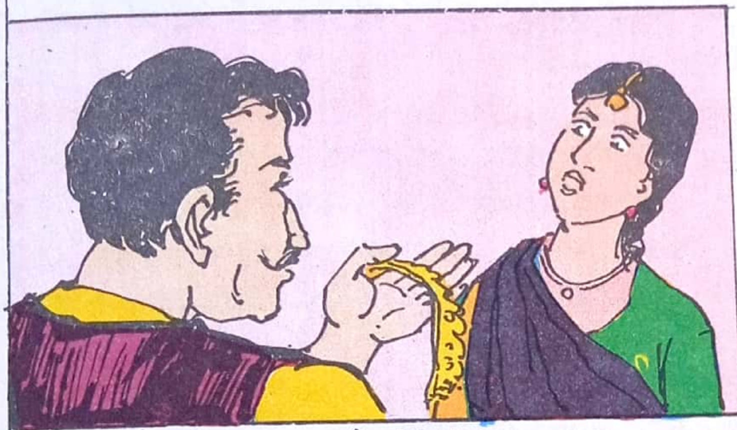


धर्म बहन ने सहेलियों को हार दिखाया । बोली—"मेरे भइया ने बनाया है सोने का यह हार । खालिस सोना है, जरा भी खोट नहीं ।"

"हम ऐसा बिलकुल नहीं मानतीं । भला, सुनार भी किसी का सगा हुआ है । वह तो खोट मिलाता ही है । विश्वास न हो, तो किसी दूसरे सुनार को हार दिखला दो । असलियत मालूम हो जाएगी ।"—सहेलियां बोलीं ।



पहले तो उसने सोचा—'नहीं, भाई मेरे हार में खोट नहीं मिला सकता ।' मगर सहेलियों के बार-बार कहने पर उसके मन में शंका ने घर कर लिया । वह हार लेकर दूसरे सुनार के पास पहुंची । उसे हार की परख करने को कहा ।



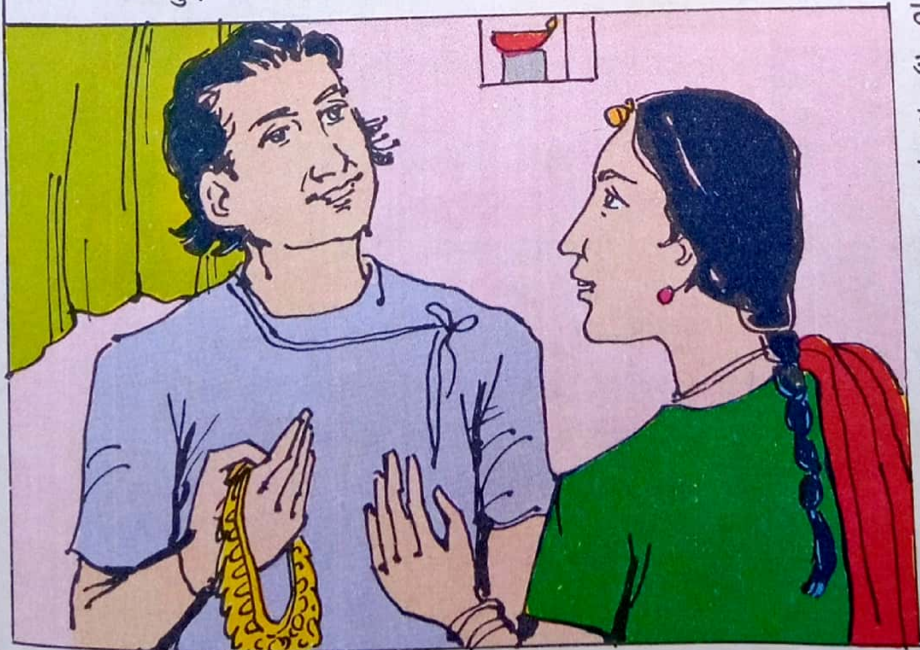
सुनार ने हार की एक लड़ी में से दो कुंदे काटे, उन्हें आग पर तपाया । फिर कसौटी पर कसा । हार की नाप-तौल भी की । फिर बोला—"बहन, इस हार में कोई खोट-मिलावट नहीं है । बिलकुल शुद्ध सोने का है । हां, तुमने सिर्फ तीन सौ रुपए ही दिए, मगर यह पांच सौ रुपए से कम नहीं ।"

यह सुनकर बहन को स्वयं पर बहुत ग्लानि हुई । सोचने लगी—'मुझसे बड़ी भारी भूल हो गई । अपने भाई पर विश्वास न कर, मैं सहेलियों के बहकावे में आ गई ।'

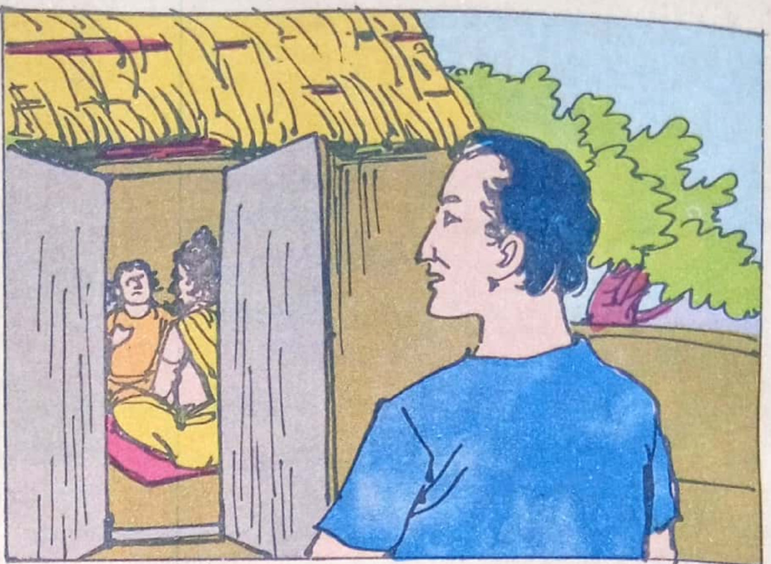


कटे हुए हार को उसने सुनार से जोड़ने को कहा । सुनार बोला—"वर्षों से मैं यह काम कर रहा हूं, पर ऐसा हार आज तक नहीं बनाया । मैं इस हार को ठीक से नहीं जोड़ पाऊंगा । इसे तो अखा ही जोड़ सकते हैं ।"

पश्चाताप में डूबी धर्म बहन अखा के पास गई । रोते हुए सारी घटना दोहरा दी । अखा ने कहा—"तुमने भी मुझ पर अविश्वास किया ! खैर, मैं हार ठीक कर देता हूं ।" थोड़ी ही देर में अखा ने हार जोड़ दिया । धर्म बहन को हार देकर विदा किया । अखा सोचने लगे—'मैंने जिसे बहन माना, उसी ने मेरा विश्वास नहीं किया । इस स्वार्थी दुनिया में लिप्त रहना, बेकार ही है ।' इस तरह हार की कड़ी तो जुड़ गई, लेकिन अखा के मन की कड़ी टूट गई । अब उन्हें केवल भगवान पर ही भरोसा था । दूसरे दिन ही अहमदाबाद छोड़, काशी चले आए ।



मणिकर्णिका घाट पर कुटिया बनाकर अखा वहां रहने लगे। उनका समय भगवत भजन में बीतने लगा। मगर ज्ञान प्राप्ति की चाह अभी भी कम न हुई थी। एक दिन सोचा— 'गुरु मुख से विद्या प्राप्त करनी चाहिए। लेकिन इस अधेड़ को पढ़ाएगा कौन ?' यह सोचते-सोचते वह घूमने निकल पड़े। रास्ते में एक आश्रम-सा दिखाई दिया। अंदर से आवाज आ रही थी। वह रुक गए। अधखुले फाटक की ओट से झांककर देखा, एक गुरु अपने शिष्य को धर्म शिक्षा पढ़ा रहे थे। वह दरवाजे की ओट में

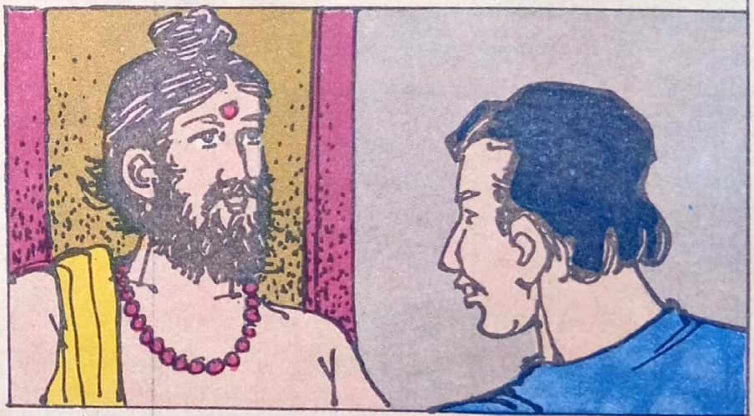


छिपकर पाठ सुनने लगे। बुद्धि तो अखा की तेज थी ही। उन्हें धर्म चर्चा में बड़ा आनंद आया। ध्यान-मग्न होकर सुनने लगे। गुरु जी का प्रवचन सुन रहा शिष्य, बीच-बीच में हुंकारा भी भर रहा था। अचानक शिष्य को नींद आने लगी। अखा यह देख रहे थे। वह सोचने लगे—'गुरु जी तो पढ़ाने में मग्न हैं। शिष्य अगर सो गया, तो हुंकारा कौन भरेगा। अगर हुंकारा नहीं भरा गया, तो गुरु जी का ध्यान भंग होगा। ऐसे में



पाठ रुक जाएगा। अगर पाठ रुक गया, तो इस ज्ञान से मैं वंचित हो जाऊंगा।' यही सोचकर शिष्य के सो जाने पर अखा ने हुंकारा भर दिया। बदली-बदली आवाज गुरु जी के कानों में पड़ी। उन्हें कुछ संदेह हो गया। पुस्तक हटाकर देखा—शिष्य सो रहा है। 'तब यह हुंकारा किसने भरा ?' —गुरु जी सोचने लगे। सोचते-सोचते वह बाहर आए। वहां अखा खड़ा था।

गुरु जी ने पूछा—"कौन हो तुम ? यहां क्या कर रहे हो ?"

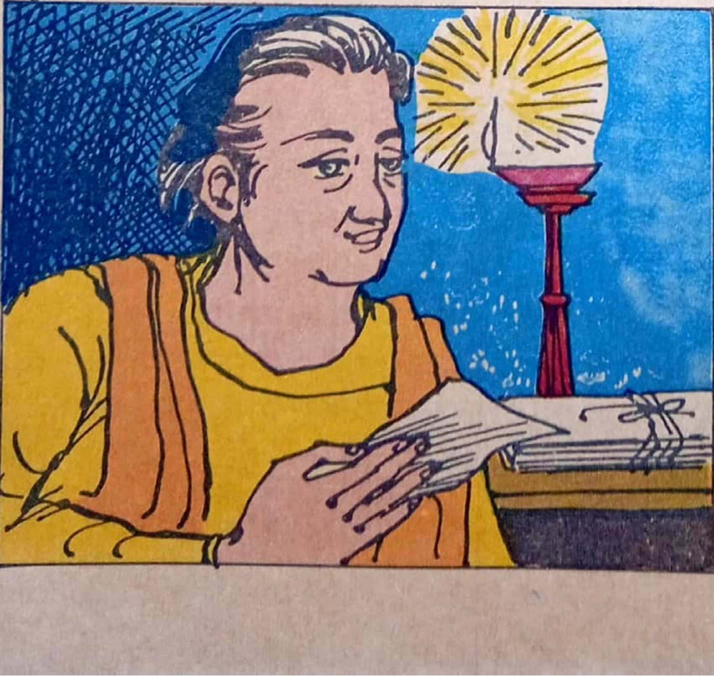


"मैं अखा हूं।" —फिर सब कुछ सच-सच बता दिया।

"क्या सचमुच ही तुम पढ़ना चाहते हो ?"—गुरु जी ने पूछा।

"आप कृपा करें, तो मेरा जीवन सार्थक बन जाएगा।"—अखा बोले।

उसी दिन से अखा उनसे पढ़ने लगे। थोड़े ही दिनों में वह विद्वान बन गए। अखा ने अनेक ग्रंथों की रचना की। उनके लिखे काव्य ग्रंथों को आज भी लोग बड़े चाव और श्रद्धा से पढ़ते हैं। ●



अराचेन

—प्रवासी विनयकृष्ण



बहुत पहले यूनान के किसी शहर में एक जुलाहा रहता था। दिन-रात कड़ा परिश्रम करने के बाद भी उसे इतनी आमदनी नहीं हो पाती थी, जिससे अपने परिवार का पालन-पोषण ठीक से कर सके।

जुलाहा अक्सर घर-गृहस्थी की चिंता में रहता। उसकी पत्नी उसे ढाढ़स बंधाती— "निराश क्यों होते हो? देवी मिनर्वा की कृपा से हमारी निर्धनता दूर हो जाएगी।"

जुलाहा मरी हुई मुसकान बिखेर देता— "तुम तो ऐसे कह रही हो, जैसे देवी मिनर्वा से तुम्हारी जान-पहचान हो।"

जुलाहे की पत्नी कहती— "हम दिन-रात मेहनत करते हैं। दूसरों का बुरा भी नहीं चाहते। भलाई करने से भी नहीं कतराते। फिर देवी की कृपा से हम लोग वंचित क्यों रहेंगे?"

कुछ दिन बाद उनके घर एक बेटी जनमी। नाम रखा गया— अराचेन। बच्ची बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न थी। जब वह आठ-दस साल की हुई, तो कढ़ाई-सिलाई और कपड़ा बुनने के कामों में मां-बाप के हाथ बंटाने लगी। अब घर की आय में थोड़ी बढ़ोतरी होने लगी।

बच्ची अराचेन की सबसे बड़ी खूबी यही थी। वह जो भी काम करती, खूब मन लगाकर और बेहद सफाई के साथ। रंगीन धागों से जब वह कपड़ों पर फूल काढ़ती, तो वे देखने में असली जैसे लगते।

धीरे-धीरे उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। लोग उसकी अनोखी कशीदाकारी देखने आने लगे। संपन्न परिवारों की स्त्रियां मुंह मांगे दाम देकर अपने कपड़ों पर बेलबूटे कढ़वातीं। व्यापारी वर्ग उसके हाथों से बने कपड़े ऊंची कीमत पर खरीदता।

अराचेन के कारण उसके माता-पिता की गरीबी दूर हो गई। उन लोगों की गिनती अब नगर के विशिष्ट नागरिकों में होने लगी।

जब भी कोई मेहमान उस घर में आता, अराचेन की मां अपनी बेटी की तारीफों के पुल बांध देती। इन प्रशंसाओं से अराचेन घमंडी बन गई। किसी से भी सीधे मुंह बात नहीं करती थी। सिर्फ उन्हीं लोगों को वह अपने पास फटकने देती, जो उसकी हर बात हंसते हुए बर्दाश्त करते और साथ ही उसकी तारीफ भी करते थे।

एक दिन अराचेन ने अपने प्रशंसकों से कहा— "तुम मामूली लोग मेरी कला की कद्र क्या जानो? मैं अपनी कारीगरी से कला की देवी मिनर्वा को भी पछाड़ सकती हूं!"

इस गर्वोक्ति से कला और ज्ञान की देवी मिनर्वा को बड़ा दुःख हुआ। घमंडी लड़की को सबक सिखलाने के लिए, देवी ने एक गरीब बुढ़िया का रूप धारण किया। लाठी टेकती हुई वह अराचेन के पास जा पहुंची। उसने कांपती हुई आवाज में पूछा— "क्या बना रही हो, बेटी?"

अराचेन ने उस फटे-हाल बुढ़िया की ओर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी सहेलियों से घिरकर कढ़ाई करती रही। अपनी काढ़ी हुई तितलियां उन्हें दिखलाते हुए, उसने गर्व के साथ कहा— "कितनी खूबसूरत हैं मेरी तितलियां! देवी मिनर्वा को लोग नाहक ही कला की देवी मानते हैं। उसने कभी कोई तितली-वितली थोड़े ही काढ़ी होगी?"

बुढ़िया के रूप में देवी मिनर्वा ने अराचेन के

माथे पर हाथ फेरते हुए कहा— ''बेटी, तू जन्मजात कलाकार है। तेरे हाथों से बनी कोई भी चीज बेहद खूबसूरत होती है। मगर तू कला की देवी मिनर्वा के पीछे क्यों पड़ी है ?''

अराचेन ने बुढ़िया का हाथ झटकते हुए कहा— ''तू अपना रास्ता नाप। बड़ी आई है कला की देवी की हमदर्द।''

देवी ने मुसकराकर कहा— ''अच्छा, एक बात बता। तू देवी मिनर्वा से अपनी बराबरी किस आधार पर करती है ?''

अराचेन दर्प के स्वर में बोली— ''मैं बहुत अच्छी कलाकार हूं। मेरी बराबरी देवी मिनर्वा से हो ही नहीं सकती !''

देवी ने धीमी आवाज में कहा— ''कलाकार को इस तरह का अहंकार शोभा नहीं देता। अगर तू एक महान कलाकार बनानी चाहती है, तो कला साधना के साथ-साथ विनम्र भी होना पड़ेगा।''

अराचेन को इस उपदेश से बेहद गुस्सा आया। उसने बुढ़िया बनी देवी को धकियाते हुए कहा— ''मुझे तुम्हारी बेसिर-पैर की बातें नहीं सुननी। तुम अपना रास्ता नापो।''

देवी ने मुसकराते हुए कहा— ''मैं कोई बेअक्ल औरत नहीं, स्वयं कला की देवी मिनर्वा हूं !'' कहकर उसने अपने हाथ की लाठी फेंक दी। देवी मिनर्वा के दिव्य रूप में आ गई।



झिलमिल करते सुनहले वस्त्रों से सुसज्जित देवी मिनर्वा को देख, अराचेन की सभी सहेलियों ने उसके सामने घुटने टेक दिए। मगर घमंडी अराचेन देवी को बिना अभिवादन किए खड़ी रही। बोली— ''जब तुम आ ही गई हो, तो फिर मेरे साथ मुकाबला करके देख लो।''

ललकार सुनकर देवी मिनर्वा ने वहां रखा कपड़ा बुनने का करघा संभाल लिया। पलक झपकते ही उसने इंद्रधनुषी रंगों वाली एक सुंदर-सी चादर बुन डाली।

उधर अराचेन ने भी दूसरे करघे पर बुनाई का काम शुरू कर दिया। उसने जो चादर बुनी, उस पर मन मोहक दृश्यों वाले एक उपवन की कढ़ाई थी।

अराचेन की सहेलियां मंत्र मुग्ध होकर यह अनोखी प्रतियोगिता देखती रहीं।

देवी मिनर्वा की चादर से अराचेन की चादर ज्यादा खूबसूरत थी। इसलिए अराचेन ने मुंह बिचकाते हुए कहा— ''अब तो आ गए न तुम्हारे होश ठिकाने देवी मिनर्वा ?''

मिनर्वा ने शांत स्वर में कहा— ''बेटी, तेरी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। तुझ-जैसी कलाकार पर मुझे भी गर्व है। मगर तेरा घमंड तेरे अंदर की कला की हत्या कर डालेगा।''

अराचेन ने क्रोध से कांपते हुए करघे में लगा बांस का डंडा उठा लिया। उसे देवी की ओर फेंकते हुए कहा— ''मैं तुम्हारा उपदेश सुनना नहीं चाहती। तुम प्रतियोगिता में हार गई हो।''

देवी से और सहन न हुआ। उसने अराचेन को शाप देते हुए कहा—''एक कुशल कलाकार के सभी गुण मौजूद होने के बावजूद तू हमेशा एक धागे से उलटे पांव लटकी हुई रहेगी। मूर्ख और घमंडी लड़की !''

देखते-ही-देखते कलाकार अराचेन एक छोटी-सी मकड़ी में बदल गई। वह आज भी खूबसूरत चादरें बुनती है, मगर उसकी अनोखी कारीगरी की कहीं भी चर्चा नहीं होती। ●

कहानी सुनाओ

—कीर्तिकुमार सिंह

एक समय महर्षि भरद्वाज अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। तभी उनके प्रिय शिष्य पद्मनाभ ने कहा—''महर्षि, आज कोई कथा सुनाइए।''

महर्षि भरद्वाज कथा सुनाने लगे—''किसी नगर में दो धनी व्यापारी रहते थे। एक का नाम था कुबेर और दूसरे का पुलिन। कुबेर का मानना था कि हर व्यक्ति पर विश्वास करना चाहिए। लेकिन पुलिन इससे उलटा सोचता था। वह मानता था कि किसी पर विश्वास करना, सबसे बड़ी मूर्खता है।

एक दिन कुबेर की पत्नी मायके गई हुई थी। अचानक उसके पास राजा का बुलावा आया। कुबेर राजधानी जाने की तैयारियां करने लगा। लेकिन उसके सामने एक समस्या थी—उसका चार वर्षीय इकलौता पुत्र कुलक, उसी के पास था। कुबेर ने पुत्र को अपनी पत्नी के पास भेजने का निश्चय कर लिया। उसने अपने दो सेवकों—सबल और विमल को आदेश भी दे दिया।

दोनों नौकर कुबेर के पुत्र को उसकी मां के पास पहुंचाने चल पड़े। कुबेर ने अपने पुत्र के साथ काफी धन और सामान भी भिजवाया था। रास्ते में दोनों नौकरों की नीयत डोलने लगी।

सबल ने सुझाया—''रास्ते में एक जंगल पड़ने वाला है। क्यों न सेठ के इस पुत्र को वहीं मारकर फेंक दें? फिर सारा धन लेकर हम भाग जाएंगे।''

कुछ दूर और चलने के बाद विमल को पश्चाताप होने लगा। वह सबल से बोला—''शायद यह हम ठीक नहीं कर रहे हैं। सेठ जी हम पर कितना विश्वास करते हैं! उन्होंने बिना आगा-पीछा सोचे, अपना पुत्र और यह धन हमारे हवाले कर दिया। उनके विश्वास की रक्षा तो दूर, हम थोड़े-से धन के लिए एक अबोध बच्चे की हत्या का पाप लेने जा रहे हैं।''

यह सुनकर दोनों बहुत दुखी हुए। उन्होंने समस्त धन-सम्पत्ति और बच्चे को सकुशल उसकी मां तक पहुंचा दिया।

कुछ देर चुप रहने के बाद महर्षि भरद्वाज बोले—''अब दूसरे व्यापारी पुलिन की कथा सुनो।''

वह आगे बताने लगे—''एक दिन पुलिन ने अपने एक खास कर्मचारी कणक को बुलाया। कहा—''मैंने सुना है, पास के एक नगर में थोक व्यापार की अच्छी सम्भावनाएं हैं। तुम कई गाड़ियों में सामान लदवाओ और वहां ले जाकर बेचो।''

कणक ने आदेशानुसार कई गाड़ियां लदवाईं। वह उस नगर की ओर चल पड़ा। सचमुच उस नगर में थोक व्यापार की अच्छी सम्भावना थी। धड़ाधड़ सामान बिकने लगा। कुछ दिनों बाद कणक के मन में एक बात उठी। वह सोचने लगा—'सेठ के आने के पहले ही जल्दी-जल्दी सामान क्यों न बेच लिया जाए? मैं सारा पैसा लेकर गायब हो जाऊंगा।'

दूसरे दिन से वह सारा सामान जल्दी-जल्दी बेचने लगा। सेठ के आने के दो दिन पहले ही उसने सारा सामान बेच डाला। सारे पैसे को उसने एक बड़े संदूक में रखा। तय किया—'अगले दिन सवेरे गाड़ियां हंकवाकर, सारा पैसा लेकर मैं दूर कहीं चला जाऊंगा।' लेकिन उसी दिन शाम को व्यापारी पुलिन वहां आ धमका। पुलिन को देखते ही कणक का चेहरा फक पड़ गया। वह बोला—''सेठ जी, आप तो परसों आने वाले थे!''

पुलिन ने मुसकराकर कहा—''वह तो मैंने तुमसे कहा था। आने वाला तो मैं आज ही था।''

''अभी पूरी कथा खत्म नहीं हुई है।''—महर्षि ने कहा—''बोलो, इन कथाओं से तुमने क्या सार निकाला?''

महर्षि की बात सुनकर सभी शिष्य चुप।

महर्षि भरद्वाज बोले—''किसी भी सिद्धांत पर आंखें बंद करके नहीं चला जाता। इसका आशय केवल यह था कि हमें एक सीमा तक हर व्यक्ति पर विश्वास करके चलना चाहिए। लेकिन उसके आगे सतर्क भी रहना चाहिए। जो ऐसा करता है, कभी धोखा नहीं खाता।''

खरगोश की दुम

—मनोहर पुरी

यह कहानी तब की है, जब शेर जंगल के जानवरों को मारता-खाता नहीं था। उन दिनों खरगोश की पूंछ भी सुंदर-कोमल बालों से भरीपूरी चंवर की तरह हुआ करती थी।

सब जानवर शेर को राजा मानते थे। आदर से उसके लिए गुजरने का रास्ता छोड़ देते थे। नदी के किनारे भी उसके लिए एक साफ-सुथरी जगह छोड़ दी गई थी, ताकि वह जब चाहे स्वच्छ पानी पी सके। किंतु कुछ दिन पहले एक ऐसी बात हो गई कि सब कुछ उलटा-पुलटा हो गया।

हुआ यह कि उस दिन शेर नदी के किनारे-किनारे चला जा रहा था। सुहावना मौसम था। सब पशु-पक्षी खुशी से किलकारियां भर रहे थे। शेर जहां से गुजरता, सब उसे प्रणाम करके रास्ता दे देते, पर शेर तो किसी और ही उधेड़बुन में था।

उधेड़बुन भी बड़ी विचित्र थी। कई दिनों से शेर जिधर भी जाता, उसे पशु-पक्षी अपने प्यारे-प्यारे बच्चों को साथ लिए घूमते दिखाई देते। शेर ही केवल ऐसा था, जो अकेला घूमता था। न तो उसकी कोई मादा थी और न ही बच्चे। इसी बात से शेर कभी-कभी बहुत उदास हो जाता था।

सूरज छिपने लगा, तो शेर अनमना-सा अपनी मांद की ओर लौट चला। नदी से कुछ ही दूर चट्टानों के पीछे उसे बतख के तीन बच्चे दिखाई दिए। शेर को देखकर बच्चों ने किलकारी भरी, तो न जाने शेर के मन में क्या आया, उसने तेजी से बढ़कर सारे बच्चों को पकड़ लिया। उन्हें चुपके से अपनी मांद में ले गया।

थोड़ी देर में मादा बतख ने अपने बच्चों को वहां न पाकर इधर-उधर खोजना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे सभी जानवर उसके बच्चों को ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर फैल गए। किंतु वे न मिलने थे, न मिले। हर कोई परेशान हो उठा। पहले तो कभी ऐसा हुआ नहीं था। जब सब थक-हारकर बैठ गए, तो उन्हें सामने से शेर आता दिखाई दिया। उसके आगे बतख के तीनों बच्चे बड़ी मस्ती और शान से चले आ रहे थे।

उनको देखते ही मादा बतख खुशी से भर, आगे बढ़ी और बोली— "कहां चले गए थे तुम तीनों ?" फिर वह अपने तीनों बच्चों को लेने आगे बढ़ी, तो शेर गुर्राकर बोला— "इन्हें तुम कहां लिए जा रही हो ? ये तो मेरे बच्चे हैं।"

मादा बतख ने कहा—"मैं इनके लिए दाना इकट्ठा करने गई थी। जब लौटी, तो ये मुझे नहीं मिले। ये तुम्हारे साथ कहां से चले आ रहे हैं ?"

शेर ने उत्तर दिया—"ये मेरे साथ हैं, क्योंकि ये मेरे बच्चे हैं।"

थोड़ी देर की तकरार के बाद शुतुरमुर्ग की अध्यक्षता में इस समस्या पर विचार करने के लिए एक सभा बैठी।

शुतुरमुर्ग ने बतख से पूछा—"तुम्हारे पास क्या सबूत है कि ये बच्चे तुम्हारे हैं ?"

हैरान-परेशान बतख ने अचकचा कर कहा—"इसमें सबूत की क्या बात है ? सब जानते हैं कि ये मेरे बच्चे हैं।"

फिर शुतुरमुर्ग ने शेर से प्रमाण देने को कहा। शेर ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—"बच्चे हमेशा मां-बाप के साथ रहते हैं और इस समय ये मेरे साथ हैं। इससे बड़ा और क्या सबूत हो सकता है ?"

उसकी आंखों से चिंगारियां निकल रहीं थीं और वह बारी-बारी से सब को घूर रहा था।

शुतुरमुर्ग भी अन्य पशुओं और पक्षियों की भांति जानता था कि ये बच्चे बतख के हैं, पर चुप था। उसने सभा की ओर देखकर कहा—"मामला साफ है। यदि किसी को कुछ कहना है, तो कह सकता है।"

सभा में पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था। शेर के तेवर देखकर किस में साहस था कि कोई आपत्ति करता! शुतुरमुर्ग निर्णय सुनाने ही वाला था कि



खरगोश धीरे से बोला—''अनुमति हो, तो मैं कुछ कहूं ?''

अनुमति मिलने पर उसने शेर से पूछा—''तो ये बच्चे आपके हैं।''

शेर ने गुर्रा कर उत्तर दिया—''अभी-अभी मैं यह बात सबके सामने कह चुका हूं। क्या तुमने नहीं सुनी ?''

खरगोश लम्बे बालों से भरी अपनी नरम पूंछ को अपने बदन के चारों ओर लपेटकर बोला—''ठीक है, तो क्या तुम बता सकते हो कि इनकी आयु कितनी है ?''

शेर ने कहा—''आयु का हिसाब-किताब मैं नहीं रखता। बच्चे तुम्हारे सामने हैं। स्वयं देख लो, कितनी है इनकी आयु।''

खरगोश ने जब बतख से यही प्रश्न किया, तो उसने कहा—''हां,पिछली पूर्णिमा को मैंने सबसे छोटे बच्चे को सेया था। एक बेटा और एक बेटी उससे तीन दिन पहले पैदा हुए थे।''

जानवरों में कुछ खुसर-पुसर शुरू हुई, परंतु उसकी परवाह न करते हुए खरगोश ने शेर से कहा—''अच्छा, तुम बताओ कि इनमें से मादा कौन है ?''

शेर बड़े चक्कर में पड़ा। कभी वह एक बच्चे की ओर संकेत करता, तो कभी दूसरे की ओर। उसे देखकर जानवरों ने जोर का ठहाका लगाया।

खरगोश ने शेर का ध्यान भंग करते हुए कहा—''जब ये बच्चे बड़े होंगे, तो इनकी पतली-पतली टांगें होगीं, लम्बे बालों के गुच्छे सहित पूंछ तो होगी ही नहीं और मुंह के स्थान पर भी चोंच ही होगी। कद तो कठिनाई से ही आपके घुटनों तक होगा। आने वाले ये शेर बतख जैसे दिखेंगे।''



खरगोश की इस बात से सभा में एक बार फिर जोरदार ठहाका लगा। शेर का पारा चढ़ गया। वह तेजी से खरगोश की ओर लपका। खरगोश तो पहले ही जानता था, इसी कारण उसने अपनी लम्बी पूंछ अपने शरीर पर लपेट ली। शेर जब तक उसके पास पहुंचता, खरगोश यह जा और वह जा।

आगे-आगे खरगोश, पीछे-पीछे शेर। काफी दूर निकलने पर खरगोश को लगा कि अब उसमें दम नहीं है और कुछ ही देर में शेर उसे दबोच लेगा। तभी उसने खोखले तने वाला एक पेड़ देखा। वह पेड़ पास ही था। पूरा दम लगाकर खरगोश ने तेज दौड़ लगाई और उस खोखले पेड़ के छेद में घुस गया।

शेर भी वहां पहुंच गया। छेद में हाथ डालकर खरगोश को टटोलने लगा। मगर उसे कुछ महसूस नहीं हुआ। पेड़ की दूसरी ओर देखने पर वहां भी छेद दिखाई दिया। शेर ने सोचा कि खरगोश मुझे मूर्ख बनाना चाहता है कि मैं एक तरफ रहूं, तो वह दूसरी तरफ से निकल जाए। उसने अपने पंजें फैलाकर दोनों तरफ से छेदों में डाले। फिर भी उसके हाथ कुछ नहीं लगा। तभी खरगोश ने हंसते हुए उसे आवाज दी—''भले ही तुम ताकतवर हो, पर मेरे जितने बुद्धिमान तो बिलकुल नहीं।''

खरगोश ने सोचा था कि शेर के दोनों पंजे पेड़ में हैं, इसलिए वह उसके काफी समीप खड़ा हंस रहा था। शेर ने उसे देखा, तो तेजी से अपना मुंह उसकी ओर बढ़ाया। खरगोश उछला, परंतु उसकी लम्बी पूंछ शेर के दांतों में आकर कट गई। खरगोश अपनी जान बचाकर भाग तो गया, पर उसे अपनी प्यारी पूंछ से हाथ धोना पड़ा।

तब से खरगोश की पूंछ बहुत छोटी होती है और वह उसे बराबर हिला-हिलाकर देखता रहता है कि वह बड़ी हो रही है या नहीं। उधर शेर भी जानवरों को पकड़-पकड़कर मार डालता है, क्योंकि वे कभी उस पर हंसे थे। ●



तुम भी लिखो कविता

परिणाम

कविता लिखने की प्रतियोगिता में खूब बढ़-चढ़कर भाग लिया पाठकों ने।

चित्र से एकदम मिलती, ढेरों कविताएं और उनमें एक से एक बढ़िया, अनोखी कल्पनाएं। पुरस्कार के लिए इन कविताओं को चुना गया—

सुन-सुन, धुन सुन
गा रही वह गुन-गुन,
हाथ में लिए तम्बूरा
तान सुनाती जाती मुनमुन।
पास में बैठा उसके भालू
खड़े किए हैं अपने कान,
सुन रहा है मगन होकर
मुनमुन की मीठी तान।
झूम-झूमकर गाती मुनमुन
भालू उसके संग है गाता,
सोच रहा है गाते-गाते
मैं भी थोड़ा ढोल बजाता।

—इंद्राणी बसु बल, ईंटा नगर

मुन्नी रानी सुना रही है
एक कहानी भालू को,
'गोरी-चिट्टी एक परी थी'
बता रही है कालू को।

'चमकीले दो पंख थे उसके
जिनसे वह उड़ जाती थी,
नदी-पहाड़ लांघती जाती
देश-देश वह जाती थी।

'नन्हे मुन्ने, छोटे-छोटे
बच्चों के मन भाती थी,
देती ढेरों चीजें उनको
मीठे गीत सुनाती थी।

'पंख हों मेरे', मुन्नी बोली
तो मैं भी उड़ जाऊंगी,
आसमान की सैर, ओ भालू
तुमको भी करवाऊंगी।'

—पंकज चोपड़ा, दिल्ली

ले आई कहीं से
मुनमुन एक तम्बूरा,
तार छेड़ दिया उसने
पर मजा न आया पूरा।
गाना जब आरम्भ किया
तम्बूरे की धुन पर,
भालू भी आ बैठा
संगीत मधुर सुनकर।
मुनमुन को लगा
अब भी कुछ अधूरा,
बोली—'नाचो भालू दादा
बनकर जरा जमूरा।'
लगा नाचने मस्ती में
भालू दे-दे ताल,
मुनमुन के संगीत ने
ऐसा किया कमाल!

—मुकेश मित्तल, आगरा

प्यारी-प्यारी नन्ही मुनमुन
धीरे-धीरे करती गुनगुन,
लेकर हाथों में तम्बूरा
बजा रही है प्यारी-सी धुन।
देख रहा है नन्हा भालू
नाम है जिसका नटखट लालू,
मस्त, मगन हो उसने सोचा
मैं भी थोड़ा गाना गा लूं।
उसने अपना स्वर मिलाया
तम्बूरे को जरा हिलाया,
स्वर बिगड़ा तो नन्ही मुनमुन
को भालू पर गुस्सा आया।
मुनमुन बोली—'ठहर जरा तू!'
लालू तब सपने से जागा,
मुनमुन को गुस्से में देखा
तो वह सरपट वहां से भागा।

—मोनीषा नायक, पटना

नन्ही-सी एक गुड़िया,
नाम है उसका मुनमुन।
लिए तम्बूरा बनाती धुन,
और कहती भालू से सुन—
'बागों में हरियाली छाई,
हम सबके वह मन को भाई।
अब पिकनिक पर जाएंगे,
टाफी-बिस्किट खाएंगे।'
भालू अपना कान उठाता,
मगन हुआ ताली बजाता।
भालू नाचे, मुनमुन गाए,
मिलकर दोनों मौज मनाएं।

—मनीष दधीच, जयपुर

मुनमुन रानी गाती है
तम्बूरा बजाती है,
अपने प्यारे भालू का
गाकर दिल बहलाती है।
मुनमुन रानी गाती है!
आए समझ में या न आए
भालू सुनता कान उठाए,
मुनमुन कितनी अच्छी बातें
भालू को सिखलाती है।
मुनमुन रानी गाती है!

—कुमार निगम, आरा

आओ, भालू भैया आओ,
मेरा गाना सुनते जाओ।
यदि गाना सुनते जाओगे,
शहद मुफ़्त में पाओगे।

—राजन मित्तल, अम्बाला कैंट

नन्ही मुनमुन बजा रही है
तम्बूरे पर धुन,
नन्हा भालू पास में बैठा
धुन रहा है सुन।
सोच रहा वह—कितना अच्छा
मुनमुन राग बजाती
कहता हूं कई बार इसे,
पर मुझको नहीं सिखाती।
आज सीखकर ही दम लूंगा
गाना और बजाना,
तान निकालूंगा मैं ऐसी
देखे मुझे जमाना।
मुनमुन के तम्बूरे को वह
देख रहा है एकटक,
हुआ कान एक ऊपर, दूजा—
नीचे गया लटक।

—प्रदीपकुमार पाठक, रांची

मुनमुन गाए गाना जी,
छेड़े राग पुराना जी।
तम्बूरे की तान मधुर,
भालू कान किए ऊपर।
मुनमुन लगती गुड़िया है,
भालू श्रोता बढ़िया है।
मन आनंद विभोर हुआ,
तनिक न भालू बोर हुआ।
कितनी अच्छी जोड़ी है,
छाप सभी पर छोड़ी है।

—आनंद चौरसिया, जबलपुर

चुन्नू भालू थे एक दिन
सचमुच बड़े उदास,
लिए तम्बूरा बैठी मुनमुन
भालू जी के पास।
तार छुए मुनमुन ने ज्यों ही
तम्बूरा टुन-टुन बोल उठा,
डांस चैम्पियन भालू जी का
मन तो जैसे डोल उठा।
सुनकर ताक धिना धिन-धिन
कान को ऊंचा और उठाया,
आंख जरा-सी तिरछी करके
स्वर में अपना ध्यान लगाया।
छूमंतर हो गई उदासी
झलकी होंठों पर मुसकान,
मुनमुन ने भी खुश हो करके
छेड़ी लम्बी, मीठी तान।

—नीतू, करौंदी (म.प्र.)

मुनिया रानी सबकी प्यारी,
मम्मी की वह राजदुलारी।
चली देखने को वह मेला,
भालू बैठा वहां अकेला।
खाई मिठाई, झूला झूला,
चहल-पहल, मन फूला-फूला।
लाई भालू और तम्बूरा,
तम्बूरा था भूरा-भूरा।
तम्बूरे ने राग अलापा,
झटपट-झटपट भालू नाचा।

—नमित माथुर, मद्रास

सात सुरों से तम्बूरे पर
लेती मुनमुन मीठी तान,
नन्हे भालू भैया बैठे
सीख रहे थे देकर ध्यान।
सा रे गा मा पा धा नी सा
नन्ही मुनमुन जब गाती थी,
उछल-उछलकर भालू भैया
गाते, मुनमुन इठलाती थी।
मैडम बनी संगीत की मुनमुन
शिष्य बने थे भालू भैया,
सा रे गा मा सीख चुके जब
सीखेंगे तब ता ता थैया।

—मनोजकुमार, मोदीनगर

सुनकर मुनमुन दीदी का गाना
नन्हा भालू करे विचार,
काश, यह तम्बूरा
मेरे हाथ आ जाए एक बार,
ऐसा सुर छेड़ूंगा
झूम उठेंगे लोग।
पर यह मुनमुन दीदी तो
है कितनी कठोर,
खुद मचा रही है शोर
कर रही है बोर,
किंतु इस अनोखे साज की
दे नहीं रही है
मेरे हाथों में डोर।

—प्रदीपकुमार गुप्ता, राउरकेला

इनकी कविताएं भी प्रशंसनीय रहीं— सुनीता शर्मा, दिल्ली; रूपा रावत, आगरा; पंकजकुमार सिंह, वाराणसी; चंद्रमोहन सिंह रावत, लैंसडाउन (पौड़ी गढ़वाल); ममताकुमारी प्रसाद, बगाई गांव (असम); अमित धेनुका, सिलीगुड़ी (प. बं.); संजय पुरोहित, बम्बई; इरामीत कौर, चंडीगढ़; बृजगोपाल सान्याल, बम्बई; नीतू, बिंदु, पालमपुर।

चटपट

□ राम- भूगोल का अर्थ बताइए।
श्याम- भू-गोल यानी कि धरती गोल है।

□ एक आदमी ने दीवार पर कोट टांगकर नीचे लिखा- कोई मेरा कोट न चुराए। मैं मुक्केबाजी का चैंपियन रह चुका हूं।
चोर ने कोट उठाकर नीचे लिखा—कोई मेरे पीछे न आए। मैं हमेशा दौड़ में प्रथम आता हूं।

□ एक यात्री- भाई, अंदर आने दो। मुझे तो सिर्फ खड़े रहने की जगह चाहिए।
दूसरा यात्री (गाड़ी के अंदर से)- इसके लिए तो प्लेटफार्म भी कोई बुरा नहीं।

□ कमल- यह बैग मेरे ऊपर गिर सकता है।
विमल- घबराइए नहीं, इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं है।

□ एक पड़ोसिन- आपके घर में आने वाले मेहमान का सबसे पहले स्वागत कौन करता है?
दूसरी पड़ोसिन- मक्खी, मच्छर और कुत्ते।

□ महिला- लकड़ी का खिलौना सौ रुपए का! यह कहां की शराफत है?
दूकानदार- यह इसी दुकान की। दूसरी पर तो डेढ़ सौ का मिलेगा।

□ एक बच्चा- पहाड़ों पर चढ़ने वाले कमर में रस्सी क्यों बांधे रहते हैं?
दूसरा बच्चा- जिससे कोई बीच में न भाग सके।

□ कमला- ऐसे कपड़े धोते हो कि एक के दो हो जाते हैं।
धोबी- मगर पैसे तो मैं आपसे एक के ही लेता हूं।

□ टेलीफोन आपरेटर- रामपुर बात करने के पचास रुपए लगेंगे।
आदमी- मगर मुझे बात करनी नहीं, सुननी है।

□ शीलू- अगर तुम किसी शेर को देख लो, तो क्या करोगी?
नीलू- कोशिश कि वह मुझे न देखे।

□ रमन- देश में एक कुर्सी के लिए सब लड़ रहे हैं।
नमन- बड़े पागल हैं। सोफा क्यों नहीं बनवा लेते?

□ रवि- अरे चोट कैसे लगी?
नवि- पहले मैं दाएं मुड़ा फिर बाएं। फिर जहां मोड़ नहीं था, सीधा चलता गया और खाई में गिर पड़ा। वहां किसी ने लिखा ही नहीं था कि कहां मुड़ना है।

□ पिता- सिर्फ पचास प्रतिशत नम्बर
बेटा- जी पिता जी, बाकी पचास प्रतिशत पूरी कक्षा को मिले।

□ थानेदार- जब चोरी का खतरा था, तो दरवाजा खुला क्यों रखा?
महिला- ज्योतिषी ने कहा था कि मेरे भाग्य का दरवाजा खुल गया है।

□ मां- अरे, तुमने गोली का कागज भी नहीं हटाया और खा ली।
बच्चा- आपने कहा था कि छिलकों में विटामिन होते हैं।

□ उमेश- पता नहीं, जाड़ों में लोग महीनों कैसे नहीं नहाते?
देवेश- हां, मुझे तो पचीस दिन बाद ही खुजली आने लगती है।

□ पत्नी- चाय कैसी है?
पति- अच्छी, मगर दूध, चीनी होती, तो और ज्यादा स्वाद आता।



तेनालीराम २६५

राहत



एक बार राजा कृष्णदेव राय ने मंत्री के कहने पर गरीब किसानों की मदद के लिए राहत की घोषणा की। हर जरूरतमंद किसान को पांच-पांच सौ स्वर्ण मुद्राएं बिना ब्याज के दी गईं। कहा गया कि फसल कटने पर वापस कर दें।

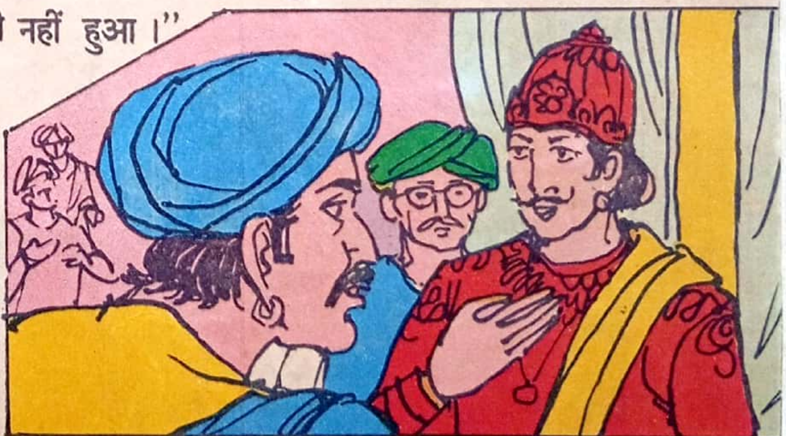
फसल कटी, तो दो-चार किसानों ने कर्ज वापस कर दिया। शेष किसान वापस न कर पाए। राजा ने मंत्री से कारण पूछा।

मंत्री ने कहा—"महाराज, आपकी मदद से सभी किसानों ने भरपूर लाभ उठाया है। जो कर्ज वापस नहीं करते, उन पर थोड़ी सख्ती की जानी चाहिए।"



राजा ने तेनालीराम की ओर देखा। वह बोला—"मंत्री जी ठीक कहते हैं। राज्य का पूरा पैसा वापस तो मिलना ही चाहिए। मगर सख्ती कैसी हो, इसे देखना होगा।"

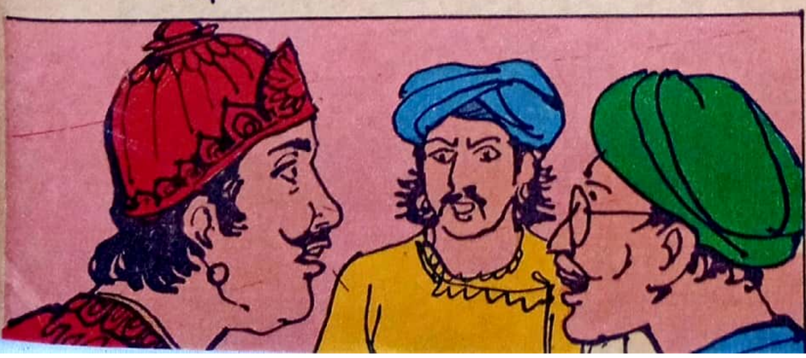
उसी रात राजा कृष्णदेव राय को ले तेनालीराम पास के गांव में गया। दोनों वेश बदले हुए थे। एक घर से चीखने-चिल्लाने की आवाज आई, तो दोनों ओट में खड़े हो सुनने लगे।। अंदर कोई कह रहा था—'पांच सौ में से कुल दो सौ हाथ लगे। अब राजा को पूरे पांच सौ कहां से दूं? इतना तो लाभ भी नहीं हुआ।"



सुनकर राजा कृष्णदेव राय ने चकित हो तेनालीराम की ओर देखा। जहां भी वे गए, ऐसा ही कुछ सुनने को मिला।

अगले दिन दरबार में राजा ने मंत्री से पूछा—"कहिए मंत्री जी, कर्ज न चुकाने वाले किसानों को क्या दंड दिया जाए?"

मंत्री बोला—"उनकी फसल जब्त कर ली जाए।"



राजा ने आदेश दिया—"किसानों पर पहुंची राहत की रकम माफ की जाती है। किंतु बीच में हजम की गई रकम मंत्री जी भरेंगे।"

कहकर राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम की ओर देखा। वह मुसकरा रहा था, मगर मंत्री का रंग उड़ा था।

चार जोड़े

— विजया

पुराने समय में बहुत कम लोग विदेश जा पाते थे। एक देसी रियासत के राजा जयपाल यूरोप गए। वहां उन्होंने बहुत कुछ नया देखा। बढ़िया किस्म के जूते का एक जोड़ा राजा ने खरीदा। वह उन्हें बहुत पसंद आया।

राजा जयपाल रियासत में लौट आए। राजा ने सोचा कि वह ऐसे ही तीन जोड़ी जूते क्यों न बनवा लें। उन्होंने राज्य के सबसे नामी मोची को बुलवाया। साथ लाए जूते को सामने रखकर बोले—''मुझे ऐसे ही तीन जोड़े बनाकर दो— एक भूरे रंग का, दूसरा मखमली लाल तथा तीसरा नीले रंग का।''

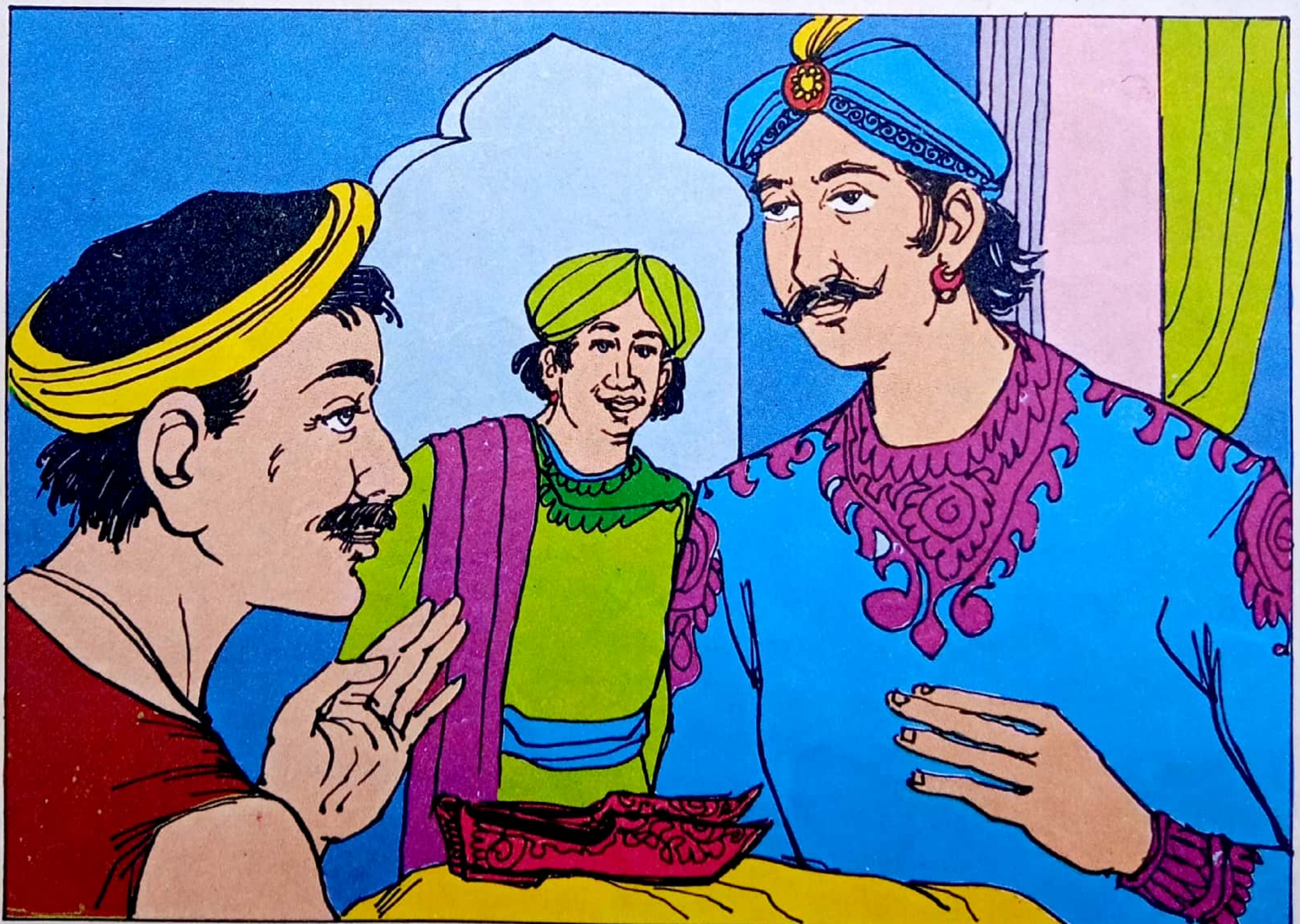
मोची ने विदेशी जूते को जांचा-परखा। फिर बोला—''गरीब परवर, ऐसा चमड़ा तो यहां मिलना मुश्किल है।''

राजा जयपाल ने कहा—''मैं कोई बहाना नहीं सुन सकता। इस जूते को ले जाओ। ठीक ऐसे ही तीन जोड़े बनाकर दो महीने में ले आना।''

मोची ने बहुत कोशिश करके एक जोड़ी जूते बनाए। वे एकदम विदेशी जूते जैसे ही थे। पर दिन की रोशनी में ध्यान से देखने पर दोनों जूतों में फर्क मालूम होता था। वह बहुत उदास और परेशान हुआ।

मोची की पत्नी चतुर थी। उसने कहा—''तुम चार जोड़ी जूते बनाओ। एक जोड़ी उसी रंग के जैसे विदेशी हैं। बाकी तीन जोड़े वैसे, जैसे राजा ने कहा। जो जूते राजा लाए हैं, उन्हें छिपा दो।''

मोची ने ऐसा ही किया। चारों जोड़ी जूते बनाकर ले गया। विदेशी जूते जैसे रंग वाले राजा को देकर बोला— ''महाराज, यह आपके और ये तीन जोड़ी मेरे।'' कहते हुए बाकी तीन जोड़ी जूते भेंट कर दिए। राजा ने उसकी खूब प्रशंसा की। ●



अपनी बकरी

—शशि प्रभा

एक चरवाहा था । सारे गांव की बकरियां चराता था । गांव के पास हरी-भरी एक पहाड़ी थी । चरवाहा बकरियां ले, वहां जाता । बकरियां घास चरतीं, वह बैठा बांसुरी बजाता ।

एक दिन कोई दैत्य उधर से गुजरा । मोटी-मोटी बकरियां देख, उसके मुंह में पानी भर आया । गुर्राकर चरवाहे से बोला—"तुम किसकी इजाजत से यहां बकरियां चरा रहे हो ? यह पहाड़ी मेरी है । जो घास बकरियों ने चरी है, तुरंत वापस करो ।"

बेचारा चरवाहा घबरा गया । भला खाई हुई घास वापस कैसे करे ? दैत्य के आगे गिड़गिड़ाने लगा । दैत्य तो यही चाहता था । बोला—"तो ऐसा करो । तुम्हारी जिस बकरी पर मैं हाथ रखूं, अपनी वह बकरी मुझे दे दो ।"

चरवाहा तब तक संभल चुका था । उसका दिमाग काम करने लगा था । दैत्य की बात वह मान गया । खुश हो, दैत्य ने सबसे मोटी बकरी पर हाथ रखा । चरवाहा चिल्लाया—"नहीं, नहीं, यह मेरी अपनी नहीं है ।"

दैत्य ने दूसरी बकरी पर हाथ रखा । चरवाहा इस बार भी चिल्लाया—"यह भी मेरी अपनी नहीं है ।"

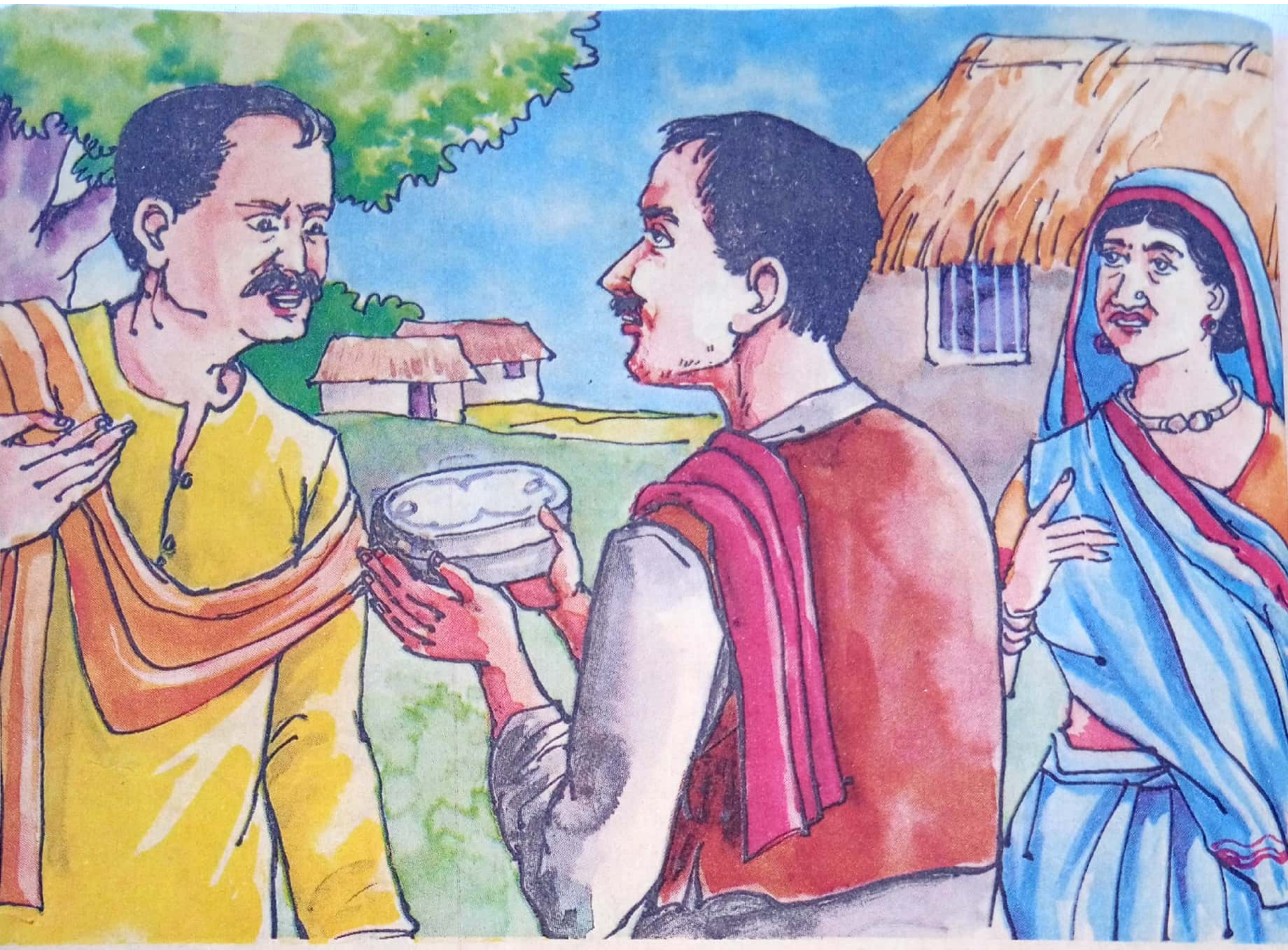
दैत्य एक के बाद एक बकरी पर हाथ रखता गया । चरवाहा एक ही उत्तर देता—"यह भी मेरी अपनी नहीं है ।"

आखिर दैत्य झुंझला उठा । बोला—"मैं सभी को खा जाता हूं ।"

चरवाहा बोला—"कैसे खाओगे ? अपनी बात याद करो । तुमने कहा था, तुम्हारी जिस बकरी पर मैं हाथ रखूं, अपनी वह बकरी मुझे दे देना । इन बकरियों में कोई बकरी मेरी नहीं, सब गांव वालों की हैं ।"

दैत्य अपना-सा मुंह लेकर चला गया । ●





चांदी की डिबिया

—लंका सुंदरम

सुखराम कहने को किसान था, पर काम दूसरे के खेतों पर करता था । मुश्किल से परिवार का गुजारा कर पाता था ।

एक दिन सुखराम को कुछ सामान लेने बाजार जाना पड़ा । वह साहूकार दीनदयाल की दुकान पर पहुंचा । साहूकार ने उसे पहचान कर कहा—"वर्षों पहले तुम्हारे पिता ने मुझसे पचास रुपए उधार लिए थे । वे रुपए न उन्होंने लौटाए, न उनके बाद तुमने । उन्हें जल्दी ही लौटा दो ।"

सुखराम भोलाभाला था । उसके पास दस रुपए ही थे । कुछ दिनों की मोहलत मांग, उदास मन घर लौट पड़ा । पत्नी ने उदासी का कारण पूछा । उसने साहूकार की बात बताई । फिर सोचने लगा—'कर्जा कैसे चुकाया जाए ? तभी उसे याद आया कि मरते समय उसके पिता ने उसे चांदी की एक डिबिया दी थी । उसे देते समय वह कुछ कहना चाहते थे, पर सिर्फ दो शब्द ही बोल पाए थे—"राजा ने. . . "

वह धीरे से उठा । कोठरी में पहुंचा । ढूंढ़ने पर उसे वह डिबिया मिल गई । मन ही मन वह बड़बड़ाया—'शुक्र है, यह वक्त पर मिल गई । इसे साहूकार को दे, कर्जे से मुक्ति पा जाऊंगा ।'

तभी उसकी पत्नी वहां आ गई । सुखराम के हाथ में वह डिबिया देखकर बोली—"दो-चार दिन सब्र करो । ले-देकर पुरखों की यही निशानी बची है । इसे मत गंवाओ । कुछ मैं काम करूंगी, कुछ तुम करना । कर्जा उतर जाएगा ।" सुखराम ने बात मान ली ।

कुछ दिन बाद साहूकार सुखराम के घर जा

पहुंचा। बोला—"मेरे रुपए अभी लौटा दो। वरना, नालिश कर दूंगा।"

साहूकार के तेवर देख, सुखराम घर में गया। चांदी की डिबिया ले, बाहर जाने लगा, तो पत्नी ने पूछा—"डिबिया को कहां ले जा रहे हो?"

—"साहूकार नालिश की धमकी दे रहा है। सोचता हूं, डिबिया दे, कर्जे से मुक्त हो ही जाऊं। रोज का उलाहना सहा नहीं जाता।"

दोनों साहूकार के पास पहुंचे। सुखराम साहूकार को डिबिया देने लगा, तो पत्नी ने टोका—"इसे खोलकर तो देख लो, शायद अंदर कुछ हो।"

सुखराम ने डिबिया खोली। उसमें एक कागज रखा था। सुखराम अनपढ़ था। कागज साहूकार को दे, पूछने लगा कि इसमें लिखा क्या है?

साहूकार कागज पढ़ते ही चौंका। फिर संभलकर बोला—"रद्दी कागज है। यूं ही किसी ने रख दिया होगा।" फिर एक पल गंवाए बिना उसने सुखराम के हाथ से डिबिया ले ली। बोला—"यह डिबिया भी पुरानी है। फिर भी कर्जे के बदले इसे ले लेता हूं।"

साहूकार डिबिया लेकर चल पड़ा। वह कागज भी उसने डिबिया में रख लिया। सीधा पहुंचा राज दरबार में। राजा का अभिवादन कर, उसने वह डिबिया उसके सामने रख दी।

राजा ने चौंककर उस डिबिया को देखा। खोला। कागज पढ़ा। फिर साहूकार से पूछा—"तुम मेरे पिता के यहां क्या थे?"

साहूकार परेशान। इस कागज से राजा के प्रश्न का क्या सम्बंध? राजा ने दोबारा पूछा, तो साहूकार के माथे पर पसीना आ गया। कोई उत्तर देते न बना।

राजा उसे देख, मुसकराया। फिर बोला—"कल आना।"

साहूकार चुपचाप चला गया।

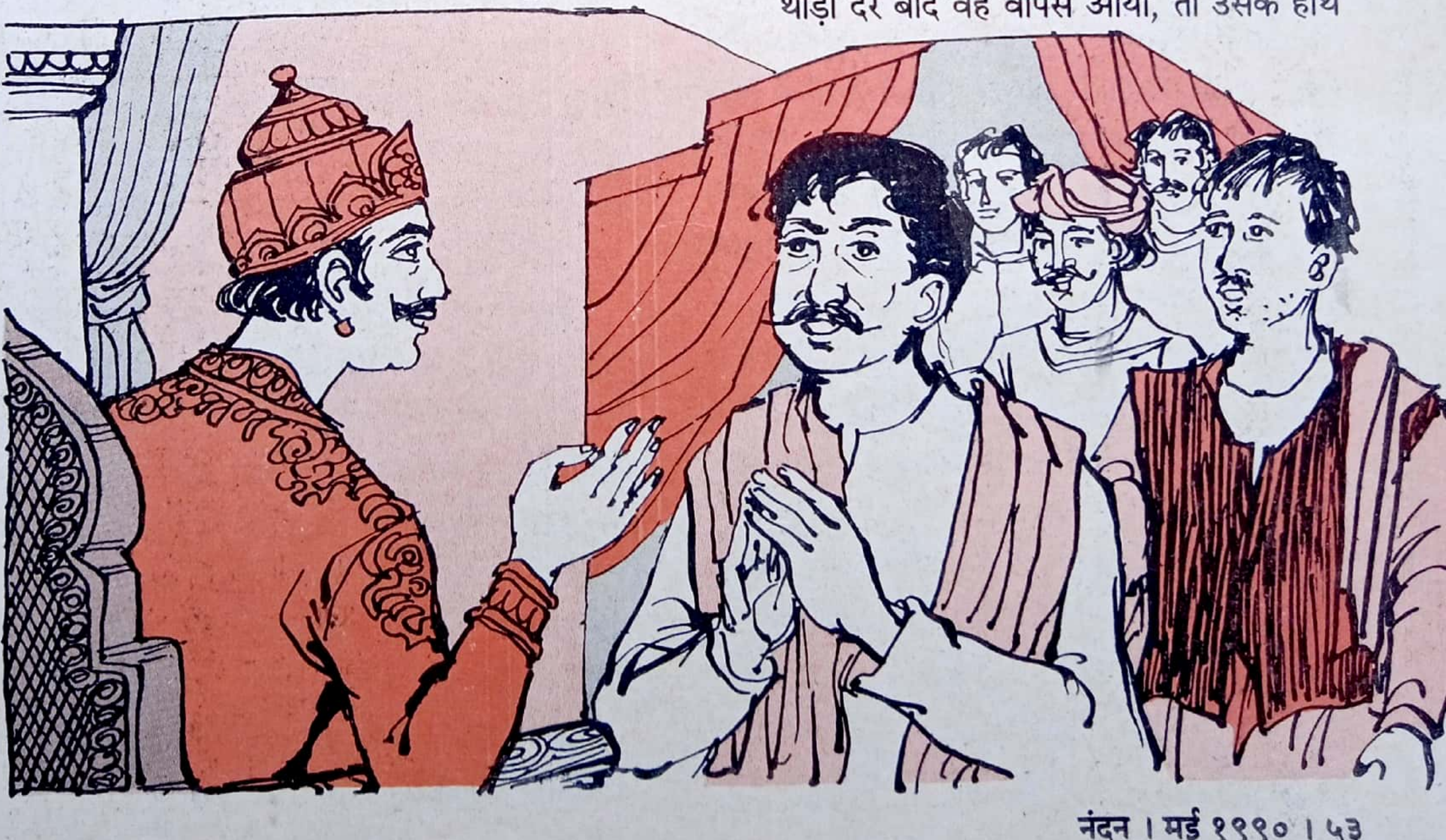
अगले दिन जब वह दरबार में पहुंचा, तो सुखराम भी वहीं था। साहूकार मन ही मन घबराया। उसने सोचा—'सुखराम ने जरूर कह दिया होगा कि यह डिबिया उसकी है।'

तभी राजा ने साहूकार से पूछा—"क्या यह डिबिया तुम्हें सुखराम ने दी थी?"

"हां, महाराज!"—कहकर साहूकार ने राजा को अपने कर्जे की सारी बात बता दी।

राजा ने मंत्री को पास बुला, धीरे-से उसके कान में कुछ कहा। मंत्री वहां से चला गया।

थोड़ी देर बाद वह वापस आया, तो उसके हाथ



में भी बिलकुल वैसी ही एक डिबिया थी। मंत्री द्वारा लाई गई डिबिया खोली गई। उसमें भी एक कागज रखा था। उस पर कुछ लिखा था। राजा ने पढ़कर सुनाया—'मैंने अपने कुछ वफादार सेवकों को ऐसी ही डिबियां भेंट दी हैं। उन पर कभी मुसीबत आए, तो राज्य उनकी मदद करेगा।'

पत्र सुनाकर राजा ने साहूकार को डपटा—"सुखराम से तुमने यह डिबिया लेकर उसका अधिकार छीनने की भी कोशिश की। जरूर तुम्हारी नीयत खोटी थी। तुम्हें दंड क्यों न दिया जाए ?"

—"गलती हो गई महाराज, मेरे मन में लालच आ गया था। मुझे अब धन नहीं चाहिए। सुखराम की ईमानदारी के आगे मैं बहुत ही शर्मिंदा हूं।"

राजा ने सेठ को छोड़ दिया। घोषणा कराई—जिन-जिन के पास चांदी की ऐसी ही डिबिया हो, वे दरबार में उपस्थित हों।

घोषणा सुन, कुछ व्यक्ति दरबार में पहुंचे। कुछ गरीब थे, कुछ अमीर। सबने अपनी-अपनी डिबिया राजा के सामने रख दी। हर डिबिया खोली गई। प्रत्येक में से कागज निकले। उन सब पर यही लिखा था—'मुसीबत आए, तो दरबार में आ जाना।'

राजा बोले—"यह पत्र मेरे पिता का है। एक बार उन पर संकट के बादल मंडराए। उनके कुछ सेवकों ने प्राणों की बाजी लगाकर उनकी रक्षा की। ऐसी डिबियां उन्हीं स्वामिभक्त सेवकों को दी गई थीं। मैं न जाने कब से इन व्यक्तियों की खोज में था। कल साहूकार ने डिबिया मेरे सामने रखी, तो इस डिबिया के असली मालिक सुखराम का पता लगवाया। आज से सुखराम के साथ आप सभी भी इस राज्य के विशिष्ट नागरिक हैं। आपको राज्य की ओर से प्रति मास पांच सौ स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी।"

दरबारियों ने राजा की इस घोषणा का स्वागत किया। उससे भी अधिक स्वागत डिबिया लाने वाले अमीर व्यक्तियों का हुआ। उन सभी ने अपनी-अपनी राशि राज्य की पाठशालाओं को दान देने की घोषणा जो की थी। ●

वीणा के तार

—प्रेमशीला गुप्ता

गौतम बुद्ध के जमाने की घटना है। एक राजा की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। राजा के पुत्र का नाम श्रोण था। श्रोण बचपन से ही उद्दंड स्वभाव का था। वह न बड़ों की आज्ञा मानता था और न छोटों को प्यार करता था। प्रजा उससे बहुत परेशान थी। राजा ने अपने इकलौते पुत्र को सम्भालने-सुधारने का हर सम्भव प्रयास किया, पर सब व्यर्थ गया। राजकुमार जैसे-जैसे बड़ा होता गया, उसकी उद्दंडता बहुत बढ़ती गई।

पुत्र की ओर से निराश हो, राजा ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने का निश्चय किया। गौतम बुद्ध को बुलाने के लिए उसने निमंत्रण भेजा। निमंत्रण पाकर बुद्ध आ गए। तथागत के साथ उनके शिष्य भी आए। प्रवचन के लिए राजकीय उद्यान में एक बड़ा शामियाना ताना गया। विशाल जनसमूह उमड़ पड़ा तथागत का प्रवचन सुनने के लिए। राजकुमार श्रोण भी आया। बुद्ध की वाणी अत्यंत प्रभावशाली थी। उनके शब्द मानो अमृत की वर्षा करने लगे। श्रोता मुग्ध थे। राजकुमार श्रोण भी चकित हुआ। वह अपनी मौज-मस्ती की दुनिया से हटकर पहली बार किसी महापुरुष का प्रवचन सुनने आया था। प्रवचन का उस पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह बुद्ध के चरणों में गिर गया।

तथागत मुसकरा उठे। श्रोण पर उन्होंने अपनी स्नेहिल दृष्टि फेंकी। फिर उसे बौद्ध धर्म की दीक्षा भी दे दी। शिष्यों ने आश्चर्य भी किया, पर बुद्ध बोले—"मानव मन दोलक की भांति चलता रहता है। मनुष्य जितना हिंसक होगा, उतना ही एक दिन उदार भी बन जाएगा। राजकुमार का अपनी मंडली में स्वागत करो। इसके मन में बदलाव आया है। यह जरूर बदलेगा।"

तथागत की वाणी सत्य साबित हुई। राजकुमार इस भिक्षु मंडली में आकर एकदम बदल गया। अपने

पिछले कर्मों पर उसे बड़ा अफसोस होता था। वह प्रायश्चित करना चाहता था। वह सारे-सारे दिन भोजन नहीं करता था। जाड़े के दिनों में भी शरीर पर अधिक वस्त्र पहनने छोड़ दिए थे। वह नींद भी लेना नहीं चाहता था। रात भर बैठा, ध्यान में मग्न रहता।

उसके प्रायश्चित की खबर तथागत को मिली। तथागत राजकुमार श्रोण से मिलने आए। श्रोण सूखकर कांटा हो चुका था। शरीर पर हड्डी भर रह गई थी। तथागत ने महसूस किया कि राजकुमार के शरीर से दुर्गंध भी आ रही है। बुद्ध ने पूछा—"तुमने स्नान नहीं किया कुमार ?"

—"नहीं प्रभु। आपकी शरण में आने से पूर्व मैंने क्या-क्या नहीं किया। इत्रों की बौछार की और गुलाब जल से नहाया। अब सब सुख छोड़ता जा रहा हूं।"

तथागत हंसे और बात बदलकर बोले—"मैंने सुना है कि तुम वीणा बजाने में निपुण हो। क्या वीणा के तार ढीले करने से स्वर लहरी फूटती है ?"

—"नहीं भगवन्, तार ढीले होंगे, तो संगीत कैसे पैदा होगा ?"

"तब तो तारों को बहुत कसना पड़ता होगा ?" —बुद्ध पूछने लगे।

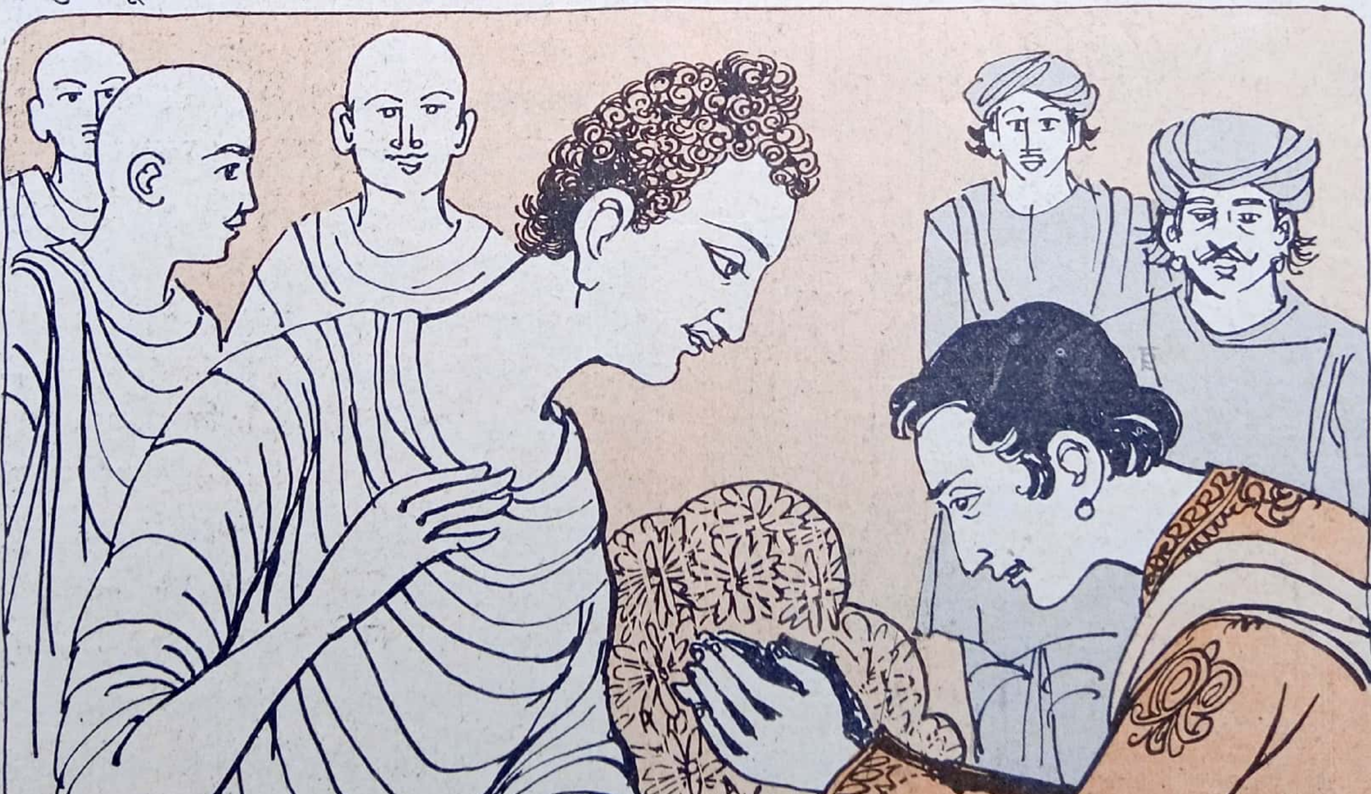
"नहीं-नहीं, अधिक कसने से भी संगीत पैदा नहीं हो सकता ? तब तो तार ही टूट जाएंगे।" —राजकुमार ने कहा।

—"अच्छा ! तब यह बताओ कि वीणा से तुम मधुर संगीत कैसे निकालते हो ?"

राजकुमार श्रोण तथागत के प्रश्न अत्यंत ध्यान से सुन रहा था। उसने कहा— "वीणा से मधुर संगीत निकालने के लिए इसके तार न ढीले रखना चाहिएं और न अधिक कसे हुए।"

बुद्ध गद्‌गद् होकर राजकुमार श्रोण को देखने लगे। बोले—"राजकुमार, तब समझ लो, यह जीवन भी ठीक वीणा की भांति ही है। जीवन की वीणा में भी तभी मधुर संगीत गूंज सकता है, जब इसके तार न अधिक कसे हों और न अधिक ढीले हों।"

राजकुमार चुप रहा। बुद्ध फिर बोले—"तुम शरीर को इस तरह क्षीण करके जीवन को कम कर रहे हो। यह सोचो-तपस्या बिना शरीर के क्या सम्भव है? जीवन में जो भी कुछ पाना चाहते हो, उसके लिए स्वस्थ शरीर होना आवश्यक है।" अब राजकुमार सारी बात समझ गया। वह फिर से नई साधना में लग गया। ●



बातें रंग-बिरंगी

कान का बुंदा : आजादी से पहले भारत में राजे, महाराजे और नवाब क्रिकेट खेलते थे। पटियाला के महाराजा भूपिंदर सिंह ने नौ वर्ष की उम्र में ही क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था। सन् १९२६ की बात है। एम.सी.सी. की क्रिकेट टीम भारत आई। उस समय महाराजा पटियाला काफी मोटे थे। उनकी खेलने की उम्र बीत चुकी थी। उन्होंने इंग्लैंड की एम.सी.सी. टीम की ओर से खेलने की इच्छा प्रकट की। मैच ईडन गार्डन में खेला जा रहा था। भारतीय एकादश और एम.सी.सी. के बीच मुकाबला हो रहा था। जिस समय महाराजा पटियाला बल्लेबाजी कर रहे थे, उस समय उन्होंने कान में लगभग दो लाख रुपए का कीमती बुंदा पहन रखा था। अचानक बुंदा कहीं गिर गया। खेल रोक दिया गया। मैदान में सभी बुंदा खोजने लगे। इंग्लैंड के चोटी के सभी खिलाड़ियों ने ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की। लेकिन बुंदा नहीं मिला। बुंदा कहीं गिरा होता तो मिलता। कान से गिरकर वह बुंदा महाराजा की दाढ़ी में अटक गया था।

क्रिकेट के मैदान में शेर : एक गेंद पर अधिक से अधिक छह रन बन सकते हैं। इससे अधिक रन बन ही नहीं सकते। एक बार ऐसा भी हुआ कि एक गेंद पर बल्लेबाजों ने दौड़-दौड़कर ४९ रन बनाए। दक्षिण अफ्रीका की दो टीमों के बीच मैच खेला जा रहा था। एक बल्लेबाज ने शाट लगाया। क्षेत्र रक्षक गेंद पकड़ने के लिए दौड़े। गेंद तो रुक गई, लेकिन कोई उसे उठा नहीं पाया। दोनों खिलाड़ी दौड़ते चले गए। उन्होंने ४९ रन बना लिए। इस अजीबोगरीब स्थिति का कारण यह था कि गेंद के पास एक शेर खड़ा था। यह शेर एक सर्कस कम्पनी से छूटकर सीधा क्रिकेट के मैदान में आ पहुंचा था। खड़ा-खड़ा खेल का आनंद उठा रहा था। सर्कस कम्पनी के लोग उसे पकड़ ले गए, मगर तब तक रन तो बन ही चुके थे।



रूसी कविता में रामचरित मानस : इन दिनों सोवियत संघ में श्री ए.पी. बारान्निकोव की जन्म शती मनाई जा रही है। बारान्निकोव को भारत से बेहद प्रेम था। उन्होंने 'रामचरित मानस' का रूसी कविता में अनुवाद किया। लेनिनग्राद में भारतीय भाषाओं को पढ़ाने का केंद्र खोला। आज भी यहां हिंदी, उर्दू, मराठी और पंजाबी भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। बारान्निकोव की कब्र पर 'रामचरित मानस' की चौपाइयां लिखी हुई हैं।

जूले रीमे कप के बाद फीफा कप : फ्रांस का वकील था जूले रीमे। एक दिन उसके मन में यह विचार आया कि क्यों न फुटबाल की एक विश्व कप प्रतियोगिता की जाए। १९३० में जब विश्व कप (फुटबाल) प्रतियोगिता शुरू हुई, तो विजेता को जो कप दिया जाता था—वह 'जूले रीमे' कप था। यह एक फुट ऊंचा था और इसमें ९ पौंड ठोस सोना था। ब्राजील ने तीन बार इस कप को जीता और सदा-सदा के लिए अपना अधिकार कर लिया। अब उसके स्थान पर नया कप तैयार किया गया, जिसे 'फीफा कप' कहते हैं।

फुटबाल जगत में आज जिन देशों का दबदबा है, वहां पेशेवर खिलाड़ियों का बोलबाला है। यही कारण है कि जो विश्व कप में खेलते हैं, ओलम्पिक से हाथ धो बैठते हैं। क्योंकि ओलम्पिक में पेशेवर खिलाड़ियों को भाग लेने की अनुमति नहीं मिलती। भारत ने इस टूर्नमिंट में कभी भाग नहीं लिया। **–योगराज थानी**

Scanned with CamScanner

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. देर न करो,—बता दो। (अब/सब)
६. वह चुपचाप—रहा था। (चल/मल)
१०. ऋषि बैठे हुए—कर रहे थे। (तप/जप)

बाएं से दाएं

२. तुम— क्यों गए थे, यह नहीं बताया। (डर/घर)
३. कुछ देर बाद राजन को भी—— आ गया। (होश/जोश)
४. देख लेना इसे—— कर ही दम लूंगा। (हरा/हटा)
५. दक्षिण अमरीका की एक प्राचीन सभ्यता
७. बहुत दूर से आ रहा हूं, मुझे भी—— दो। (मिला/खिला)
८. इसके बाद उसने बाबा को—— नहीं देखा। (कहीं/कभी)
९. बेटी, तू अभी तक—— रही है। (रो/सो)
११. यह—— रोटी कैसे खाई जाएगी। (रूखी/सूखी)
१२. हाल ही में स्वाधीन हुआ देश।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली २५७

नाम ________

आयु ______ पता ________

____



नं. ज्ञा. प. २५७

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन पाक्षिक

बालहंस



अप्रैल [द्वितीय]' 90

- '**टूटू हंस**' और '**सोनतोता**' की मजेदार कहानियों के साथ '**देवपुत्र अनादि**', सुबह का भूला और तीन हास्य कथाओं को सदा याद रखोगे...
- सुगंधित केसर और हवाई जहाज के ब्लैक बाक्स को जानो
- '**ऊर्जा के नए साधन**' और '**हवा की बातें**' भी हैं।
- साथ में हैं आठ चित्रकथाएं
- महाभारत के प्रसिद्ध पात्र '**विदुर**' पर नई चित्रकथा।
- ठेलाराम, गबलू और बिज्जू के नये कारनामे।

मई [प्रथम]' 90

- महाभारत [चित्रकथा] के पांचवें भाग की पहली किस्त
- दोस्ती, तीन पत्ति, नया सवेरा, नई दिशा व संगम निवास जैसी एक से बढ़कर एक प्रेरणादायक कहानियां
- रोमांचक खेलः बेसबाल
- हवा की बातें और ऊर्जा के नए साधन की अगली कड़ियां
- ग्रीष्म अवकाश के लिए पांच बड़ी प्रतियोगिताओं की घोषणा...
- साथ में नई चित्र कथाएं व नई प्रतियोगिताएं और सभी स्थाई स्तंभ



पांच अंकों तक- हर अंक में एक विशेष प्रतियोगिता

गर्मी की छुट्टियों में

बुद्धि लगाओ ☐ पुरस्कार पाओ

विस्तृत विवरण- मई [प्रथम]'90 के अंक में

JPC/115/90

कसैला अनार

—कमला चमोला

किसी नगर में दो भाई रहते थे। वे बड़े ही नेक व रहम दिल थे। मुसीबत में सबकी सहायता करने को तत्पर रहते। पर थे बड़े गरीब। उनकी दाल-रोटी ही मुश्किल से चल पाती थी। सुबह होते ही वे अपनी-अपनी कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर निकल जाते। दिन भर लकड़ियां काटते। शाम को लकड़ियों को बेचने से जो पैसा मिलता, उसी से उनका गुजारा चलता।

सदा की तरह एक दिन वे जंगल में पहुंचे। उन्होंने देखा, एक बूढ़ा बौना लकड़ियां काट रहा है। अपनी छोटी-सी कुल्हाड़ी से लकड़ियां काटने में उसे बड़ी तकलीफ हो रही थी। उसे देख, दोनों भाइयों को दया आ गई। बड़ा भाई बोला—"लाओ बाबा! हम काट दें तुम्हारी लकड़ियां।" बौना मान गया। उन दोनों ने बौने के लिए लकड़ियां काटीं और गट्ठर बांधकर रख दिया। इसके बाद वे बोले—"बाबा, तुम्हारा घर कहां है? हम लकड़ियां वहां पहुंचा देते हैं।" बौने ने सामने पहाड़ी की ओर इशारा किया, जिसकी चोटी पर एक झोंपड़ी बनी थी। चढ़ाई चढ़ते हुए वे बौने की झोंपड़ी तक गए और लकड़ियां वहां जाकर रख दीं। बौना कृतज्ञता भरे स्वर में बोला—"तुम लोग बड़े ही भले हो। तुमने मेरी इतनी सहायता की, पर मेरे पास तुम्हें देने को कुछ भी नहीं है। केवल अनार का एक बीज है। लो, इसे जाकर अपने आंगन में बो देना।"

बूढ़े बौने को धन्यवाद देकर दोनों भाई घर आ गए। घर आकर अपने आंगन की कच्ची जमीन में उन्होंने बीज बो दिया। कुछ ही दिनों में बीज से अंकुर फूट आया। धीरे-धीरे पौधा बड़ा होने लगा। दोनों भाई बड़े जतन से पौधे को पानी देते थे। कुछ समय बाद अनार का वह पौधा पेड़ बन गया। वह हरी चमकीली पत्तियों से भर गया। वे सोच रहे



थे—"अब इसमें बहुत-से अनार लगेंगे।"

जब मौसम आया, तो उस पेड़ में बस एक ही फूल लगा। यह देखकर दोनों भाई निराश हो गए। उस फूल में एक ही अनार लगा। अनार जब बड़ा हो गया, तो उन्होंने टहनी से अनार तोड़ा और उसे काटा। उन्होंने खाने के लिए अनार के दाने मुंह में डाले, तो उनका मुंह कसैला हो उठा। तुरंत थू-थू करके उन्होंने दाने थूक दिए। फिर उस कटे हुए अनार को कूड़े में फेंक दिया।

छोटा भाई बोला—"यह कैसा बीज दिया था बौने ने? एक ही अनार लगा और वह भी कड़ुआ निकला।"

"इस पेड़ को काट देते हैं। बेकार ही आंगन में जगह घेर रहा है।"— बड़े भाई ने कहा।

"नहीं, रहने दो, क्या पता अगले वर्ष मीठे फल आ जाएं। कई बार पहला फल ठीक नहीं होता।" छोटे भाई ने कहा। दोनों भाई फिर उसकी सेवा करने लगे। उन्हें उम्मीद थी कि अगले वर्ष पौधे में कई मीठे अनार लगेंगे। जब फूल लगने का समय आया, तो उनके अनार में फिर एक ही फूल आया। एक ही फूल लगा



देखकर वे फिर निराश हो गए। उस फूल में अनार लगा और धीरे-धीरे बड़ा होने लगा।

एक दिन नगर का एक व्यापारी वहां से गुजर रहा था। वह कुबड़ा था। चलते-चलते वह थक गया तो उन भाइयों के घर के चबूतरे पर बैठ गया। दोनों भाई बाहर आए। व्यापारी का स्वागत करते हुए बोले—"आइए, घर के अंदर पधारिए।"

"नहीं-नहीं, मैं जरा दम लेने को यहां बैठा था। रथ का पहिया खराब हो गया था।रथवान उसे ठीक करवा रहा है। अभी रथ आ जाएगा, तो मैं चला जाऊंगा।" —व्यापारी ने कहा। उन दोनों की समझ में नहीं आ रहा था कि वे इतने बड़े व्यापारी का स्वागत कैसे करें? घर मे कुछ था ही नहीं। बड़ा भाई बोला—"हम गरीब हैं सेठ जी, समझ में नहीं आ रहा, आपको क्या खिलाएं?"

उनका संकोच और विनम्रता देख, व्यापारी मुसकराकर बोला— "तुम्हारे अनार के पेड़ में जो अनार लगा है, वह ही दे दो।"

—"लेकिन इस अनार का फल मीठा न होकर कसैला है। आप कैसे खाएंगे?"

"खा लूंगा, पहले मुझे वह अनार लाकर तो दो।" —व्यापारी बोला।

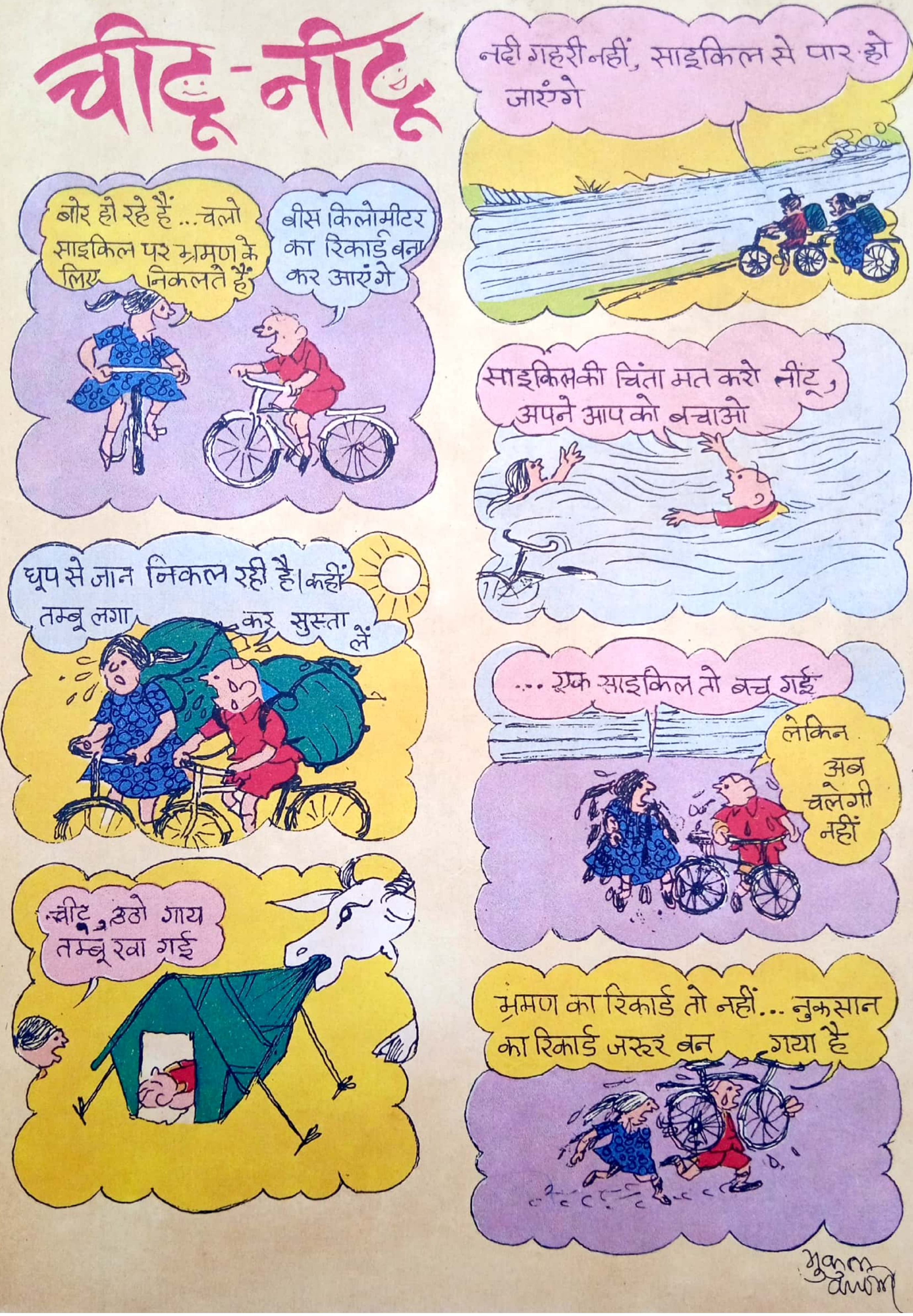
सेठ की जिद पर छोटे भाई ने अनार तोड़ा और व्यापारी को दे दिया। व्यापारी ने अनार के दाने मुंह में डाले। दाने सचमुच कसैले थे,पर व्यापारी उन भाइयों का मन रखना चाहता था। इसलिए स्वाद से दाने खाने लगा। अभी उसने आधा ही अनार खाया था कि उसे अपने शरीर में एक नई स्फूर्ति और जोश का संचार होता महसूस हुआ। उसे लगा, उसका कूबड़ भी ठीक होता जा रहा है। वह तुरंत खड़ा हो गया। बड़ा भाई यह देख विस्मय से बोला—"आपका कूबड़ तो एकदम गायब हो गया।"

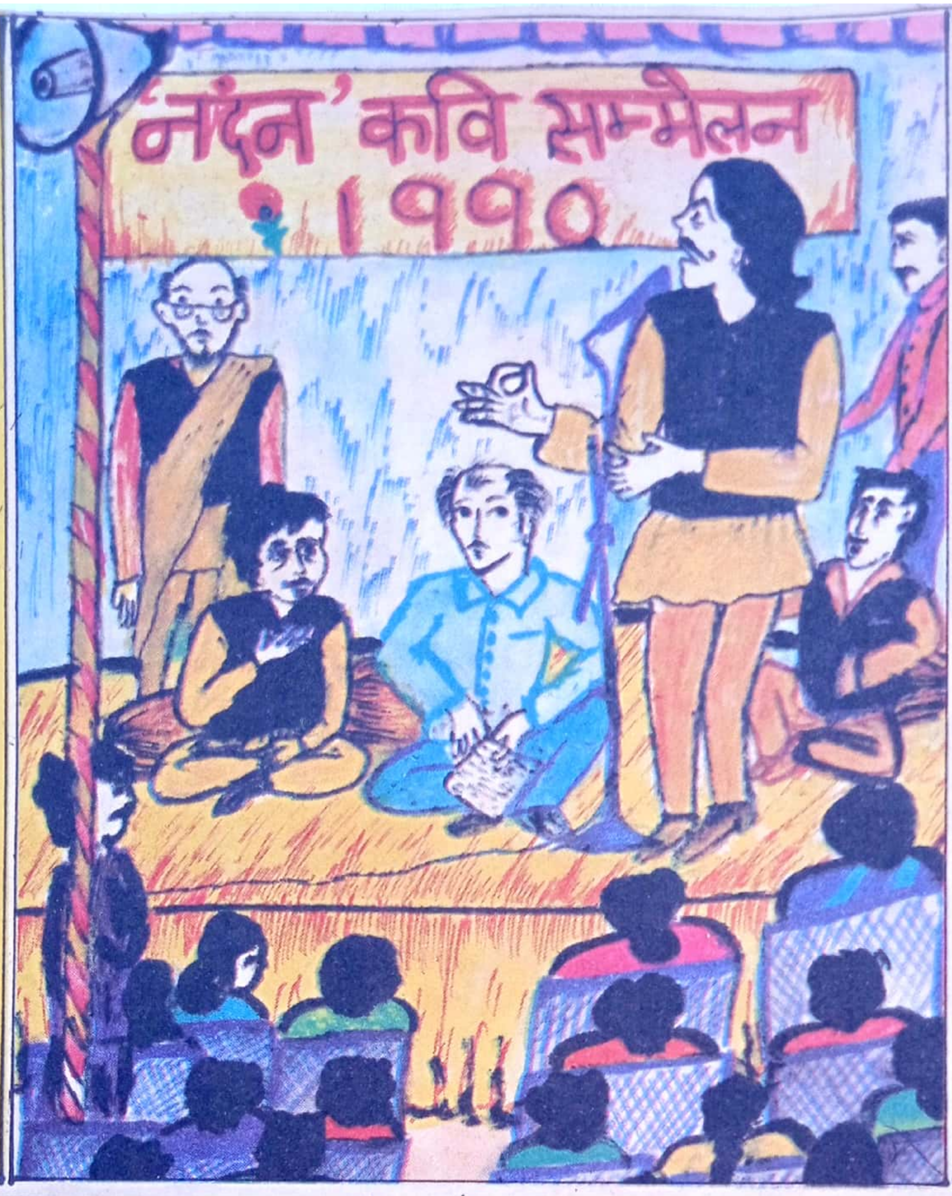
"हां!"— व्यापारी खुशी से भर उठा— "यह सब इस चमत्कारी अनार के कारण हुआ है। बाकी आधा अनार मैं अपनी पत्नी को खिलाऊंगा। वह कई साल से दमे से पीड़ित है। क्या पता, यह अनार उसे भी अच्छा कर दे?" दोनों भाइयों को धन्यवाद दे, व्यापारी अपने घर चला गया। अगले दिन वह फिर उनके घर आया। एक थैली बड़े भाई के हाथ में देकर बोला—"इस थैली में एक हजार स्वर्ण मुद्राएं हैं। इसे मेरा उपहार समझकर स्वीकार कर लो। तुम्हारा अनार तो कोई अद्‌भुत चीज है। मेरी पत्नी का दमा भी उसे खाने से जाता रहा। अब वह पूर्ण स्वस्थ है। अगले वर्ष इस अनार को संभालकर रखना, यह चमत्कारी फल है।"

मुहरों की थैली देकर व्यापारी चला गया। दोनों भाई स्तब्ध थे। उस कसैले से अनार के बदले कोई उन्हें एक सहस्त्र स्वर्ण मुद्राएं दे जाएगा, इसकी तो उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

उन स्वर्ण मुद्राओं से उन्होंने व्यापार शुरू कर दिया। व्यापार खूब चल निकला। वर्ष भर में ही उनकी गिनती समृद्ध लोगों में होने लगी।

चमत्कारी अनार की बात दूर-दूर तक फैल चुकी थी। लोग पहले से ही मुंह मांगे दाम देकर भविष्य में लगने वाले अनार को खरीदना चाहते थे, परंतु दोनों भाइयों ने फैसला कर लिया,वे अनार बेचेंगे नहीं। उसे गरीब बीमार लोगों को मुफ़्त में ही खाने को देंगे।


चीटू-नीटू
बोर हो रहे हैं ...चलो साइकिल पर भ्रमण के लिए निकलते हैं
बीस किलोमीटर का रिकार्ड बना कर आएंगे
धूप से जान निकल रही है। कहीं तम्बू लगा कर सुस्ता लें
चीटू, उठो गाय तम्बू खा गई
नदी गहरी नहीं, साइकिल से पार हो जाएंगे
साइकिलकी चिंता मत करो नीटू, अपने आप को बचाओ
...एक साइकिल तो बच गई
लेकिन अब चलेगी नहीं
भ्रमण का रिकार्ड तो नहीं... नुकसान का रिकार्ड जरूर बन गया है



पुरस्कृत चित्र

कौशल गुप्ता, ११ वर्ष, बृजवासी क्लिनिक, मेन मार्केट, मुजेसर, एन.आई.टी., फरीदाबाद (हरि.)

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे— कु. श्यामा वर्मा, नंदिनी नगर (म.प्र.); अजयसिंह रघुवंशी, बरेली; सुनीता रानी, दिल्ली; राजकुमार सिंह, तिलैया, (बिहार)

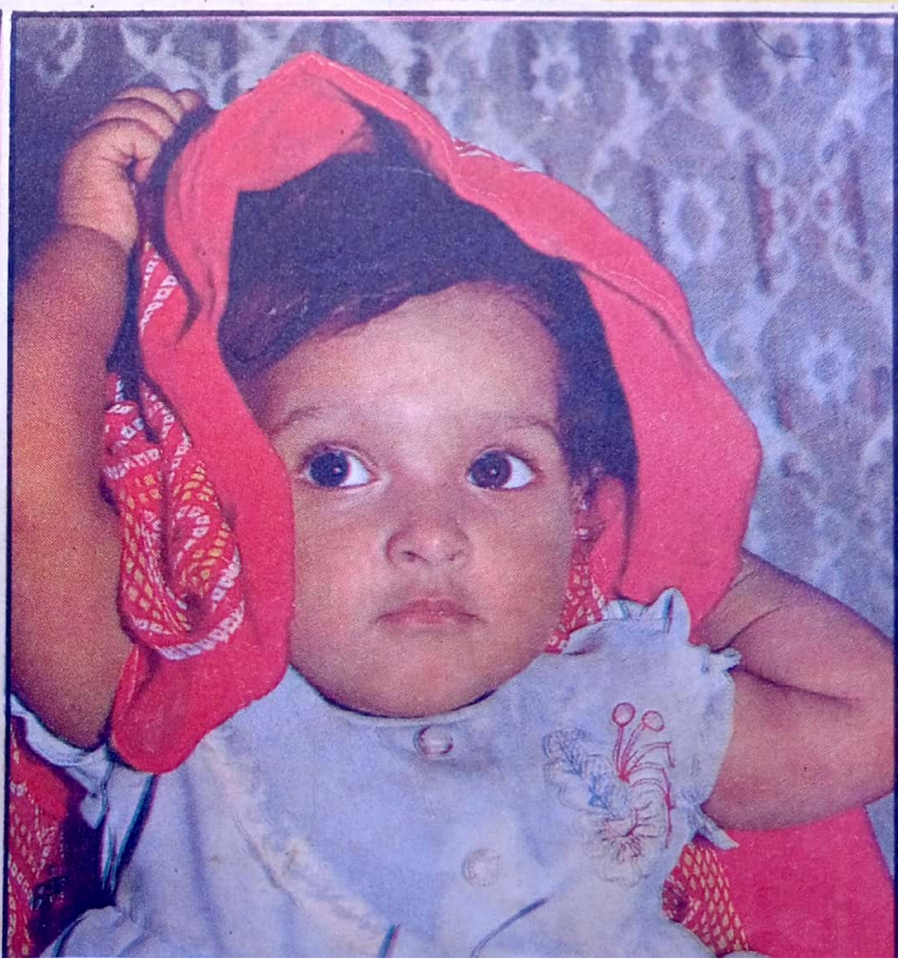
शीर्षक बताइए

गरमी आई, इसे उतारो :

—इस चित्र के इसी तरह के कई शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा-सा शीर्षक सोचिए। पोस्टकार्ड पर लिखकर १० मई, १९९० तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर इनाम दिए जाएंगे।

परिणाम : जुलाई '९०

चित्र : आर.के. गोयल





दिव्यांग मानिक अनुप्रिया पुश्किन पूजा

पुरस्कृत कथा :

डर भागा

तरुण बहुत होशियार लड़का था। उसे तिलस्मी किताबें पढ़ने का शौक था। ऐसी किताबों से उसके मन में भूत-प्रेतों का डर बैठ गया। वह किसी भी चीज को देखकर डर जाता और चीख-पुकार मचाने लगता। उसके माता-पिता समझ नहीं पाते थे कि क्या करें? तरुण के मन में बैठे डर को कैसे निकालें?

एक दिन तरुण का बड़ा भाई एक बड़ी-सी घड़ी लाया। जब तरुण सो गया, तो उसने उसके कमरे में वह घड़ी रख दी। सुबह तरुण उठा, तो उसे आश्चर्य हुआ। 'यह बड़ी-सी डरावनी घड़ी यहां किसने रख दी?'— वह सोचने लगा। उसने जाकर मम्मी-पापा और तरुण से पूछा, तो कोई जवाब नहीं मिला। थोड़ी देर में तरुण घड़ी को भूल गया। उसके कुछ दोस्त आ गए। वह उनके साथ खेलने लगा। पूरा दिन ऐसे ही बीत गया। रात को अचानक तरुण की आंखें खुल गईं। उसे लगा, एक भयानक काला राक्षस उसकी तरफ बढ़ रहा है। वह जोर-जोर से घंटे बजा रहा है। उसके मुंह में दो नुकीली तलवारें लगी हुई हैं। वह चीखकर उठ बैठा। मम्मी-पापा और अरुण दौड़े आए। तरुण की बात सुनकर अरुण हंसने लगा—"अरे तरुण! यह तो वही घड़ी है। सुबह से तुम्हारे कमरे में रखी है।"

"घड़ी, नहीं-नहीं यह भयानक राक्षस है। अपनी तलवारों से मुझे मार डालेगा।"-तरुण सोते-सोते चीखा।

"नहीं तरुण, तुम डर गए हो। जिन्हें तुम तलवारें समझ रहे हो, वे तो सुइयां हैं। तुम तो वैसे ही डर जाते हो। जिस तरह तुमने इस घड़ी को राक्षस समझ लिया, उसी तरह तुम किसी भी चीज को भूत समझ लेते हो। चलो, अब सो जाओ।"

सुबह उठ कर तरुण खूब हंसा। लेकिन अरुण को खुशी थी कि वह अपने भाई के मन से डर निकालने में कामयाब हो गया था। अब तरुण ने डरावनी किताबें पढ़नी हमेशा के लिए छोड़ दी थीं।

—नीता धनशानी, इंदौर

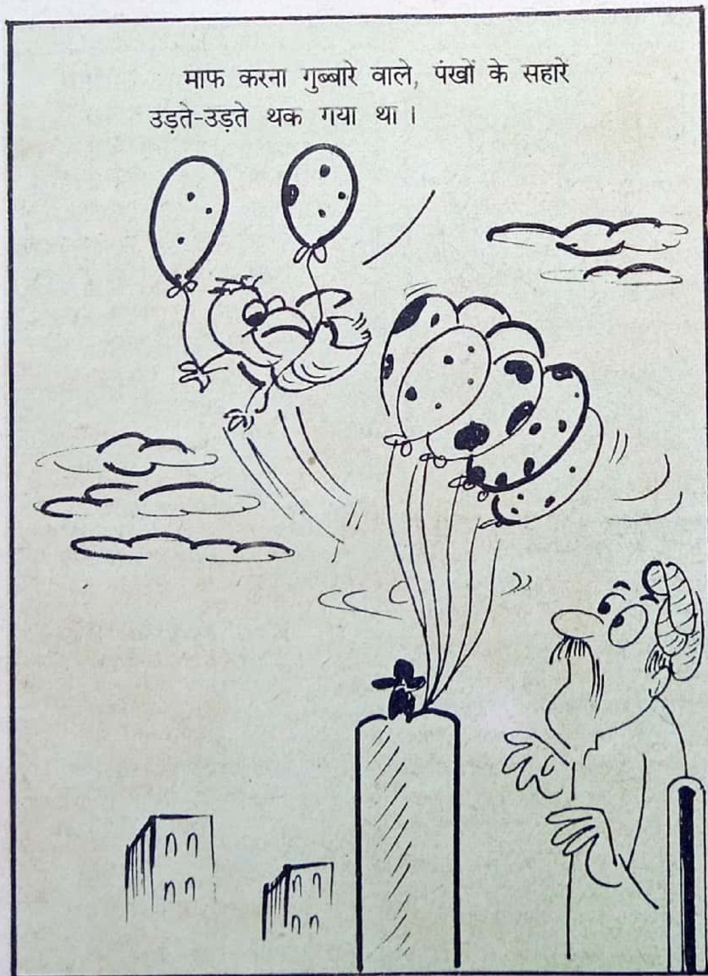
इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : अमितोष गर्ग, बदायूं; संतोषकुमार गुप्ता, लालपुर; राजीव गुप्ता, जयपुर।

नंदन ज्ञान-पहेली
परिणाम : २५५



इस बार सर्वशुद्ध हल किसी का नहीं आया । एक गलती वाले ७ प्रतियोगियों में प्रत्येक को १४५ रुपए पुरस्कार के रूप में भेजे जा रहे हैं ।

१. प्रशांत पांडे, देहरादून; २. अभिषेककुमार वर्मा, नालंदा; ३. रुचि भारद्वाज, दिल्ली; ४. मनोज शर्मा, अजमेर; ५. शशि गंगवार, गाजियाबाद; ६. पुनीत नीखरा, लश्कर, ग्वालियर; ७. चंद्रकला जैन, अजमेर ।





सोते रहो

एक राजा काफी दुष्ट स्वभाव का था । अपनी प्रजा को सताने व अत्याचार करने में उसे आनंद मिलता था । प्रजा उसकी ज्यादतियों से परेशान थी ।

एक बार, एक सिद्ध महात्मा उसके दरबार में आए । राजा ने उनसे कहा—''मैंने अपने जीवन में जो चाहा, सो किया है महात्मन ! अब मैं चाहता हूं कि अगले जन्म में भी मुझे ऐसा ही राजपाट, बल-वैभव और सुख मिले । क्या आप इसका कोई उपाय मुझे सुझाएंगे ? मगर त्याग-तपस्या और दान-पुण्य का झंझट मुझसे नहीं होगा । उपाय कोई सरल-सा हो ।''

महात्मा ने कुछ सोचकर सुझाव दिया—''राजन, आप दिन भर सोया कीजिए । जितना अधिक आप सोएंगे, उतना ही अधिक पुण्य आपको प्राप्त होगा । समाधि और जप-तप से योगी को जो पुण्य मिलता है, वही आपको सोने से मिलेगा । आपके लिए दिन-रात सोना ही सबसे उत्तम तपस्या है !'' महात्मा जी की बात सुनकर राजा बहुत खुश हुआ । उसने उनकी खूब आवभगत की ।

जब महात्मा राज-दरबार से बाहर आए, तो उनके एक शिष्य ने पूछा—''यह राजा अपनी प्रजा को खूब सताता है । इसे तो आपको शाप देना चाहिए था और फिर महात्मन, भला सोने से भी कहीं पुण्य मिलता है ? आपने राजा को ऐसी शिक्षा कैसे दे दी गुरुवर ?''

महात्मा ने कहा—''वत्स, मैंने राजा को उचित शिक्षा दी है । अच्छे लोगों का पुण्य सोने से भले ही न बढ़े, लेकिन दुष्टों व अत्याचारियों का तो बढ़ता ही है । क्योंकि सोते समय वह दुष्कर्म से बचे रहते हैं । जितनी देर यह दुष्ट राजा सोएगा, उतनी देर ही सही, लोग इसकी ज्यादतियों व अत्याचारों से बचे रहेंगे । क्या इससे पुण्य नहीं मिलेगा ?'' —**अशोक श्रीश्रीमाल**

शीर्षक बताइए : परिणाम



मार्च अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

नन्हा-मुन्ना नेता हूं,
सभी का चहेता हूं ।

—निमिष गौतम, एटबनी लाज, तड़ागी हाउस, तल्ली ताल, नैनीताल (उ. प्र.) ।

काला कुर्ता, लाल गुलाब,
कहते हैं सब इन्हें नवाब ।

दिलप्रीत कौर, बी. पी. ६८, शालीमार बाग, दिल्ली—५२ ।

आया जन्म दिन मेरा यार,
कपड़े पहने हूं तैयार ।

—संजीवकुमार साव, कल बाजार, चावल पट्टी, चकबांस वेड़ियां (हुगली) ।

इनके शीर्षक भी पसंद आए—महेशकुमार राय नेपाली, खरिवली (महा.); अमितकुमार, रफीगंज (बि.); प्रीति सतीश सुभेदार, अहमदनगर (महा.); सुमन फतवानी, गोपालपुरी (गुज.); अरुणकुमार, डिगबोई (असम) ।

आप कितने बुद्धिमान हैं : (उत्तर)

१. खिड़की से दीखता चंद्रमा अधिक बड़ा है ।
२. खिड़की से नीचे रखी सीढ़ी का एक डंडा छोटा है ।
३. ड्रेसिंग टबल पर रखे दर्पण का डिजाइन बदल गया है ।
४. ड्रेसिंग टेबल पर रखे हेयर ब्रश में हत्था लगा है ।
५. पास रखी चप्पलों में से एक पर फुदना नहीं है ।
६. फर्श पर बिछे कालीन की थोड़ी पट्टी नहीं है ।
७. दाईं ओर टंगे टोप की कलगी ऊपर उठी है ।
८. चित्र में दिखाया गया व्यक्ति काला कोट पहने है ।
९. उसके पास वाले दरवाजे के ऊपर अतिरिक्त रेलिंग है ।
१०. सामने रखे पौधे की एक पत्ती लम्बी है ।

नई पुस्तकें

घेरा और हीरा: इन दोनों पुस्तकों की लेखिका हैं—मनोरमा जफा; प्रकाशक—रत्न सागर प्रा. लि., विराट भवन, मुखर्जी नगर, कमर्शियल काम्पलैक्स दिल्ली—११०००९; मूल्य- प्रत्येक का—९ रु. ९० पैसे।

घेरा—यह पुस्तक नन्हे शिशु को घेरा या वृत्त बनाने का ज्ञान कराती है। इस घेरा से गेंद, गुब्बारा, खरगोश, अपना चेहरा किस तरह बनाया जा सकता है। पुस्तक एक छोटी-सी बात को बेहद रोचक ढंग से कहती है। चित्र आकर्षक और छपाई अच्छी है।

हीरा—एक नन्हा हाथी का बच्चा है हीरा। सर्कस के अपने दोस्तों के साथ जंगल में हरे पत्तों की दावत उड़ाने आता है। लेकिन दोस्त चले जाते हैं। वह जंगल में अकेला शेर और भेड़िए का सामना करता है। फिर जंगल में सर्कस के लोग उसे ढूंढ़ने आते हैं। छोटा-सा हाथी का बच्चा, लेकिन कठिनाइयों से नहीं डरा। पुस्तक बच्चों को बहुत कुछ नया सीखने और करने की प्रेरणा दे सकती हैं।

राष्ट्रीय सहगान: लेखक—गोपीकुमार कौशल; प्रकाशक—प्रेम प्रकाशन मंदिर, ३०१२ बल्लीमारान, दिल्ली—११०००६; मूल्य- ८ रुपए।

लेखक ने भूमिका में लिखा है कि सहगान गाने की परम्परा वैदिक काल से है। वेद पाठ समूह रूप में आज भी किया जाता है। तब इन्हें सामगान कहते थे। पुस्तक में कुल चालीस गीत हैं। बाल दिवस, बाल नगर, मैं भारत मां का बेटा हूं आदि के अलावा नेताओं पर भी गीत हैं। वैसे तो गीत ठीक हैं, लेकिन बच्चों की दृष्टि से पुस्तक की छपाई और चित्र आकर्षक नहीं हैं। शायद इसका कारण इस छोटी-सी पुस्तक में ढेर सारे गीतों का ठूंसा जाना है। गीत कम होते और चित्र लुभावने होते, तो बात बनती।

नन्हे-मुन्ने गीत, भाग—१: लेखक—प्रेमकिशोर पटाखा; प्रकाशक—एलाइड पब्लिशर्स लि.; मूल्य—६ रुपए।

नन्ही पुस्तक, नई कलम, नन्हे गीतों की सरगम
इस पुस्तक में ऐसे ही पंद्रह बाल गीत हैं।

गीत मच्छर ने गाया, चिड़िया रानी, चूहे और टी. वी., हाथी पर खरगोश, चींटी बोली अच्छे गीत हैं। पुस्तक में हाथी पर कई कविताएं हैं। पुस्तक की छपाई और चित्र अच्छे हैं। मगर कहीं-कहीं मात्रा और प्रूफ की अशुद्धियां खटकती हैं।

विश्व प्रसिद्ध अनमोल खजाने: लेखक— अभयकुमार दुबे; प्रकाशक—फैमिली बुक्स प्रा. लि., एफ. २/१६ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली—११००२; मूल्य- १८ रुपए।

तूतनखानेम के मकबरे में मिले खजाने के बारे में बहुत-से लोगों ने सुना है। लेकिन इस खजाने को खोजने में हावर्ड कार्टर नाम के अंग्रेज को पूरे तीस साल लगे। एक टीले के तीस मीटर नीचे पानी का एक जहाज दबा था और उसके नीचे था अकूत खजाना। इसी तरह के सोलह मशहूर खजानों की खोज के बारे में इस पुस्तक में रोचक जानकारी दी गई है। तथ्यों, चित्रों और सहज भाषा के कारण खूब दिलचस्प भी है। निश्चय ही पुस्तक बच्चों को अच्छी लगेगी।

मेहनत का जादू: लेखक—रमेशरंजन त्रिपाठी; प्रकाशक—संतोष प्रकाशन, टिकुरिया, पन्ना (म. प्र.); मूल्य- १२ रुपए।

'परियों की रानी ने शहद की दावत दी, लेकिन यह क्या! शहद तो मीठा ही नहीं था', 'दौड़ जीतने के बाद सुमेर ने जब मास्टर साहब का दिया तावीज खोला, तो उसमें कागज की एक पर्ची मिली।' ऐसी ही ग्यारह कहानियों का संग्रह है इस किताब में। हर कहानी में बच्चों को कुछ न कुछ शिक्षा दी गई है। लेकिन ये बातें उपदेश न देकर, रोचक कथानक के माध्यम से कही गई हैं, यही इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता है।

सोने की लालटेन

—निर्मला जोशी

किसी शहर मे एक विधवा बुढ़िया अपने तीन बेटों के साथ रहती थी। उसके दो बेटे थे तो उम्र में बड़े, पर काम-धाम कुछ नहीं करते थे। दोनों इतने लापरवाह निकले कि कोई उन्हें काम देना पसंद नहीं करता था। छोटा बेटा था पिंकल। वह था तो मेहनती, पर उसे कुछ काम करने को कहने में बुढ़िया को दया आती थी, क्योंकि वह दुबला-पतला, बीमार और कमजोर था। दोनों बेटों को सारा दिन हाथ पर हाथ धरे बैठे देख, एक दिन बुढ़िया को गुस्सा आ गया। उसने बुरा-भला कह, उन्हें घर से निकाल दिया। उन्हें जाते देख, छोटा भाई पिंकल भी उनके साथ हो लिया। बुढ़िया ने पिंकल को रोकने का प्रयत्न किया, पर वह जिद पर अड़ा रहा। अंत में बुढ़िया ने उसे भी जाने की अनुमति दे दी।

शहर से निकल, तीनों भाई काम की तलाश में घूमने लगे। कहीं काम मिल भी जाता, तो दोनों आलसी बड़े भाई जल्दी ही काम से उकता जाते, पर पिंकल को जो भी काम मिलता, वह उसे झट निपटा देता। मालिक उसे मजदूरी के साथ छोटा-मोटा इनाम भी दे देते। पिंकल की यह थोड़ी-सी आमदनी तीनों के लिए पूरी न पड़ती थी। काम की तलाश में तीनों भाई एक शहर से दूसरे शहर भटकते रहते थे।

एक दिन चलते-चलते रात हो गई। उन्होंने देखा वे जंगल में झील के किनारे बसे एक द्वीप में आ गए हैं। बड़े भाई ने नाव को देखते ही कहा—"इस पर चढ़कर द्वीप तक पहुंच जाएं। हो सकता है, वहां हमें कुछ भोजन और रात काटने को जगह मिल जाए।"

बड़े भाई की हां में हां मिलाकर अन्य दो भाई भी नाव में बैठ गए। वे नाव लेकर द्वीप के किनारे पहुंचे, तो देखा कि एक बड़ी-सी हवेली है, जिसके द्वार पर एक सुनहरी लालटेन लटकी है। जिसमें से एक अभूतपूर्व प्रकाश छन-छनकर बाहर आ रहा है। पास खड़ी एक बकरी के सुनहरे सींगों में लगी घंटियों से मधुर संगीत बज रहा है। तीनों भाई यह देखकर बड़े खुश हुए। सोचने लगे— 'चलो, कोई इस घर में रहता है। कम से कम उन्हें भोजन मिल जाएगा और रात बिताने के लिए जगह, तभी उन्होंने देखा, अपने सुनहरे कोट से प्रकाश फैलाती, एक बदसूरत बुढ़िया अपनी बेटी के साथ द्वार से निकली। तीनों भाई समझ गए, सुनहरे कोट वाली बुढ़िया कोई जादूगरनी है। जैसे ही बुढ़िया की निगाह तीनों भाइयों पर पड़ी, वह चिल्लाकर बोली—"क्यों आए हो यहां?"

"हमें थोड़ा-सा भोजन और रात भर के लिए शरण चाहिए। हम बहुत थके हुए हैं।" —भाइयों ने गिड़गिड़ाकर कहा।

—"जाओ-जाओ। न तो तुम्हें भोजन मिलेगा और न ही शरण। भागो यहां से, वरना जादू से जानवर बना दूंगी।" जब भाइयों ने जादूगरनी के बहुत हाथ-पैर जोड़े, तो पिंकल को देखकर जादूगरनी को दया आ गई। बोली—"तुम ऐसा करो, झील के पार चले जाओ। वहां एक महल में राजा रहता है। उसके यहां तुम्हें काम मिल जाएगा और भोजन भी।"

यह सुनना था कि तीनों भाई झटपट नाव में सवार हो गए। वे महल की ओर चल दिए। नाव खेते-खेते





सवेरा हो गया, तब कहीं जाकर वह महल तक पहुंच पाए। महल के द्वार खुले थे, इसलिए तीनों भाई आसानी से महल के भीतर जा पहुंचे।

राजा ने दोनों भाइयों को अस्तबल में काम दे दिया। छोटे भाई पिंकल को छोटे राजकुमार के साथ खेलने के लिए रख लिया गया। पिंकल की चतुराई व प्रखर बुद्धि राजा की आंखों से छिपी न रह सकी। फिर राजा ने उसे अपनी ही सेवा के लिए रख लिया। यह जानकर पिंकल के बड़े भाइयों को बेहद ईर्ष्या हुई। धीरे-धीरे पिंकल राजा का विश्वास पात्र बन गया। यह देख, दोनों भाई और चिढ़ने लगे। वे सोचने लगे—'क्यों न पिंकल को जान से मार दिया जाए ?' अब दोनों भाई ऐसे किसी अवसर की तलाश में रहने लगे। उन्हें यह अवसर जल्दी ही मिल गया। हुआ यह कि हमेशा की तरह सप्ताह के अंत में राजा अस्तबल देखने आया, तो उसने देखा कि उसके घोड़े चमक-दमक रहे थे। राजा ने घोड़ों की इतनी अच्छी देखभाल के लिए भाइयों की प्रशंसा की। दोनों भाइयों ने तुरंत कहा—''महाराज, जादूगरनी की सुनहरी लालटेन इनसे भी ज्यादा चमकती है।'' राजा को अनोखी वस्तुएं एकत्रित करने का शौक था। वह पूछने लगा—''कैसे इस सुनहरी लालटेन को प्राप्त किया जा सकता है ?'' भाइयों ने झट सुझाया कि यह काम पिंकल के अलावा और कोई नहीं कर सकता।

राजा ने पिंकल को बुलाकर कहा—''पिंकल, अगर तुम मुझे सोने की लालटेन ला दो, तो तुम्हें मंत्री बना दूंगा।'' राजा की आज्ञा सुनते ही पिंकल एक छोटी-सी नाव लेकर झील के पार जादूगरनी की हवेली की ओर चल पड़ा। झील के किनारे पहुंचते-पहुंचते उसे रात हो गई। वह हवेली की छत पर जा पहुंचा। छत में आरपार एक काफी बड़ा सूराख था। उसने सूराख से नीचे जादूगरनी की लड़की को खीर पकाते देखा। जैसे ही लड़की ने पीठ मोड़ी, उसने फट-से एक मुट्ठी भर नमक अपनी जेब से निकाल, बर्तन में डाल दिया। जादूगरनी को उसकी बेटी ने खीर परोसी। जैसे ही जादूगरनी ने खीर की एक चम्मच मुंह में डाली, तो थू-थू करने लगी। उसने फिर लड़की को जल्दी से और खीर बनाने को कहा। खीर बनाती कैसे, पानी तो घर में था ही नहीं। रात हो गई थी। जादूगरनी ने लड़की से कहा—''तू यह सोने की लालटेन ले जा और झटपट पानी ले आ।''

पिंकल भी चुपके-से लड़की के पीछे हो लिया। सोने की लालटेन को झील के किनारे रख, जैसे ही लड़की पानी भरने लगी, बस पिंकल ने अवसर देख, सोने की लालटेन उठा ली। पास खड़ी नाव को जल्दी-जल्दी चलाकर महल की ओर भाग चला। लड़की की तलाश में जब तक जादूगरनी झील के किनारे आई, तब तक पिंकल सोने की लालटेन लेकर राजा के पास पहुंच चुका था। सोने की लालटेन पा, राजा खुशी से फूला न समाया। उसने पिंकल को मंत्री बना दिया। अब पिंकल के भाई और भी जलने लगे। वे पिंकल को फंसाने की योजना बनाने लगे। अगले सप्ताह राजा फिर अस्तबल में आया। भाइयों ने मौका देख जादूगरनी के सोने की सींगों वाली बकरी की बात छेड़ दी। इतना सुनना था कि राजा का मन इस अनोखी बकरी को पाने के लिए मचलने लगा। भाइयों ने राजा को पिंकल की याद दिलाई। राजा ने फिर पिंकल को बुलाया और कहा— ''पिंकल, अगर

तुम मुझे सोने के सींगों वाली वह बकरी ला दो, तो मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दे दूंगा।''

दूसरे दिन पिंकल फिर नाव लेकर जादूगरनी की हवेली की ओर चल पड़ा। सोने की लालटेन खोने के बाद जादूगरनी सतर्क हो गई थी। उसने सोने के सींग वाली बकरी को हवेली के भीतर बांधना आरम्भ कर दिया था। रात हो गई, तो पिंकल हवेली की छत पर पहुंच गया। छत के सूराख से उसने नजर दौड़ाई, तो एक कोने में सुनहरे सींग वाली बकरी खड़ी थी। उसके सींग पर बंधी घंटियों से मधुर स्वर लहरी फूट रही थी। पिंकल ने सोचा—'बकरी को डरा-धमका कर किसी तरह घर से निकाला जा सकता है, मगर सींगों से निकलने वाले संगीत को बंद कैसे किया जाए? तभी बकरी को भगाकर ले जाना आसान होगा।' पिंकल यह तरकीब भी सोचकर आया था। जादूगरनी की लड़की रात को सोने से पहले बकरी को एक बार बाहर जरूर घुमाकर लाती थी। अब वह उसी क्षण का इंतजार कर रहा था। मगर इससे पहले उसे घंटियों से निकलने वाले संगीत को बंद करना था। रात गहराने से पहले वह हवेली के पिछवाड़े वाले दरवाजे से उस स्थान तक पहुंचा, जहां बकरी खड़ी थी। अंधेरे का लाभ उठा, उसने बकरी के सुनहरे सींगों पर बंधी घंटियों में साथ लाई ऊन भरनी शुरू कर दी। जब सभी घंटियों में ऊन भर गई, तो वह फिर हवेली से बाहर निकल, छत पर जा बैठा। जैसे ही लड़की बकरी को बाहर निकाल कर लाई, पिंकल ने पीछे से शेर के दहाड़ने की आवाज निकालनी शुरू कर दी। शेर की आवाज सुनते ही बकरी रस्सा तुड़ाने की कोशिश करने लगी। इसी हड़बड़ी में लड़की के हाथ से रस्सा छूट गया। पिंकल बकरी को झील की ओर ले भागा और जल्दी-जल्दी नाव चलाकर महल में जा पहुंचा।

बकरी को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने पिंकल को न केवल आधा राज्य दिया, बल्कि राजकुमारी के साथ उसकी शादी भी कर दी। दोनों भाई यह देखकर हाथ मलते रह गए। •

पत्र मिला

□ शहीद भगतसिंह की चित्र-कथा बेहद पसंद आई। 'काली शिला', 'गूंगों का गांव', 'मेहनत का जादू' कहानियां विशेष पसंद आईं। 'चीटू-नीटू' हमेशा की तरह रोचक लगे।

—धर्मेंद्रकुमार दुबे, बड़हलगंज

□ एलबम में श्रीकृष्ण राधा का गोपियों के साथ नृत्य अद्‌भुत था। फोटो प्रतियोगिता के चित्र और कहानियों में 'जंगल में रानी', 'मेहनत का जादू', 'तीन घेरे' और 'टिक-टिक-टिक' एक से बढ़कर एक थीं। **—सतीशकुमार मिश्र, बिजौली (बिहार)।**

□ मार्च '९० अंक में 'खेल-खेल', 'भूरी गाय' 'चटपट', चित्र-कथा 'शहीद भगत सिंह' खूब भाई। 'घर को वापसी' कहानी बिलकुल नए ढंग की थी। बातें-रंग-बिरंगी में खेल सम्बंधी जानकारी भी दिया करें।

— उमाकांत बनारसी, टिपटूर (कर्नाटक)।

□ 'महारास' देखकर रोमांच हो आया। यह चित्र मैंने फ्रेम करा लिया है। फोटो प्रतियोगिता जैसी अन्य प्रतियोगिता भी होनी चाहिए। वादीभ सिंह की कृति 'जंगल में रानी' बहुत सुरुचिपूर्ण रचना थी। **—महेंन्द्रकुमार श्रीवास्तव, मुरैना**

□ इस अंक की सभी रचनाएं अच्छी लगीं। बाल समाचार में खूब रोचक जानकारियां थीं। 'नंदन' का हर अंक आप हमारी पसंद का निकालें, यही कामना है।

—विनोदकुमार सीला, श्रीगंगानगर

□ 'नंदन' के माध्यम से आप हमें नई खोजों और ऐतिहासिक कारनामों की जानकारी दिया करें। समय-समय पर जाने-माने खिलाड़ियों के रंगीन चित्र भी एलबम में दिए जा सकते हैं। **शिवकुमार, नई दिल्ली**

□ पत्रिका में कविताएं, तेनालीराम, कहानियां सभी रोचक होती हैं। कृपया प्रतिभाशाली बच्चों के बारे में भी बताया करें। उनसे हमें बहुत प्रेरणा मिलती है। **अंजलि गुहा, पणजी (गोवा)।**

□ जैसे धरती पर चंदा तारे
उतने हम 'नंदन' के प्यारे

—नन्ही, किट्टू, जटौली (गुड़गांव)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : नेमिचंद, लाखेरी; गौतम आनंद, महुआडांड (बिहार); बाबूराम महेंद्र कुमार, होडल।

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. प्रशांतकुमार, १३ वर्ष, द्वारा मनोहर दास, मसकंद बरारीपुर, चम्पानगर, भागलपुर; २. वरुण सूरी, ९, ए-११५, पाकेट ए-८, कालकाजी एक्सटेंशन, नई दिल्ली-१९; ३. साक्षी कपूर, १५, २९५/७ बी.पी. कालोनी, किदवई नगर, कानपुर; ४. प्रकाशचंद्र सेठी, १४, ३३/११, के.वी. उपकेंद्र, सरमेरा, नालंदा; ५. दिलीपकुमार चंदेल, १४, ग्रा. बरौनी-३, पो. बरौनी डेवढ़ी, जि. बेगुसराय; ६. प्रदीपकुमार सोलंकी, १४, ३९-ए अम्बावाड़ी, शिवनगर, महामंदिर, जोधपुर (राज.); ७. अभिषेककुमार, १५, द्वारा अरुणकुमार, रूपम सिनेमा के सामने, आरा (बि.); ८. हरिशंकर चौधरी, १४, ग्रा. +पो.—पलेई, तह.- सिवाई, जि.- टोंक (राज.); ९. धर्मेंद्र गर्ग, १६, जैन बोर्डिंग के सामने, केशवपुरा, हिंडौन सिटी; १०. संजीव चलाना, १२, १४७-जी ब्लाक, गऊशाला रोड, श्रीगंगानगर (राज.)

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. मुरलीधर उत्ता, १६ वर्ष, जवाहर नवोदय विद्यालय, कुचामन सिटी, जि. नागौर (राज.); २. सुनील रायकवार, १२, १-सी, पैलेस रोड, रतलाम (म.प्र.); ३. कुलदीप सेवक निषाद, ९, ई-४५, सेक्टर सी-१, एल.डी.ए. कालोनी, कृष्णानगर, लखनऊ; ४. शालिनी शर्मा, १७, द्वारा राजरानी शर्मा, जी.जी.आई.सी. कालेज, शिकारपुर; ५. अवधेशकुमार वर्मा, १६, ग्रा. +पो. —बनकटिया (लाट घाट), जि. आजमगढ़ (उ.प्र.); ६. आशीष उपाध्याय, १२, भानपुर, बदायूं; ७. मोहम्मद परवेज मेमन, १४, द्वारा रज्जाक ब्रदर्स, कांकेर, जि. बस्तर; ८. नीरज कौशिक, ११, द्वारा सत्येंद्रकुमार शर्मा, आ.वि. मंदिर, दौसा; ९. मो. फरवेद आलम, ११, चंदवारा आजाद रोड, हजरत आएशा स्कूल के निकट, मुजफ्फरपुर; १० वीरेंद्र पुरषवानी, १५, द्वारा चंदूराम पुरषवानी, ३७७, कृष्णानगर, भरतपुर (राज.);

पहेली, डाक-टिकट संग्रह और घूमने में रुचि :

१. आलोक गुप्ता चंचल, १४ वर्ष, द्वारा चंदरप्रसाद गुप्ता, ग्रा. +पो.— सोनैली, शुक्रहाट, जि. कटिहार; २. जावेद अहमद, १४, सदर चौक, डेहरी आन सोन, रोहतास (बि.); ३. दिनेशकुमार अग्रवाल, १५, गौरीशंकर स्टोर, क्लब रोड, बालानगीर; ४. अजीतकुमार त्रिपाठी, १७, त्रिपाठी मोटर स्टोर्स, जरवा रोड, तुलसीपुर (गोंडा); ५. शिप्रा वर्मा, १०, के.सी.-९२, कविनगर, गाजियाबाद; ६. संजयकुमार छारिया, १५, द्वारा त्रिलोकचंद पंडित, ११, पटेल नगर, मुजफ्फरनगर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४



आपकी मौजमस्ती है अधूरी
सिर्फ़ फ़नबाइट से होगी पूरी.



कैम्पको की फ़नबाइट.

मलाईदार, कुरकुरी चॉकलेट...
अंदर कुरमुरे वेफ़र और
बाहर रसीली स्वादभरी चॉकलेट

मौज में मज़ा बढ़ाए... कितना मज़ा आए.

कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर

भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.

Other Campco chocolates: Milk White Treat TURBO Eclairs mega bite Playtime RUBIES TOFFEE Campco beverages: WINNER COCOA

R K SWAMY/CL/7804/HIN